समाजवाद और व्यक्ति

एम. डी. कम्मारी

बम्बई
पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस लिमिटेड,
१९५२

पहला हिन्दी संस्करण : नवम्बर १९५२

अनुवादक

श्री नरेन्द्र

मूल्य एक रुपया

जयन्त भट्ट द्वारा, न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, १९० बी. खेतवाडी मेन रोड बम्बई ४. में मुद्रित और उन्हींके द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई ४. की तरफ़ से प्रकाशित ।

विषय सूची

प्रकाशक का नोट

सोवियत यूनियन की अकेडेमी आफ़ साइंसेज़ की इंसटीट्यूट आफ़ फ़िलासफ़ी ने **सोवियत सोशलिस्ट समाज** नामक एक लेख-संग्रह तैयार किया था। प्रस्तुत पुस्तक उसी लेख-संग्रह के एक निबंध का अनुवाद है। यह लेख-संग्रह मास्को में १९४९ में प्रकाशित हुआ था।

जनता का स्वतंत्र होना, व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये पहली शर्त है

वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के प्रवर्त्तकों ने **कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र** में लिखा था कि मज़दूर वर्ग का ध्येय समाजवादी व्यवस्था का निर्माण है जिसमें "सम्पूर्ण जनता के स्वतंत्र विकास का आधार, प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र विकास है।"

सोवियत रूस में समाजवादी व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। मानव इतिहास में एक नये युग, मानव के सच्चे व स्वतंत्र विकास के युग का प्रारम्भ हो चुका है और इसका श्रेय अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति को है। महान अक्तूबर क्रान्ति ने वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धान्त की सचाई को प्रमाणित कर दिया है।

सोवियत संघ में समाजवाद की विजय ने मेहनत-मज़दूरी करने वाले मनुष्य के व्यक्तित्व, उसकी रचनात्मक शक्ति व कार्य-क्षमता तथा उसकी अपूर्व बुद्धि व प्रतिभा के अत्यधिक ऊंचे विकास को व्यावहारिक बात बना दिया है। इससे पूर्व साधारण मज़दूर का इतना ऊंचा व्यक्तिगत विकास असम्भव समझा जाता था। आजकल, समाजवादी रूस में आम जनता के मध्य से ही प्रतिभाशाली व्यक्ति **सामूहिक रूप से** पैदा हो रहे हैं। सैकड़ों व हज़ारों वर्ष से गुलामी तथा शोषण में पिसते रहे मेहनतकश जनसमूह को, अक्तूबर-क्रान्ति ने केवल गुलामी और शोषण से ही मुक्त नहीं किया, वरन् उनको निर्बाध अवसर भी दिये हैं कि वे स्वयं **अपने जीवन का निरूपण करें** तथा **अपने भविष्य को रचें।**

शोषक वर्गों के उन्मूलन और समाजवाद की स्थापना के दौरान में सोवियत जनता का जन्म हुआ, वह आयु पाती चली गई और अब वयस्क बन चुकी है। प्रारम्भ से ही बड़ी कठिन व भीषण परिस्थितियों का सामना हुआ, परन्तु लेनिन तथा स्तालिन की पार्टी के, अजेय बोल्शेविक पार्टी के, नेतृत्व में

सोवियत जनता ने सब बाधाओं व विरोधों को सफलता के साथ पार किया। क्रान्तिकारी वर्ग-संघर्ष की आग में, महान अक्तूबर-क्रान्ति के तूफ़ान में पैदा होकर, सोवियत जनता का पालन-पोषण गृहयुद्ध की भयंकर लड़ाइयों व विदेशी आक्रमणकारी-विरोधी युद्ध में हुआ। उसने देश-व्यापी अकाल, राष्ट्रीय आर्थिक तहस-नहस, ग़रीबी, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास के अभाव को दूर करने के लिये संघर्ष किए। उद्योग-धन्धों के समाजीकरण और खेती के समूहीकरण को पूरा करने में कठोर परिश्रम व कठिनाइयों का सामना हुआ। फ़ासिस्ट आक्रमण-कारियों के विरुद्ध देश-रक्षा के गत महायुद्ध की भट्टी में तप कर, अब सोवियत जनता और भी अधिक सुदृढ़ व खरी हो गई है।

मानव इतिहास में और विशेषकर सोवियत देश के इतिहास में, गत महायुद्ध, फ़ासिस्ट-विरोधी महासमर, देशवासियों के लिये कठोरतम व अति भयानक युद्ध था। इस महायुद्ध में सोवियत रूस की महान विजय का सच्चा अर्थ है— समाज व देश की सोवियत व्यवस्था की विजय, बोल्शेविक (रूसी कम्युनिस्ट) पार्टी की लेनिन-स्तालिनी नीति की विजय, सोवियत के सिद्धान्तों की विजय, तथा सोवियत जनता की समर-प्रवीणता और उनके नैतिक व राजनीतिक गुणों की विजय। युद्ध के दौरान में, सोवियत रूस के मनुष्य विश्व-मानवता के सम्मुख अपने अपूर्व गौरव तथा अपनी अद्वितीय महानता में आगे बढ़े हुए खड़े रहे—ये सब देश की सोवियत-व्यवस्था की उपज थे, इन लोगों के उद्देश्य दृढ़ व निर्मल थे, उत्तम कम्युनिस्ट विचारों व सिद्धान्तों से सिक्त देश-प्रेम की भावना के साथ साथ इन लोगों में विश्व जनता के लिये मैत्री-भाव था; ये सब सोवियत की कम्युनिस्ट नैतिकता से ओत-प्रोत थे।

क्रान्ति की आग तथा समाजवाद की स्थापना के संघर्ष में तपी हुई जनता ही उपर्युक्त भीषण परिस्थितियों में विजय प्राप्त कर सकती थी, और साथ में इस जनता को, सोवियत रूस की इस पीढ़ी को, कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व प्राप्त था। सोवियत जनता ने केवल अपने देश की ही रक्षा नहीं की, वरन् संपूर्ण विश्व की जनता को फ़ासिज़्म के महारोग से बचा लिया। सोवियत जनता का, सोवियत स्त्री व पुरुषों का, युद्ध में विजयी होने के कारण, आत्म गौरव महसूस करना उचित है। युद्ध में सोवियत जनता की महान विजय का सिंहावलोकन करते हुए स्तालिन ने समस्त राष्ट्र के सामने यह कर्त्तव्य रखा कि

प्रत्येक देशवासी के "जीवन और काम" को ध्यान से जाँचा जाए और "हर एक को यथानुसार पुरस्कृत किया जाए।"

इस महायुद्ध के उपरान्त तो सोवियत राज्य पहले से भी अधिक मजबूत हो गया है। सोवियत संघ के सम्बंध और उसका प्रभाव तथा विश्व-राजनीति में उसकी स्थिति व उसका सम्मान अब और अधिक विस्तृत तथा महत्वपूर्ण हो गया है। समाजवाद की ताक़तें और अधिक मजबूती के साथ जड़ पकड़ गयी हैं।

"योरप के अनेक राष्ट्र गम्भीरता के साथ समाजवादी व्यवस्था के बारे में सोचने-विचारने लगे हैं और यह परिस्थिति साम्राज्यवादियों को नापसन्द है। विविध प्रकार का मुलम्मा चढ़ाए हुए ये साम्राज्यवादी उस समाजवाद से भयभीत हैं और उनको हमारे समाजवादी देश से भय लगता रहता है, जो सारी प्रगतिशील मानवता के लिये एक आदर्श बना हुआ है।" (ए. ए. ज़्दानोव की ज़्वेदा एवं लेनिनग्राद नामक पत्रिकाओं पर रिपोर्ट, रूसी संस्करण पृष्ठ, ३४-३५)

साम्राज्यवादी तथा उनके सिद्धान्तवेत्ता दास हर प्रकार से सोवियत जनता को बदनाम करने का प्रयास करते हैं। वे लोग समाजवाद के विरोध में विविध प्रकार का ज़हर उगलते रहते हैं और हेर-फेर कर उन्हीं मनगढ़न्त झूठों को दुहराते हैं जिन्हें समाजवाद के दुश्मनों ने एक सदी पहले उगला था।

इन मनगढ़न्त झूठों का रूप अधिकतर निम्न प्रकार का होता है—कि व्यक्तिगत प्रयास व उत्साह को, व्यक्तिगत प्रतिभा व कुशलता को, व्यक्तिगत अधिकारों व स्वतंत्रता को, तथा मनुष्य के व्यक्तित्व को समाजवाद पूरी तरह मिटा डालता है; कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं, स्वभावों तथा रुचियों को समाजवाद एक समान बना डालना चाहता है। साम्राज्यवादी शोषक, उनके सिद्धान्तवेत्ता तथा राजनीतिज्ञ हर तरह से, जनता के विभिन्न भागों की व्यक्तिगत सम्पत्ति सम्बन्धी मनोवृति तथा उनकी व्यक्तिवादी सैद्धान्तिकता से लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। जनतांत्रिकता व समाजवाद की सबसे प्रगतिशील शक्तियों के विरुद्ध साम्राज्यवादियों के जन-विरोधी तथा प्रतिक्रियावादी संघर्ष में समाज का निम्न मध्यम वर्ग विशेष रूप से इस प्रपंच में फंस जाता है। प्रतिक्रियावादियों के मनगढ़न्त झूठों—सोवियत समाज में मनुष्य के व्यक्तित्व

का विनाश—का एकाकी उद्देश्य यही होता है कि देश के छोटे पूंजीपतियों के बहुत बड़े भाग को भयभीत करके समाजवाद से अलग बहका दिया जाय।

सोवियत संघ में जनता के व्यक्तित्त्व के उच्चतम विकास की वास्तविकता ने सब प्रकार की उपरोक्त मनगढ़न्त बदनामी व अफवाहों को निराधार कर दिया। और अब झूठ का भण्डाफोड़ हो चुका है। हमारी सोवियत समाजवादी व्यवस्था की महानता और हमारी संस्कृति की महानता प्रमाणित हो चुकी है। सोवियत जनता उत्तम गुणों से सम्पन्न है, इसके भीतर नये ही प्रकार के उच्च मानव-सम्बन्ध व्याप्त हैं और हमारी समाज-व्यवस्था के भीतर व्यक्ति तथा समाज के बीच के सम्बन्ध नया रूप अपना चुके हैं।

पहले की सब समाज-व्यवस्थाओं से, विशेषकर पूंजीवादी समाज-व्यवस्था से, समाजवादी व्यवस्था का विकास हो जाने पर व्यक्ति के विकास की दशा तथा परिस्थितियां कैसे बदलती चली जाती हैं? यह परिवर्तन किन कारणों द्वारा निर्धारित होता है? समाजवादी व्यवस्था के स्थापित हो जाने पर, व्यक्ति के सम्पूर्ण दृष्टिकोण पर, और साथ ही उसके कार्यों की प्रकृति पर दबाव डालने वाली प्रवृत्तियां किस प्रकार बदलती चली जाती हैं?

प्रस्तुत लेख में इन्हीं कुछ प्रश्नों पर प्रकाश डाला जायगा।

* * *

पूंजीवादी शोषण-व्यवस्था के दार्शनिक तथा समाजशास्त्री यथार्थ में शोषक वर्ग के हितों के रक्षक होते हैं। ये लोग अपने विचारों की वास्तविकता को आध्यात्मवाद तथा आदर्शवाद के शब्दाडम्बर में छिपा कर समाज व व्यक्ति के सम्बंध में निरर्थक बहसें किया करते हैं, और ऐतिहासिक तथा वर्ग-सम्बंधी पहलुओं का प्रश्न उठने पर ये लोग सदा टाल-मटोल कर दिया करते हैं और विवाद के विषय को विशेष व्यक्तित्व व विशेष समाज से सम्बंधित न करके, उसको व्यापक बनाकर 'साधारणतया' की आवाज लगाते हैं।

समाज व व्यक्ति के सम्बंध में 'साधारणतया' अस्पष्ट, आध्यात्मिक तथा आदर्शवादी बहस को मार्क्सवाद अवैज्ञानिक ठहराता है, और ऐतिहासिक यथार्थ के आधार पर मार्क्सवाद हमको बतलाता है कि समाज व व्यक्ति के जन्म और विकास को ठोस आधारों पर परखना चाहिये। मार्क्सवाद का दावा है कि समाज व व्यक्ति के बीच सम्बंध कभी भी स्थायी व अपरि-

वर्तनशील रूप नहीं लिये रह सकते, किसी एक समय का सम्बंध सदा के लिये सार्थक व सत्य नहीं समझा सकता; क्योंकि प्रत्येक सामाजिक-आर्थिक निरूपण में जनता व वर्गों के बीच, व्यक्ति व समाज के बीच सदा कुछ सुनिश्चित सम्बन्ध होते हैं और ये सम्बन्ध केवल उसी विशेष निरूपण के लिये सुनियमित व उपयुक्त होते हैं।

पूंजीवादी शोषण-व्यवस्था के समर्थक पहले भी सदा चिल्लाते रहे और अब भी चिल्लाते रहते हैं कि सब व्यक्तिगत स्वाधीनता, कार्यशीलता तथा स्वतंत्रता का आधार व्यक्तिगत सम्पत्ति है और कम्युनिस्ट हर तरह की व्यक्तिगत सम्पत्ति को मिटा देना चाहते हैं और इस प्रकार वे व्यक्ति के व्यक्तित्व का ही विनाश कर डालना चाहते हैं। इस निराधार अफवाह का जवाब देते हुए मार्क्स तथा एंगेल्स ने बतलाया कि कम्युनिस्ट आम तौर सब तरह की सम्पत्ति को मिटाना नहीं चाहते हैं और फिर व्यक्तिगत परिश्रम के बल पर पैदा की गई सम्पत्ति के मिटाने का प्रश्न तो उठता ही नहीं, इस प्रकार की सम्पत्ति का विनाश पूंजीवाद पहले ही कर चुका और प्रतिदिन करता जा रहा है। **पूँजीवादी** व्यक्तिगत सम्पत्ति को कम्युनिज़्म अवश्य मिटाता है, क्योंकि इसके अस्तित्व की प्रथम आवश्यकता समाज के बहुत बड़े भाग के लिये सम्पत्ति का अभाव है। परन्तु तब भी शोषक वर्ग का तर्क सदा यही रहता है कि पूँजीवादी शोषणकारी व्यक्तिगत सम्पत्ति का विनाश करके कम्युनिज़्म व्यक्ति के व्यक्तित्व का विनाश कर डालता है।

मार्क्स तथा एंगेल्स ने इन सैद्धान्तिकों से कहा था, "इसलिये तुम लोगों को स्वीकार करना चाहिये कि 'व्यक्ति' से तुम्हारा मतलब और कोई नहीं वरन् पूंजीपति और सम्पत्ति का मध्यम वर्गीय स्वामी ही है। हां! इस व्यक्ति को अवश्यमेव मार्ग से हटा देना है और इसका अस्तित्व असम्भव बना देना है।" (मार्क्स तथा एंगेल्स, **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र,** मास्को, १९४९, पृष्ट ६९)

स्वतंत्रता से पूंजीवादियों का मतलब स्वतंत्र व्यापार, मज़दूरों के शोषण की स्वतंत्रता से होता है। पूंजीपति वर्ग ने मनुष्य की व्यक्तिगत कीमत को ख़रीद-फ़रोख़्त के आंकड़ों में रख दिया है और मनुष्यों के बीच के सम्बन्धों को रुपये पैसे, मुनाफ़े, और "नगद भुगतान" के आधारों पर स्थापित कर दिया

है। उसने मानव की सारी सच्ची व उत्कृष्ट भावनाओं को अहंकारी हिसाब-किताब के बर्फ़ीले पानी में डुबो-कर निर्जीव बना दिया है। कवि, कलाकार तथा वैज्ञानिक सब के सब केवल मज़दूर बन गए हैं। इस व्यवस्था ने समाज के सम्बन्धों को इतना अधिक नीचे गिरा दिया है कि पारिवारिक सम्बन्ध—पति और पत्नी, माता-पिता व पुत्र के सम्बन्ध—प्रेम, आत्म-गौरव और आत्मा तक सब कुछ ख़रीद-फ़रोख़्त की चीज़ बन चुके हैं। पूँजीवादी समाज-व्यवस्था के भीतर मेहनतकश मज़दूर की व्यक्तिगत मेहनत, पूंजीवालों की पूंजी को बढ़ाने का ही माध्यम बन कर रह गयी है। मज़दूर के जीवन का सारा ध्येय केवल पूंजीपति को अधिक धनी बनाना है। मज़दूरों के पूरे जीवन का निर्धारण, पूँजीपति के हितों की मांग के दायरे में, उसकी ही आवश्यकताओं के द्वारा सीमित होता है।

"पूँजीवादी शोषण व्यवस्था वाले समाज में केवल पूंजी ही स्वाधीन है तथा केवल उसी के व्यक्तित्व का अस्तित्व है, परन्तु जीवित मानव पराधीन होता है और उसका व्यक्तित्व कोई महत्त्व नहीं रखता।

"इस प्रकार की व्यवस्था के उन्मूलन को, पूंजीपति वर्ग व्यक्तित्व तथा स्वाधीनता का विनाश कहता है। हां, ठीक ही है! पूँजीवादी व्यक्तित्व, पूँजीवादी वर्ग की स्वाधीनता तथा पूँजीवादी स्वाधीनता का विनाश व उन्मूलन अवश्यमेव कम्युनिज़्म का लक्ष्य है।" (उपरोक्त, पृ. ६८)

मार्क्स तथा एंगेल्स ने बतलाया कि परस्पर विरोधी हित वाले वर्ग समाजों का सम्पूर्ण विकास, मेहनतकश जनता के उत्पीड़न, उसके शोषण व उसकी गुलामी पर आधारित है, इस प्रकार के समाजों का अस्तित्व व्यक्ति की कुशलताओं व योग्यताओं और उसकी रचनात्मक शक्तियों के अवरोध और विनाश पर आधारित है। मार्क्स ने अपनी महानतम रचना **कैपिटल** में निर्विवाद तर्क और ठोस दावे के साथ दिखला दिया कि पूंजीवाद मानव के आत्म-हितों, उसकी प्रवृत्तियों व योग्यताओं को किस तरह अपने अधिकार में कर लेता है, कि पूंजीवाद मज़दूर को किस तरह मशीन का एक पुर्जा मात्र बना डालता है। मार्क्स ने यह भी बतलाया कि मिल व कारखाने के जबरन थका डालने वाले काम की परिस्थितियों को और जीवन की विवशता, उत्पीड़न, बेकारी के भय और कंगाली की दशाओं को बनाए रखने वाले एक व्यापक संगठन के द्वारा, पूंजीवाद किस तरह मज़दूर को शारीरिक और

आध्यात्मिक रूप से पुंज बना डालता है। पूंजी के जोर से गुलाम बनाए जा सकने की आशंका को असम्भव करने और भुखमरी की स्थायी आ..का व स्वयं को हताश व निरुत्साहित होने के भय से सुरक्षित करने के लिये, यह आवश्यक है कि मजदूर लोग संगठित होकर अपने अधिकार व हितों की रक्षा के लिये निरन्तर कठोर वर्ग-संघर्ष चलाते रहें, वे अपने वर्ग-संगठनों को स्थापित करके मजबूत बनावें, अपनी पार्टी तथा ट्रेड यूनियनों को इतना अधिक शक्ति-शाली बनावें कि पूंजीवादी वेतनभोगी गुलामी को मिटाने के लिए और साम्यवादी समाज के निर्माण के लिये वे मजदूर संघर्षों का नेतृत्व कर सकें। **इजारेदार पूंजी-शक्ति के खिलाफ़ अकेला मज़दूर पूरी तरह अशक्त व कमजोर होता है।** मार्क्सवाद हमको सिखलाता है कि मज़दूर-वर्ग केवल क्रान्तिकारी संघर्ष के द्वारा ही स्वयं को व सारी मेहनतकश मानवता को मुक्त कर सकता है।

अराजकता-विरोधी संघर्ष में, मार्क्सवाद के सिद्धान्त को समझाते हुए तथा उसको और भी अधिक विकसित करते हुए, कॉमरेड स्तालिन ने १९०६ में ही लिखा था कि जनता ही मार्क्सवाद की आधार शिला है, **क्योंकि जनता के उद्धार के अभाव में व्यक्ति का उद्धार असम्भव है। व्यक्ति के उद्धार के लिये जनता का उद्धार प्रमुख आवश्यकता है।** सोवियत संघ में समाजवादी क्रान्ति के अनुभवों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की इस प्रस्तावना को पूरी तरह ठीक साबित कर दिया है। सोवियत संघ में व्यक्ति को शोषण-मुक्त करके उसका स्वतंत्र सर्वव्यापक विकास प्राप्त कर लिया गया है और इसका श्रेय इसी सचाई को है कि मजदूर वर्ग ने स्वयं अपना राज्य बना कर खड़ा किया, समाज के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों में ली और सारी मेहनतकश जनता के सहयोग से शोषक वर्गों को मिटाया, मानव द्वारा मानव के शोषण को समाप्त किया, देश में समाजवादी व्यवस्था स्थापित की और सोवियत संघ की सारी मेहनतकश जनता को अपने जीवन का सचेत व स्वतंत्र विधाता बनाया।

समाजवाद में व्यक्ति का स्थान

सोवियत संघ में समाजवाद की विजय के परिणामस्वरूप जनता के पारस्परिक सम्बंधों में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है और इसी कारण वहां पर समाज व व्यक्ति के बीच के सम्बंध अपना रूप ही बदल चुके हैं; व्यक्ति के विकास के रूप, विकास की परिस्थितियों तथा दिशा—सब बातों में बुनियादी परिवर्तन हो चुका है।

सोवियत संघ में उत्पादन-संबंधों और फलस्वरूप जनता के तमाम सामाजिक सम्बन्धों का आधार, उत्पादन-साधनों का सामाजिक, समाजवादी स्वामित्व है। सोवियत संघ में शोषक वर्गों को, मानव के द्वारा मानव के शोषण की व्यवस्था को और वर्गों को तथा शोषण को जन्म देने वाले कारणों को मिटाया जा चुका है। वहां पर उत्पादन के काम में संलग्न मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्ध शोषण-मुक्त मनुष्य के बीच भाईचारे के सहकारी सम्बन्ध हैं। कॉमरेड स्तालिन ने समाजवादी समाज के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा है कि रूस में उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों की दशा के साथ पूरा मेल खाते हैं, क्योंकि उत्पादन-साधनों के **समाजवादी स्वामित्व** से उत्पादन के **सामाजिक रूप** को अत्यधिक ताक़त मिलती है। उत्पादन के समाजवादी सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों के पूर्ण विकास को पूरी छूट दे देते हैं, और चूंकि मेहनतकश स्वयं सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उत्पादक शक्ति हैं, इस कारण उनकी कार्य-कुशलता, रचनात्मक शक्ति तथा कार्य शक्ति के विकास को भी पूरी छूट मिल जाती है। मार्क्स के समाजवाद के सिद्धान्त का प्रथम मूल आधार यही है कि मेहनतकश के व्यक्तित्व का विकास एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उत्पादक-शक्ति का विकास है; **जनता, मेहनत करने वाला व्यक्ति ही, दुनिया की सबसे कीमती पूंजी है।**

समाजवादी व्यवस्था में व्यक्ति के बारे में बात करते समय हमारा तात्पर्य सोवियत संघ के लाखों करोड़ों मज़दूरों, सामूहिक किसानों और सोवियत बुद्धिजीवियों से है जो गुलामी तथा शोषण से मुक्त होकर सोवियत संघ के स्वतंत्र व समान अधिकार भोगी नागरिक हैं तथा कम्युनिस्ट समाज के निर्माता हैं।

पूंजीवादी जनवाद, गला फाड़ कर विविध प्रकार के व्यक्तिगत अधिकारों तथा स्वाधीनताओं के बारे में चिल्लाता है, परन्तु उसकी घोषणाएँ मेहनतकश जनता के लिये थोथे व झूठे वादे ही बनी रहती हैं। इन अधिकारों और स्वाधीनताओं का कोई वास्तविक मूल्य नहीं है। पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर क्या शोषित अपने शोषकों के चंगुल से मुक्त है, क्या मजदूर अपने पूंजीवादी मालिक अथवा उसके छुटभइयों के फन्दे से स्वतंत्र हैं, क्या खेतिहर अपने उन मालिक ज़मींदार, इजारेदार पूंजी और पूंजीवादी राज्यसत्ता के चंगुल से मुक्त हैं जो राजकीय करों तथा इजारेदारी पर निर्धारित कीमतों से उसको तबाह कर देते हैं? क्या लेखक या पत्रकार पूँजीवादी प्रकाशकों की जकड़ से मुक्त हैं जो सारी प्रकाशन सुविधाओं के इजारेदार हैं, जो लेखक की आत्मा व उसकी रचना दोनों ही को खरीद लेते हैं? क्या विद्यार्थी, पूंजी के काले नागों, कालेजों, स्कूलों, प्रयोगशालाओं व अनुसन्धान केन्द्रों के मालिकों के फन्दे से स्वतंत्र हैं?

यदि मज़दूरों तथा मेहनतकश जनता को काम, आराम व छुट्टी, पढ़ाई, बीमारी में इलाज, बुढ़ापे में जीवन-निर्वाह के अधिकार व सुविधाएँ ही प्राप्त नहीं हैं, यदि मज़दूरों के जन-संगठनों के पास मीटिंग तक करने के लिये जगह और अखबार निकालने के लिये काग़ज व प्रेस नहीं हैं; यदि उनके संगठनों को तंग किया जाता है, उन पर रोकथाम लगाई जाती है, उनको दबा दिया जाता है, तथा उन पर मुकदमे चलाए जाते हैं; यदि मज़दूरों तथा मज़दूर-नेताओं के पीछे पुलिस पड़ी रहती है और उनको किराये के गुंडों, फ़ासिस्ट ठगों तथा हत्यारों द्वारा सदा डराया धमकाया करती है; यदि उत्पीड़ित और पिछड़ी हुई जातियों की मेहनतकश जनता के विरुद्ध क्रूरतम, अमानुषिक, जघन्य हमले होते रहते हैं, तो फिर पूँजीवादी व्यवस्था में उनको कौन से व्यक्तिगत अधिकार प्राप्त हैं?

एक बेकार मज़दूर किस "व्यक्तिगत स्वाधीनता" का उपभोग कर पाएगा, यदि हज़ार कोशिश से भी उसको नौकरी नहीं मिलती चाहे वह कितना ही कार्य-कुशल और अनुभवी क्यों न हो; भूख से मरने की अवस्था आने पर, स्वयं को और अपने परिवार को मौत से बचाने के लिये वह निचली से निचली दर पर काम करने को तैयार हो सकता है? फिर पूंजीवादी समाज के भीतर बेकारों की संख्या लाखों व करोड़ों तक पहुंच जाती है, विशेषकर आर्थिक-संकट के समय। बेकारों की सेना, काम में लगे हुओं पर भी भय का भूत सवार करा देती है, जब

कि हरेक को यही डर लगा रहता है कि कहीं वह भी कल बेकार न हो जाय। व्यक्तिगत अधिकारों तथा स्वाधीनताओं के सम्बन्ध में शोषकों की मक्कारी तथा झूठापन, उपरोक्त प्रश्नों को उठाने पर तत्काल साफ़ हो जाता है। "यथार्थ स्वतंत्रता वहीं सम्भव है जहां पर शोषण को मिटाया जा चुका है, जहां पर कुछ लोगों के द्वारा दूसरों का उत्पीड़न नहीं होता है, जहां पर ग़रीबी व बेकारी का अभाव है, जहां पर मेहनत करने वालों को अगले दिन अपनी नौकरी, अपने घर तथा अपनी रोटी छिन जाने का डर सताया नहीं करता है। केवल इसी प्रकार के समाज में सच्ची व्यक्तिगत तथा अन्य सब स्वाधीनताएँ सम्भव है।" (जे. वी. स्तालिन, **एक अमरीकी समाचार-पत्र एसोसियेशन, स्क्रिप्स-हावर्ड-न्यूज पेपर्स, के प्रधान, श्री राय हावर्ड से भेंट, मार्च १, १९३६,** रूसी संस्करण, १९३९, पृ. १२)

सोवियत का समाजवादी जनवाद मुख्यतः इसी बात पर जोर डालता है कि मेहनतकश जनता के सच्चे अधिकार व उसकी सच्ची स्वाधीनताएँ वास्तव में सुनिश्चित व सुरक्षित बनी रहें। सोवियत व्यवस्था केवल घोषणा के द्वारा ही नहीं, वरन् भौतिक व आर्थिक रूप से और समाजवादी अर्थतंत्र, शिक्षा-योजना व सामाजिक भरण-पोषण की सम्पूर्ण व्यवस्था तथा संगठन द्वारा मेहनतकशों के अधिकारों व स्वाधीनताओं को पूर्णतः सुरक्षित करती है। सोवियत व्यवस्था सारे नागरिकों के लिये काम, आराम व छुट्टी, शिक्षा, रोग व बुढ़ापे की अवस्था में भरण-पोषण के अधिकारों के उपभोग को सुरक्षित करती; स्त्री पुरुषों के बीच, जातियों, राष्ट्रों व कौमों के बीच आर्थिक, सार्वजनिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सब क्षेत्रों में पूरी समानता को सुनिश्चित करती है। सोवियत संघ में सब नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं। विजयी समाजवाद का विधान, स्तालिन-विधान, सोवियत संघ के सब नागरिकों को **मेहनतकश जनता के हित में** भाषण करने, लेख लिखने, मीटिंग करने, जुलूस निकालने और प्रचार करने की आज़ादी की गारन्टी देता है और इस गारन्टी को व्यावहारिक रूप देने के लिये तथा इन अधिकारों व स्वाधीनताओं के यथार्थ उपभोग के लिये सब आवश्यक सुविधाएँ व साधन—छपाई के प्रेस, काग़ज़ तथा मीटिंग हाल आदि— नागरिकों को सौंप दिये जाते हैं।

समाजवाद की स्थापना के लिये किये गए संघर्ष में हमारी मेहनतकश जनता के द्वारा जीते गए अधिकारों व स्वाधीनताओं को कानूनी रूप देने के

लिये, स्तालिन-विधान में इनका नियमपूर्वक उल्लेख है। यह विधान समाजवाद का वह अधिकार-पत्र है जिसके लिये सैकड़ों व हज़ारों वर्ष से अनेक मनुष्य कल्पना करते रहे थे और जो आज सारी दुनिया की उत्पीड़ित व शोषित जनता का स्वप्न है। केवल हमारे देश में ही यह स्वप्न यथार्थ रूप ले पाया है। समाजवाद का मूल सिद्धान्त है : प्रत्येक अपनी योग्यता के अनुसार भरसक काम करे, और किये गए काम की मात्रा तथा गुण के अनुसार प्रत्येक पुरस्कृत हो। जो सबसे अच्छा काम करता है उसका सब से अधिक सम्मान किया जाता है। यह केवल सोवियत संघ में ही सम्भव है कि कल तक बिल्कुल अज्ञात बने रहनेवाले सीधे सादे मजदूर व किसान,: आज देश में चारों ओर प्रसिद्धि पा जावें, वे देश में चारों ओर सम्मान और प्रतिष्ठा के पात्र बन जावें। इसका श्रेय केवल उनकी व्यक्तिगत मेहनत को, केवल उनकी व्यक्तिगत योग्यता और बहादुरी को ही है। समाजवादी श्रम के वीरों, स्ताखनोवाइट लोगों, को हमारे सोवियत में इसी तरह यश मिलता है।

सोवियत संघ के उच्चतम पदों पर योग्यतम, कुशलतम और प्रवीणतम तथा श्रम में सबसे अधिक लीन होने वाले नागरिक, स्त्री-पुरुष ही बैठते हैं। वे जनता के बीच से आते हैं तथा तरक्की पाकर अथवा चुनाव द्वारा इन पदों पर नियुक्त किये जाते हैं। उच्च पदों पर बैठे ये व्यक्ति यदि जनता के विश्वास का मान नहीं करते या जनता का विश्वास उनमें नहीं रह जाता तो जनता कभी भी उनको पदच्युत करके ऐसे लोगों को इन पदों पर नियुक्त कर सकती है जो जनहितों का अधिक ध्यान रखते हों तथा अधिक कार्यकुशल व प्रवीण हों।

किसी भी सभ्यता अथवा समाज-संस्कृति की सच्ची दशा को जांचने के लिये समाज में स्त्रियों की स्थिति एक महत्त्वपूर्ण मापदंड है। शोषण से स्त्रियों का उद्धार सभ्यता की प्रगति को अत्यधिक वेगशील बना देता है। चेर्नीशेवस्की ने अपने उपन्यास "**व्हाट इज़ टु बी डन ?**" में लिखा है कि प्रकृति ने स्त्री को तेज व चुस्त दिमाग दिया है, परन्तु समाज इसका कोई इस्तेमाल नहीं करता; "यदि इस दिमाग को कुंठित न होने दिया जाता, और सक्रिय बनाया जाता तो मानवजाति का इतिहास दसगुने वेग से प्रगति करता।" ज़ारकालीन रूस में मेहनतकश स्त्रियों की नीचे गिरी समाज-स्थिति का परिचय सबको है और सारे पूंजीवादी देशों में, यहां

तक कि 'पश्चिमी प्रजातंत्रों' तक में आजकल भी स्त्रियों की समाज-स्थिति क्या है, इसका भी पता सबों को है। गुलामी, सामन्तवाद तथा पूंजीवाद की समाज-व्यवस्थाओं के हजारों वर्ष की अवधि में मेहनतकश स्त्रियों को दोहरी गुलामी सहनी पड़ती थी—एक ओर तो वर्ग-उत्पीड़न तथा दूसरी ओर परिवार के भीतर की गुलामी। खेत अथवा कारखाने का कठोर, थका डालने वाला काम और घर के भीतर का नीरस काम; गरीबी, बेकारी, अपर्याप्त भोजन, पूरी अधिकारहीनता तथा गिरी अवस्था, भविष्य की स्थायी आशंका, अपनी सन्तान की चिन्ता, परिवार का विनाश, वेश्यावृत्ति, भुखमरी से अकाल-मृत्यु, अपने बच्चों की हत्या करके आत्म-हत्या—पूंजीवादी व्यवस्था वाले 'सभ्य' देशों में लाखों करोड़ों मेहनतकश स्त्रियों के जीवन का यही सच्चा चित्र है। उपनिवेशों तथा गुलाम देशों का हाल तो इससे भी गया-बीता है। इसीलिये मानवजाति का अर्धांश अर्थात स्त्रियां महान समाजवादी अक्तूबर-क्रान्ति के विशाल परिवर्तनों के प्रभाव से अछूती न रह पाईं और उन्होंने स्वयं एक महत्वपूर्ण सक्रिय शक्ति के रूप में इसमें भाग लिया। लेनिन तथा स्तालिन की सीख के अनुसार एक क्रान्ति की सफलता और विजय इस बात पर आधारित है कि स्त्रियाँ कितनी चेतना व जागृति के साथ उसमें सक्रिय भाग लेती हैं।

हमारे देश की मेहनतकश स्त्री, अक्तूबर-क्रान्ति की आग में तथा समाजवाद के लिये संघर्ष में ही जन्मी, बड़ी हुई और तप चुकी है। इन संघर्षों ने उसको हर प्रकार के शोषण और उत्पीड़न से मुक्त किया और जीवन के हर क्षेत्र में — आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में — उसको पुरुष के बराबर स्थान दिया। सोवियत शासन के पहले कुछ महीनों के भीतर ही, सोवियत अधिकारियों ने पूंजी-सामन्तशाही राज्य-व्यवस्था के परिवार व विवाह सम्बंधी अपमानजनक कानूनों को मिटा दिया—इन कानूनों के द्वारा परिवार व समाज के क्षेत्र में वैधानिक रूप से स्त्रियों को सब अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। कुछ समय बाद स्त्रियों के लिये समान काम के लिये पुरुषों के समान वेतन नियमित कर दिया गया और मां व सन्तान के अधिकारों को सुरक्षित बनाने के लिये विशेष कानून पास किये गए और राज्य-घोषणाएँ निकाली गयीं।

लेनिन ने १९१९ में लिखा, "योरप के अधिकतम पिछड़े देशों में से एक देश में, स्त्रियों के उद्धार के लिये और समाज में उनको पुरुष के बराबर

स्थान देने के लिये, सोवियत शासन ने दो वर्ष के भीतर ही उतने से अधिक कर दिखाया जितना कि विश्व के आगे बढ़े हुए, जागृत 'जनतांत्रिक' देशों ने सम्मिलित रूप से १३० वर्ष में किया," (अर्थात १८ वीं सदी के अन्त की फ्रान्सीसी क्रान्ति के बाद से।) (लेनिन, संकलित रचनायें, तृतीय रूसी संस्करण, जिल्द २४ वीं, पृ. ५१८) परन्तु स्त्रियों के वास्तविक उद्धार व मुक्ति की ओर सोवियत शासन के यह तो पहले ही कदम थे।

मेहनतकश स्त्रियों में निहित अनुपम बुद्धि, चातुरी, कार्यक्षमता, प्रतिभा तथा उनकी सब रचनात्मक शक्तियों के वास्तविक प्रस्फुटन तथा विकास को केवल समाजवाद की स्थापना ही सुनिश्चित कर सकती थी। केवल सामूहिक फ़ार्मों में ही करोड़ों कृषक-स्त्रियों को पुरुषों के बराबर का स्थान दिया गया है और वे वास्तव में अपने जीवन की स्वतंत्र और मुक्त विधात्री बन गई हैं। सामूहिक खेतों में तेज़ काम करने वालों के प्रथम सम्मेलन में ही स्तालिन ने बताया था कि सामूहिक कृषि के आन्दोलन ने अनेक विलक्षण बुद्धिवाली तथा कार्यकुशल स्त्रियों को उन्नत पदों पर पहुँचा दिया है, सामूहिक फ़ार्मों की स्त्रियां पिछड़ी हुई स्थिति से आगे बढ़कर समाज की अगली पंक्तियों में आ चुकी हैं, सामूहिक फ़ार्मों पर ये स्त्रियां एक शक्ति हैं। उसी समय स्तालिन ने कहा था कि इस ताक़त को दबा कर रखना एक बड़ा अपराध होगा, स्त्रियों को तरक्की देने तथा उनकी संगठनात्मक योग्यताओं के उपयोग में अधिक साहस से काम लेना चाहिये। उस समय से अब तक सामूहिक खेती के आन्दोलन ने कई स्त्रियों को योग्य व प्रगतिशील व्यवस्थापकों व नेताओं के रूप में आगे लाकर खड़ा कर दिया है।

आंकड़ों के अनुसार १९४६ में ३५०,००० से अधिक स्त्रियां कृषि-विशेषज्ञ थीं या खेतों और मवेशीखानों में काम करने वालों की टोलियों का नेतृत्व करती थीं।

२५०,००० से अधिक बालिकाएँ व स्त्रियां ट्रैक्टर तथा अन्य मशीनें चलाती थीं। इस संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि ही होती जा रही थी।

सोवियत-व्यवस्था ने स्त्रियों की सामाजिक-स्थिति में आमूल परिवर्तन कर दिया है, उनकी सांस्कृतिक प्रगति और उनके सर्वमुखी विकास के लिये सारी

आवश्यक परिस्थितियां रच दी है, और गाँवों और शहरों दोनों के सामाजिक जीवन में स्त्री की सहकारिता को अत्यधिक बढ़ा दिया है और उसके कार्यक्षेत्र को अत्यधिक विस्तृत कर दिया है।

मेहनतकश स्त्रियों की शिक्षा को ज़ारशाही अनावश्यक समझती थी और उच्च शिक्षा के विद्यालय उनके लिये पूरी तरह बन्द थे। इस प्रकार अधिक प्रतिभाशील व कुशल कार्यों में, विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्रों में इन स्त्रियों पर पूरी पाबन्दी लगी हुई थी।

सोवियत शासन ने सारी मेहनतकश जनता के लिये शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति के सब दरवाज़े खोल दिये।

ज़ार के शासनकाल में, १९१४ में सारे देश की विद्यार्थी संख्या का केवल १५ प्रतिशत भाग स्त्रियां थीं; परन्तु, सोवियत शासन के भीतर, उच्च शिक्षा के केन्द्रों में ही स्त्रियों की संख्या १९२८ में २८% तथा १९४० में ४९.३% तक पहुँच चुकी थी; जब कि साधारण व्यवसायी हाईस्कूलों में इनकी संख्या १९२८ में ३७.६% और १९३८ में ५१.६% हो गई।

अतएव यह आश्चर्य की बात नहीं कि सोवियत संघ के भीतर विज्ञान, संस्कृति तथा दक्ष कार्यों के विविध क्षेत्रों में स्त्रियां तेज़ी के साथ पुरुषों की बराबरी में आती जा रही हैं। ज़ारकालीन रूस में स्त्री-वैज्ञानिकों की संख्या नगण्य थी और स्त्रियों को वैज्ञानिक अध्ययन व शिक्षा के लिये विदेश जाना पड़ता था। योग्यता व पाण्डित्य के बावजूद, स्त्रियों के लिये यूनिवर्सिटियों में पद पा सकने पर इतनी अधिक रोकथाम थी कि तत्कालीन रूस की विश्व-प्रसिद्ध गणितज्ञ सोफ़िया कोवालेवस्की के बारे में 'इम्पीरियल एकेडेमी आफ़ साइन्सेज़' के अध्यक्ष को यह कहना पड़ा, "हमारे देश में मादाम कोवालेवस्की के लिये कोई स्थान नहीं है।" (नीना पोपोवा, **समाजवाद के देश में स्त्रियां**, मास्को १९४९, पृ. ८२) परन्तु १९२९ में ही सोवियत संघ के वैज्ञानिक कर्मचारियों का २२.८% भाग स्त्रियां थीं और १९४० में ३७%। १९४५ में ३३००० तथा १९४७ में ३५००० स्त्रियां वैज्ञानिक क्षेत्रों में काम करती थीं। केवल सोवियत संघ की एकेडेमी आफ़ साइंसेज़ में लगभग ४००० स्त्रियां काम करतीं हैं और इनमें विविध राष्ट्रीय जातियों का प्रतिनिधित्व है। इनमें से ९

करेस्पांडिंग मेम्बर हैं, ५७ डाक्टर आफ़ साइंस हैं और ५४६ मास्टर आफ़ साइंस हैं। विज्ञान और टेकनीक, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में विलक्षण तथा अपूर्व काम के लिए सोवियत स्त्रियों को २३७ स्तालिन-पारितोषिक मिल चुके हैं।

स्त्रियां देश के सम्पूर्ण सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भाग लेती हैं। समाजवादी राज्य का संचालन व नेतृत्व करने वाली, लेनिन और स्तालिन की गौरवशाली तथा वीर बोल्शेविक पार्टी में दस लाख से अधिक स्त्रियां सदस्य हैं। स्तालिन-विधान के अनुसार, मेहनतकश जनता के डिपुटियों (प्रतिनिधियों) की स्थानीय सोवियतों में ४८०,००० से अधिक स्त्रियां चुन कर भेजी गई हैं। संघीय तथा स्वायत्त प्रजातंत्रों की सर्वोच्च सोवियतों के प्रथम सम्मेलन में १५०४ तथा द्वितीय सम्मेलन में १७३८ स्त्री-प्रतिनिधियों ने भाग लिया; सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रथम सम्मेलन के लिये २२७ तथा द्वितीय सम्मेलन के लिये २७७ स्त्रियां प्रतिनिधि चुनी गई।

देश के पूर्वी क्षेत्रों में युगों तक स्त्री, परिवार की गुलाम बनी रही थी। उसको पुरुषों के साथ बैठकर खाने तक का अधिकार नहीं था, और आजकल हमारे तुर्कमन तथा उज्बक प्रजातंत्रों की स्थानीय सोवियतों के सदस्यों में एक तिहाई स्त्रियां हैं।

उपरोक्त आंकड़े नीरस व शुष्क प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु इनके पीछे हम समाजवाद की विजय, लेनिन तथा स्तालिन के महान विचारों की विजय का अनुभव करते हैं; इनमें हमको सोवियत की मेहनतकश जनता की व्यक्तिगत क्षमता तथा व्यक्ति के उच्च विकास तथा रचनात्मक शक्ति, उसके देशप्रेम और अपूर्व वीरता का प्रदर्शन मिलता है। यह यथार्थ सत्य है कि राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने की दृष्टि से प्रशंसनीय काम करने के उपलक्ष में, गत महायुद्ध की वीरांगनाओं के रूप में १२०,००० स्त्रियां सोवियत शासन के द्वारा विभूषित की जा चुकी हैं और देश की ६९ स्त्रियों को "हीरो आफ़ द सोवियत यूनियन" के यशस्वी नाम से सुशोभित कर दिया गया है—यह सत्य सोवियत के भीतर स्त्रियों की बढ़ी चढ़ी सामाजिक स्थिति के अतिरिक्त और क्या प्रमाणित करते हैं? सोवियत स्त्रियों ने मारिया देमचेन्को, मरीना ग्नातेन्को, प्रास्कोव्या ऐंजेलिना, अन्ना युतकीना, एकातरीना बारीशनिकोवा, अन्ना गार्मात्युक, तात्याना बाइकोवा, एकातरीना नारतोवा, पेलिगिया सेरेदनिचेंको, वेरा

चुमाकोवा, पेलेगिया वार्गीना, नताल्या कोरोल्योवा जैसी सैकड़ों "सोवियत श्रम की वीरांगनाओं" को पैदा किया है।

समाजवाद के देश के अतिरिक्त किसी अन्य देश में, मेहनतकश युवकों और युवतियों की रचनात्मक शक्तियों, योग्यताओं व प्रतिभा की वृद्धि इतनी तेज़ी के साथ न तो हो सकी और न हो सकती है।

पूंजीवाद, मेहनतकश पुरुष व स्त्रियों के काम करने, आराम तथा छुट्टी, और शिक्षा के अधिकार को ही नहीं छीनता, वरन् मेहनतकशों की सबसे अधिक वाँछनीय बातों पर—जीवन का आनन्द, युवावस्था का सौन्दर्य, प्रेम का प्रकाशमान स्वप्न, तथा सुख आदि सब पर—रोकथाम लगा देता है। पूंजीवाद उनकी सर्वोच्च भावनाओं, उत्कृष्ट प्रवृतियों का तथा देशसेवा व मानव जाति की सेवा की उनकी अभिलाषा का गला घोंट देता है; उनको ग़रीबी तथा बेकारी, कठोर व दासत्वपूर्ण मेहनत के आनन्दहीन जीवन में जबरदस्ती ढकेल देता है। आजीवन पूंजी के गुलाम बने रहना, अपनी मेहनत द्वारा और अपना पसीना बहाकर जोंकों तथा शोषकों को अमीर बनाना, लुटेरे पूँजीपतियों के रचे हुए वीभत्स साम्राज्यवादी युद्धों में ईंधन का काम देना, शोषकों के निकृष्ट और अपराधी हितों की रक्षा में स्वयं मर जाना या अपाहिज बनकर घोर निर्धनता में मौत के दरवाज़े तक घसिटना —मेहनतकश वर्गों के युवकों का पूंजीवादी देशों में बस ऐसा ही भाग्य है।

इसके साथ ही सम्पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था—उसकी राजनीति तथा शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था—युवकों को भ्रष्ट और दूषित करती है, उनके भीतर मिथ्या अहंकार, पदलोलुपता, निर्दयता, पाशविकता, आम जनता के प्रति घृणा व द्वेष तथा जाति-द्वेष आदि निकृष्ट भावनाएँ पैदा करती है।

हमारे संघ की वर्तमान पीढ़ी को, यशस्वी सोवियत युवकों को, यह सब कुछ भुगतना नहीं पड़ता, वे लोग अपने गुरुजनों के साथ एक नये, उज्ज्वल विश्व की, कम्युनिज़्म के सुन्दर भवन की, नींव डालने में संलग्न हैं। बेकारों की सेना में 'अनावश्यक जन-संख्या' बनने की आशंका उनको कभी भी नहीं सताती। सोवियत युवक को इस बात का भय कभी भी नहीं रहता कि अपनी रचनात्मक शक्तियों व क्षमताओं और प्रतिभा के उपयोग में उसको विफलता मिलेगी।

हमारे समाजवादी देश के युवकों के लिये वास्तविक रचनात्मक श्रम, सब प्रकार के शारीरिक व बौद्धिक विकास तथा जीवन के हर क्षेत्र में अपनी सब रचनात्मक शक्तियों व क्षमताओं के उपयोग के लिए तथा उनको एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने वाले सब मार्ग खुले हुए हैं। ये युवक सारी सोवियत जनता, सोवियत शासन और कम्युनिस्ट पार्टी के वात्सल्य तथा उनके सावधान लालन पालन का समुचित उपभोग करते हैं। कम्युनिस्ट पर्टी हमारे युवकों के भीतर महान, उच्चतम मानवीय भावनाओं तथा गुणों को भरती है और उनके दिमागों में विशाल व स्वस्थ आदर्शों की चाह पैदा करती है, उनको जीवन में प्रफुल्ल, उत्साही व आशावादी, संकल्प में दृढ़, साहसी और चुस्त बनना सिखाती है तथा उनको सारी मेहनतकश जनता व अपने समाजवादी देश का सचेत सेवक बनाती है। हमारे पायनियरों (बालकों) तथा यंग कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों को इसी प्रकार की शिक्षा-दीक्षा मिलती है।

हमारे युवक कम्युनिज़्म के निर्माणकारों की अगली पंक्ति में पाए जायंगे। स्ताखनोवाइतों, नवपद्धति-प्रवर्तकों, काम के ढंग में सुधार करने वालों, नमूने खींचने वालों, खोजकरों, मल्लाहों, उड़ाकों, पैराशूट-सैनिकों, सोवियत सैनिकों व अफ़सरों तथा बुद्धिजीवियों की सेना को हमारा युवक समूह निरन्तर भरता रहता है। पुलों, नहरों, भवनों, खानों, रेल-लाइनों, बिजली घरों, बड़ी बड़ी मिलों तथा सम्पूर्ण समाजवादी नगरों को हमारे ही युवक समूह ने बनाया है और बना रहा है। हमारा युवक समूह दलदलों को सुखाता, रेगिस्तानों को सींचता, पहाड़ों को यात्रा-सुलभ बनाता, चट्टानों के भीतर सुरंगें बिछाता, भूगर्भ स्थित खनिज पदार्थों को ढूंढ़ता तथा वायुमण्डल के ऊपरी भागों की खोजबीन करता है। हमारा युवक समूह ही उत्तरी ध्रुव, उमड़ती नदियों तथ जलप्रपातों को भी बांधकर मानव की सेवा में लगाता है और यही युवक समूह हमारे समाजवादी देश की सुरक्षा में रत रहता है। सोवियत के युवक समूह की अपूर्व वीरता और उच्च नैतिकता, उसके जीवट, पौरुष तथा अदम्य साहस, देश और सारी मेहनतकश जनता के लिये उसका प्रेम—इन सबका यथार्थ प्रदर्शन गत महायुद्ध के मोर्चों पर सोवियत सैनिकों तथा शत्रु के मोर्चों के पीछे नवयुवक छापेमारों के यशस्वी व अमर कार्यों में और श्रम-मोर्चे पर देश के सब युवकों के विलक्षण उत्पादन-कार्यों में मिलता है। ज़ोया, लिज़ा, एलेक्ज़ेन्डर तथा कास्नाडोर के वीर जैसे अनेक वीर व वीरांगनाएँ, सब हमारे

यशस्वी युवक समूह के ही प्रतिनिधि थे। इनके कार्यों का यश कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

उपरोक्त सच्चे तथ्यों के सम्मुख पूंजीवादी "आलोचकों" की वह बकवास क्या स्थान रखती है जो बराबर यही झूठ बके जाते हैं कि समाजवादी व्यवस्था व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसकी व्यक्तिगत स्वाधीनताओं का विनाश करती है।

समाजवाद के पूंजीवादी "आलोचक" लगातार यही कहते रहते हैं कि कम्युनिस्ट व्यक्तित्व को मिटा देना चाहते हैं, वे सबको एक स्तर पर ला देना चाहते हैं, वे सबकी प्रवृत्तियों को "समान बना देना" चाहते हैं। जनता को समाजवाद से विमुख करने के लिए वे उनको डराते हैं कि समाजवादी व्यवस्था फौजी बैरकों के जीवन के समान है जहाँ हर चीज़ बराबरी के सिद्धान्त का शिकार हो जाती है। वास्तविकता यह है कि ये झूठी बदनामी करने वाले लोग पूंजीवाद के पापों को समाजवाद के मत्थे थोप देना चाहते हैं। यथार्थ यह है कि पूंजीवाद मेहनतकश जनता को नीरस जीवन में झोंकता है, जिसमें अधिकांश के **व्यक्तित्व का विनाश** हो जाता है। पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर मेहनतकश जनता के जीवन की परिस्थितियां, उसके व्यक्तिगत झुकावों, कार्य क्षमताओं और स्वाभाविक क्षमताओं को कुचल डालती, मानव की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को मोल भाव की चीज़ में बदल देती, केवल शारीरिक परिश्रम करने वालों ही को नहीं, वरन् बुद्धिजीवियों तक को वेतन-भोगी गुलामों में बदल देती हैं। लेनिन और स्तालिन ने कम्युनिस्ट-विरोधी इन पूंजीवादी आरोपों की बराबर खिल्ली उड़ाई है तथा इन प्रयासों को आधारहीन बदनामी तथा मनगढ़ंत झूठ बतलाया है।

कॉमरेड स्तालिन ने जोरदार शब्दों में बतलाया है कि मार्क्सवाद के अनुसार समानता का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्तियों की अपनी आवश्यकताओं, स्वभावों तथा उनके व्यक्तिगत जीवन को पूरी तरह एक समान कर दिया जाय, यह नहीं कि व्यक्ति के व्यक्तिगत झुकावों को समान बना दिया जाए; वरन् मार्क्सवादी समानता का अर्थ है **वर्गों का उन्मूलन** अर्थात् "(अ) पूंजीवादियों की हार और उनके प्रभुत्व को मिटा कर सारी मेहनतकश जनता की शोषण से एक समान मुक्ति व उद्धार; (ब) सब सम्पत्ति को सामाजिक सम्पत्ति बना कर, उत्पादन-साधनों पर से व्यक्तिगत-स्वामित्व का समान रूप से

उन्मूलन; (स) व्यक्तिगत योग्यता व सामर्थ्य के अनुरूप काम करने के कर्तव्य को सबों के लिये एक समान नियत करना, तथा किये गए काम की मात्रा के अनुसार पारिश्रमिक पाने के लिये सारी मेहनतकश जनता को एक समान अधिकार देना (**समाजवादी व्यवस्था**); (द) व्यक्तिगत योग्यता व सामर्थ्य के अनुरूप काम करने के कर्तव्य को सबों के लिये एक समान नियत करना, तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार पारिश्रमिक पाने के लिये सारी मेहनतकश जनता को एक समान अधिकार देना (**कम्युनिस्ट व्यवस्था**)। मार्क्सवाद इस बात को स्पष्टतः स्वीकार करके ही आगे बढ़ता है कि जनता का व्यक्तिगत स्वभाव और उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताएं न तो समाजवाद और न कम्युनिज़्म के युग में एक समान और एक रूपवाली होती हैं और न हो सकती हैं।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, मास्को १९४७, पृ. ५०२-५०३)

स्त्री-पुरुषों, जातियों तथा राष्ट्रों की समानता तथा वास्तविक सामाजिक समानता की प्राप्ति के कारण समाजवाद की स्थापना विश्व इतिहास में महत्त्वपूर्ण प्रगति है तथा अत्यधिक आगे बढ़ा हुआ एक कदम है।

परन्तु एक बात साफ़ है कि कम्युनिज़्म की पहली मंजिल अब भी पूरी समानता को सुनिश्चित नहीं कर सकती, क्योंकि उत्पादक शक्तियां अभी तक इतना विकसित नहीं हो पाई हैं कि सबों की सारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। इसीलिये, किये गए काम की मात्रा तथा गुण के अनुसार पारिश्रमिक देने के सिद्धान्त के ऊपर अभी तक चलना आवश्यक है, साधारण और दक्ष कार्यों के बीच भेद करना वांछनीय है। परिणामवश जनता की भौतिक दशा के भेद की परिस्थिति को भी अभी दूर किया नहीं जा सकता। कुछ लोग दूसरों से अधिक सम्पन्न व समृद्धिशील हों, परन्तु यह विभेद इन लोगों की सामाजिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं पैदा करता, क्योंकि उत्पादन के साधनों पर सारे समाज का स्वामित्व है। अतएव काम करने, आराम, छुट्टी तथा शिक्षा पाने के अधिकारों के उपभोग की सुविधा सबों को एक समान है; अपनी प्रतिभा, अपने गुण व अपनी योग्यताओं के प्रदर्शन के लिये सबों को बहुत काफ़ी अवसर मिलता है। " **सम्पत्ति, जाति-जन्म, लिंग-भेद अथवा पद, यह सब नहीं, वरन व्यक्तिगत योग्यता तथा व्यक्तिगत श्रम ही**

समाज में प्रत्येक नागरिक की स्थिति को निर्धारित करता है।"
(उपरोक्त, पृ. ५५१)

कामरेड स्तालिन की यह प्रस्तावना समाजवाद के मूल सिद्धान्त का ही विकास है और उसको ठोस रूप में पेश करती है : प्रत्येक को अपनी योग्यता व सामर्थ्य के अनुरूप काम करना चाहिये, किये गए काम की मात्रा और गुण के अनुसार प्रत्येक को पारिश्रमिक मिलेगा। यह प्रस्तावना समाजवादी व्यवस्था में **व्यक्तिगत योग्यता तथा व्यक्तिगत श्रम के महत्त्व** को स्पष्ट रूप से निर्धारित करती और इसके साथ ही **समाजवादी व्यवस्था के भीतर व्यक्ति के विकास, उसकी वृद्धि और पदोन्नति के नियम का निर्धारण भी करती है।**

मार्क्सवाद ने वैज्ञानिक आधारों पर यह प्रमाणित कर दिया है कि समाज में व्यक्तियों के बीच पारस्परिक सम्बंध, समाज के सम्पत्ति-सम्बन्धों व उत्पादन के साधनों के साथ जनता के सम्बंधों के द्वारा निर्धारित होते हैं।

वर्ग-विरोधी समाज व्यवस्था में उत्पादन साधनों के साथ जनता के सम्बन्ध **एक समान** रूप नहीं लिये रह सकते। इस व्यवस्था के भीतर समाज का एक भाग, शोषक वर्ग, उत्पादन तथा जीवन के सब प्रमुख साधनों का स्वामी होता है तथा इस स्वामित्व के बल पर यह वर्ग समाज के अधिकांश भाग को, मेहनतकश जनता को, उत्पीड़ित करता है, गुलाम बनाता है तथा उसका शोषण करता है; मेहनतकश जनता के हाथ से उत्पादन के साधन छिन चुकते हैं, इस कारण उसको समाज के मुठ्ठी भर लोगों का, शोषक वर्ग का, उत्पीड़न सहना पड़ता है। इस समाज में मनुष्यों की समाज-स्थिति, उनकी व्यक्तिगत योग्यता तथा उनके व्यक्तिगत श्रम के द्वारा निर्धारित न होकर, जैसा कि शोषकों के प्रपंचक दावा करते हैं, उनके सम्पत्ति–अधिकारों द्वारा निर्धारित होती है। मध्य युग की दास प्रथा और सामन्ती समाज ऐसी व्यवस्था थी कि राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्ति की समाज-स्थिति का माप उसकी भू-सम्पत्ति के विस्तार द्वारा निर्धारित होती थी, पूंजीवादी व्यवस्था में भी व्यक्ति की समाज-स्थिति इसी प्रकार निर्धारित होती है। यह आम तौर पर सबों को मालूम है कि दास प्रथा, सामन्ती तथा पूंजीवादी इन सब समाज व्यवस्थाओं में 'ऊंचे' शासक वर्ग अथवा उनके पुछल्लों को ही उच्च पदों व महत्त्वपूर्ण स्थितियों

पर नियुक्त किया जाता था और किया जाता है। वर्गीय तथा राष्ट्रीय उत्पीड़न, सीमित चुनाव-अधिकार, स्त्रियों का उत्पीड़न; शासक वर्ग, शासक जाति, शासक धर्म अथवा मत के सदस्यों को विशेष सुविधा—इन विशेषताओं के कारण इन समाज-व्यवस्थाओं में व्यक्ति की स्थिति उसकी सम्पत्ति, उसके वर्ग, उसके पद, उसकी जाति, उसके लिंग-भेद तथा धर्म विश्वास आदि द्वारा निर्धारित होती है।

शासक वर्गों, शासक जातियों तथा शासक राष्ट्रों को प्रदत्त विशेष सुविधाएँ सम्पूर्ण राजनीतिक, आर्थिक तथा वैधानिक व्यवस्था द्वारा दी जाती हैं, फिर इनको धार्मिक तथा नैतिक फ़तवों की मुहर के द्वारा अधिक ज़ोर के साथ प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। दास प्रथा, सामन्ती तथा पूंजीवादी राज्यों के विचारक तथा नियम बनानेवाले ऐसी 'व्यवस्था' को 'चिरस्थायी', 'प्राकृतिक', 'एकमात्र युक्तिपूर्ण' तथा 'विचारयुक्त' व्यवस्था कहते तथा मानते हैं।

पूंजीवाद के समर्थकों का दम्भ है कि शक्ति, साहस व योग्यता से लैस होकर प्रत्येक व्यक्ति, प्रारम्भिक पूंजी के अभाव में भी, "धनी" बन सकता है, आगे बढ़ सकता है तथा अपनी योग्यताओं के अनुरूप समाज-स्थिति ग्रहण कर सकता है। इस प्रकार की 'सफलता' को प्रमाणित करने के लिये उदाहरण भी पेश किये जाते हैं जैसे पूंजीवादी देशों में एक निर्धन का करोड़पति बन जाना अथवा एक जूते साफ़ करनेवाले का महान वैज्ञानिक हो जाना। यद्यपि उन दम्भियों को यह भी पता है कि इस प्रकार के उदाहरण अति नगण्य हैं और जो गिने चुने लोग इस प्रकार आगे बढ़ते हैं, वह भी मेहनतकश जनता का शोषण तथा उत्पीड़न करके ही यह काम कर पाते हैं। इस वास्तविकता की ओर पूरी चुप्पी साध ली जाती है।

पूंजीवाद के ढिंढोरची—सोम्बार्ट, स्पान आदि प्रकार के लोग—क्रुप्स, स्टिनेस, मार्गन, राशचाइल्ड, राकफेलर, फोर्ड आदि, महाजनी पूँजीपतियों की तथाकथित "रचनात्मक शक्ति" और योग्यता का गुणगान करते हैं। उनका उद्देश्य यह साबित करना होता है कि इन लोगों को इस बात का अधिकार है कि अपने उस प्रभुत्वपूर्ण स्थान को कायम रखें जो समाज में उनको प्राप्त है। परन्तु पूँजीपतियों की "रचनात्मक शक्ति" और "योग्यता" का अर्थ इसके

अलावा और क्या है कि वे शोषित मज़दूरों के श्रम के बल पर मुनाफ़ा कमाने की कला जानते हैं ? और जहाँ तक समाज में उनके उच्च स्थान का सवाल है, तो इसका निर्णय उनकी अपनी मिहनत और योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि उनकी पूँजी के आधार पर होता है। पूँजीवादी समाज में किसी व्यक्ति का "मूल्य" इसी आधार पर निश्चित किया जाता है। पूँजीपति, आर्थिक जीवन पर छाए रहते हैं, वे ही नीति बनाते हैं, और राज्य पर शासन करते हैं —इसलिए नहीं कि उनमें योग्यता होती है बल्कि इसलिए कि वे उत्पादन के साधनों के मालिक होते हैं। उत्पादन के साधनों पर अधिकार होने के कारण पूँजीपति करोड़ों लोगों के श्रम का फायदा उठाते हैं और समाज पर अपना प्रभुत्व जमाए रखते हैं। दूसरी तरफ़ मज़दूरों को पूँजीपतियों के लिए काम करने और गरीबी में जीवन व्यतीत करने पर बाध्य होना पड़ता है—इसलिए नहीं कि वे अपने हित में काम करना नहीं चाहते या उनमें अपने हित में काम करने की इच्छा और बुद्धि नहीं होती, बल्कि केवल इसलिए कि उनके पास उत्पादन और जीविका के साधन नहीं होते।

समाजवाद के पूँजीवादी आलोचक पहले भी यह आरोप लगाते थे और अब भी लगाते हैं कि समाजवाद प्रतियोगिता, होड़ तथा व्यक्तिगत योग्यता और पहलक़दमी को कोई मौक़ा नहीं देता और उनका दावा है कि यह पहलक़दमी केवल पूँजीवादी व्यवस्था में संभव हो सकती है जब कि वैयक्तिक सम्पत्ति और "स्वतंत्र" पूँजीवादी प्रतियोगिता की आज़ादी हो।

लेकिन, जैसा कि लेनिन ने साबित कर दिया है, वास्तव में पूँजीवाद ने बहुत पहले ही "स्वतंत्र प्रतियोगिता" की जगह समाज के ऊपर इजारेदार पूँजी (बैंक, ट्रस्ट और बड़े-बड़े कार्पोरेशन आदि) की सत्ता को, गिने चुने महाजनी पूँजीपतियों की तानाशाही को थोप दिया था।

"ऐसी पूँजीवादी व्यवस्था में प्रतियोगिता का अर्थ यह होता है कि जनता के अधिकांश भाग के, ९९ फ़ी सदी मेहनतकशों के, उत्साह को, उनकी शक्ति को और पहलक़दमी को बेरहमी से कुचल दिया जाता है। इसका अर्थ यह भी होता है कि प्रतियोगिता की जगह पूँजीपतियों की दग़ाबाज़ी, बेईमानी और चापलूसी को समाज में उच्चतम स्थान दिया जाता है।"
(लेनिन, **संकलित रचनाएँ**, दूसरी जिल्द, मास्को १९४७, पृष्ठ २५९)

इसके विपरीत, समाजवाद ने शोषक वर्गों का और पूँजी द्वारा मेहनतकश जनता के शोषण का खात्मा करके "पहली बार सचमुच बहुत बड़े पैमाने पर प्रतियोगिता का मार्ग खोल दिया है।" (**उपरोक्त**, पृष्ठ ३२८)

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने **वास्तव में स्वतंत्र और रचनात्मक श्रम** के द्वारा तथा विज्ञान और टेकनीकल ज्ञान की सफलताओं के आधार पर **जबरिया** श्रम का, शोषकों के हित में किए गए श्रम का, इस तरह खात्मा कर दिया जैसा कि मानव इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था। हजारों वर्ष तक शोषकों के हित में जबरिया श्रम के बाद इतिहास में **पहली बार** मेहनतकश जनता को अपने हित में, अपने समाज और अपने राज्य के हित में, काम करने का महान अधिकार मिला है। अपने जीवन पर, अपने भविष्य पर और अपनी प्राप्त की हुई भौतिक और आध्यात्मिक सफलताओं पर अब उसका अपना अधिकार है। इतिहास में **पहली बार** मेहनतकश लोग अपनी कमर सीधी करके सचमुच स्वतंत्र हो गए हैं। बहुत बड़े पैमाने पर समाजवादी प्रतियोगिता, अत्यधिक फुर्ती से काम करने वाले दस्तों (शाक-ब्रिगेडों), स्ताखनोव आन्दोलन और जनता में होड़ का यही अनन्त स्रोत है जिसका महान अक्तूबर क्रान्ति ने पता लगाया है और विशेष रूप से देश में समाजवाद की स्थापना के बाद से इसी को पूरी तरह विकसित किया गया है। सोवियत क्रान्ति की यह विशेषता है कि जैसे जैसे वह आगे बढ़ती है वह लगातार **जनता** के "निम्नतम" भाग को, सबसे निचले स्तर के लोगों को, इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए उत्साहित करती है, यहाँ तक कि सारी जनता इसी आन्दोलन का भाग बन जाती है। १९१९ के प्रथम सुबोतनिक (इतवार के दिन बिना मजदूरी के अपनी इच्छा से काम करनेवाले); "महान परिवर्तन के वर्ष" में समाजवादी प्रतियोगिता और शाक-ब्रिग्रेडों का काम; उसके बाद शोषक वर्गों के खात्मे और समाजवाद की विजय के बाद समाजवादी प्रतियोगिता के उच्चतर रूप में स्ताखनोव आन्दोलन; फिर महान देशभक्ति पूर्ण युद्ध के दौरान में देशप्रेम का महान देशव्यापी आन्दोलन और युद्ध के बाद स्ताखनोव आन्दोलन के नए और उच्चतर रूप; फिर क्षेत्रों और राष्ट्रीय प्रजातंत्रों के बीच प्रतियोगिता और स्तालिन पंच-

वार्षिक योजना को नियत समय से पहले पूरा करने के लिए पूरे-पूरे उद्योगों के द्वारा ली गई जिम्मेदारियाँ, तथा वार्षिक योजनाओं को समय से पहले पूरा करने के लिये पैदावार को निरन्तर बढ़ाते रहने की मजदूरों और सामूहिक खेतों के किसानों द्वारा व्यक्तिगत रूप से ली गई जिम्मेदारियाँ—समाजवादी प्रतियोगिता के विकास की ये सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख मजिलें हैं। प्रतियोगिता का यह विकास वैज्ञानिक साम्यवाद के संस्थापकों की बात को पूरी तरह साबित करता है कि सामाजिक परिवर्तन जितना ही व्यापक और गहरा होगा उतनी ही ज़्यादा हद तक जनता इस परिवर्तन में भाग लेगी।

समाजवादी समाज के विकास के लिये; जनता के अधिकतम भाग की पहलकदमी, शक्ति, योग्यता, और कुशलता के विकास के लिए, प्रतियोगिता एक बहुत शक्तिशाली उत्प्रेरक शक्ति है। प्रतियोगिता समाजवादी और कम्युनिस्ट श्रम का बुनियादी तरीक़ा और स्वरूप है। श्रम के दौरान में मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास के लिए प्रतियोगिता का पूरा महत्व इसी बात से जाहिर हो जाता है। श्रम ने ही मनुष्य की रचना की और श्रम ही मनुष्य के संपूर्ण जीवन, उसकी संपूर्ण संस्कृति, विज्ञान और कला का आधार है। मनुष्य की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों, योग्यताओं और कुशलताओं का आधार और मुख्य शर्त श्रम ही है। प्रतियोगिता समाजवाद की "गुप्त" शक्तियों के अगाध भंडार को, जो जनता में सोई पड़ी हैं, प्रकट कर देती है। स्तालिन ने समाजवादी प्रतियोगिता के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा है कि **यह कम्युनिज्म के निर्माण का बुनियादी तरीका है**। बहुत पहले ही सन् १९३० में सोलहवीं पार्टी कांग्रेस में स्तालिन ने कहा था कि फैक्टरियों और मिलों में प्रतियोगिता और शाक-ब्रिगेडों के काम का विकास हमारे विकास का एक बहुत महत्वपूर्ण कारण बन गया है। उस समय ही कम से कम बीस लाख मजदूर इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे थे और दस लाख मजदूर शाक-ब्रिगेडों में काम कर रहे थे।

कॉमरेड स्तालिन ने बताया, "प्रतियोगिता का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि वह श्रम के प्रति मनुष्य के रवैये में एक बुनियादी क्रान्ति लाती है, क्योंकि पहले श्रम को एक अपमानजनक और कष्टदायक बोझ समझा जाता था, लेकिन अब प्रतियोगिता ने उसी श्रम को बदल कर इज्जत, गौरव, यश और वीरता की चीज बना दिया है। पूंजीवादी देशों में न तो इस प्रकार की चीज़ है और

न हो सकती है। पूँजीवादी व्यवस्था में, पूँजीपतियों के आधीन जिस चीज की सबको लालसा रहती है और जिसे समाज सम्मान की दृष्टि से देखता है, वह यह है कि किस प्रकार पूँजी लगाकर मुनाफ़ा कमाया जाए या पूँजी पर सूद वसूल करके बिना श्रम के जीवन व्यतीत किया जाए। वहाँ मेहनत करने को एक घृणित काम समझा जाता है। इसके विपरीत सोवियत यूनियन में जिस चीज की सबको लालसा रहती है और जिसे समाज सम्मान की दृष्टि से देखता है वह यह है कि किस प्रकार "हीरो आफ़ लेबर" (श्रम वीर) बना जाए, किस प्रकार शाक-ब्रिगेड आन्दोलन का "हीरो" बना जाए, क्योंकि इन लोगों को करोड़ों मेहनतकश लोगों का सम्मान प्राप्त होता है।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, १० वाँ रूसी संस्करण, पृष्ठ ३९३-९४)

यह एक वास्तविक संभावना है जिसे करोड़ों मेहनतकश यथार्थ रूप दे रहे हैं।

> फलस्वरूप, पूँजीवाद तथा समाज की अन्य विरोधपूर्ण व्यवस्थाओं की अपेक्षा समाजवाद में व्यक्तिगत योग्यता और व्यक्तिगत श्रम दोनों का ही स्वरूप और विकास की दिशा तथा महत्व बुनियादी तौर पर बदल जाता है।

समाजवाद में व्यक्तिगत योग्यता और व्यक्तिगत श्रम स्वयं मेहनतकशों के हितों की, पूरे समाज के हितों की, समस्त जनता के हितों की सेवा करते हैं। पूंजीवाद और समाज की दूसरी विरोधपूर्ण व्यवस्थाओं के विपरीत समाजवाद में उनका इस्तेमाल मुट्ठी भर शोषकों को अमीर बनाने के लिए नहीं होता।

विरोधपूर्ण व्यवस्थाओं में यह होता है कि उत्पादन के साधनों के क्षेत्र में होने वाली हर तरक़्क़ी के साथ ही मज़दूर जनता का शोषण भी बढ़ता है, शोषित जनता की अवस्था और भी खराब हो जाती है। इस व्यवस्था में विज्ञान और टेकनीक में उन्नति केवल इस कारण होती है कि बिना इस के मालिकों के लिए धन बटोरना और मेहनतकशों का शोषण करना असंभव हो जाए। पूँजीवादी व्यवस्था में प्रगति के इसी अन्तरविरोधी रूप को, इसी विरोधपूर्ण रूप को, छुपाने की पूंजीवादी वैज्ञानिक कोशिश करते हैं और उसका कोई उल्लेख नहीं करते। वे हर बड़ी खोज और अनुसंधान के बारे में यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि उनसे पूरी मानवता को फायदा होता

है, केवल शोषकों के छोटे से गुट को नहीं। प्रगति के बारे में इस उदारपंथी –पूँजीवादी झूठी बकवास का पर्दा फ़ाश करते हुए मार्क्सवाद ने साबित कर दिया है कि पूँजीवाद में प्रगति मुख्यतः कुछ लोगों को अमीर बनाने, मुनाफ़ा बढ़ाने, शोषण को तीव्र बनाने और जनता को गुलाम बनाने का साधन होती है। नई मशीनों के अनुसंधान, किसी काम को करने में मेहनत कम लगने के तरीकों, और शक्ति के नये साधनों की खोज आदि का यही उद्देश्य होता है।

अणु शक्ति की खोज, जो कई देशों के वैज्ञानिकों के कई वर्षों के कठिन अनुसंधान-कार्य का नतीजा है, आधुनिक युग का सबसे बड़ा अनुसंधान है। लेकिन अमरीका और इंगलैंड के प्रतिक्रियावादियों ने इसे भी साम्राज्यवादी नीति, कूटनीतिक दबाव और धमकी का एक साधन बना लिया है और दूसरे देशों की आज़ादी और स्वाधीनता को नष्ट करने के उद्देश्य से जिन नए विध्वंसकारी साम्राज्यवादी युद्धों की तैयारियाँ की जा रही हैं, उनमें भी अणु शक्ति को साधन बनाया जा रहा है। पूंजीवादी व्यवस्था में वैज्ञानिक और अन्वेषक, जान बूझकर या अनजाने ही, इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम करते हैं।

इसके विपरीत, सोवियत राज्यसत्ता तमाम अनुसंधानों और अन्वेषणों का प्रयोग मेहनतकशों के हित के लिए, जनता के हित के लिए करती है। सन १९१८ में लेनिन ने सोवियत की तीसरी कांग्रेस में कहा था :

> "पहले मनुष्य की सारी बुद्धि, उसकी सारी प्रतिभा के रचनात्मक प्रयास का उद्देश्य केवल यह होता था कि टेकनीक और संस्कृति के समस्त लाभ केवल थोड़े से लोगों को प्राप्त हों और बाकी सब लोग उस चीज़ से वंचित रखे जाएँ जिसकी उनको सबसे ज्यादा जरूरत है—अर्थात उनको ज्ञान के उजाले और विकास से वंचित रखा जाए। लेकिन अब टेकनीक के सारे करिश्मे और संस्कृति की सारी सफलताएँ पूरी जनता की सम्पत्ति होंगी और अब फिर कभी मनुष्य की बुद्धि और उसकी प्रतिभा को हिंसा और शोषण का साधन न बनाया जा सकेगा। हम इस सत्य से परिचित हैं और क्या यह उचित नहीं है कि हम अपनी पूरी शक्ति के साथ इस महान ऐतिहासिक कार्य को पूरा करने के लिए काम करें और उसमें अपनी पूरी मेहनत लगा दें? मेहनतकश जनता इस

विशाल ऐतिहासिक श्रम को पूरा करेगी क्योंकि उसमें क्रान्ति, पुनरुत्थान, और नव-निर्माण की महान शक्तियां सोई पड़ी हैं।" (**लेनिन ग्रंथावली,** तीसरा रूसी संस्करण, २२ वीं जिल्द, पृष्ठ २२५)

लेनिन ने जनता के पूरे जीवन में जिस महान नव-निर्माण और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी, उसके महत्त्वपूर्ण परिणाम और जनता की सारी छुपी हुई रचनात्मक शक्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं और कुशलताओं का उच्चतम विकास हमारे सामने है। इस आधार पर विज्ञान, साहित्य और कला के तथा सोवियत यूनियन की विभिन्न जातियों और राष्ट्रों की संस्कृति के —जो स्वरूप में राष्ट्रीय और विषय-वस्तु में समाजवादी है—विकास के फलस्वरूप तथा करोड़ों जनता के व्यक्तित्व और व्यक्तिगत योग्यता तथा कार्यशक्ति के उच्च विकास के फलस्वरूप प्राप्त की गई आश्चर्यजनक सफलताएँ भी हम देख चुके हैं।

ऊपर जो कुछ कहा गया है उससे अब यह बात साफ़ हो गई है कि **समाजवादी व्यवस्था में समाज का विकास करने में व्यक्ति का और व्यक्तिगत पहलक़दमी का महत्व घटता नहीं, बल्कि बढ़ जाता है और उसमें एक गुणात्मक परिवर्तन हो जाता है।**

इस समय तक जो पुराना समाज रहा है उसका इतिहास बिना किसी लक्ष्य के स्वयंस्फूर्य ढंग से चलता रहा है; उसका संचालन किसी एक लक्ष्य, किसी एक योजना या किसी एक प्रेरणा के आधीन नहीं हुआ है। इस इतिहास की प्रगति किसी दूसरे ढंग से हो ही नहीं सकती थी क्योंकि निजी सम्पत्ति जनता में फूट फैलाती है और समाज को परस्पर विरोधी वर्गों में बाँट देती है जिनके हित और आकांक्षाएँ एक दूसरे के ख़िलाफ होती हैं और उनमें किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। इसलिए इस समाज में एक लक्ष्य, एक योजना और एक प्रेरणा होना असंभव है। जनता के भिन्न, विरोधी और हमेशा टकराने वाले हितों, उद्देश्यों और आकांक्षाओं के टकराव के जो परिणाम होते हैं वे बहुधा अपेक्षित परिणामों के खिलाफ़ होते हैं। जिस समाज का विकास स्वयंस्फूर्य होता है उसमें केवल मेहनतकश ही नहीं, बल्कि शासक वर्ग भी "अंधी आवश्यकता" के, स्वयंस्फूर्य ढंग से काम करने वाले विकास के नियमों के,

दास होते हैं। पूँजीवाद में जनता उत्पादन की अराजकता, प्रतिद्वन्दिता, और समय समय पर आने वाले आर्थिक संकटों तथा उनके तमाम परिणामों के नीचे दबी रहती है। पूँजीवाद के कई नेताओं ने, सबसे कुशल नेताओं से लेकर मूर्ख से मूर्ख नेताओं तक ने, आर्थिक संकटों को खत्म करने की, या कम से कम उनकी रोकथाम करके उनके दुष्परिणाम को कम करने की और योजनाबद्ध उत्पादन की कोशिश की है और इसके साथ ही पूंजीवाद के आधारों को भी क़ायम रखने का प्रयत्न किया है। लेकिन ये सब अपनी कोशिशों में असफल रहे। उनकी योजनाओं का कोई नतीजा नहीं निकल और निकल भी नहीं सकता था क्योंकि इसमें केवल इन नेताओं की व्यक्तिगत योग्यता का या इनके पूंजीवाद के नियमों की जानकारी न रखने का ही सवाल नहीं है, बल्कि स्वयं पूंजीवादी व्यवस्था का सवाल है। बात यह है कि पिछली अन्य व्यवस्थाओं की तरह पूंजीवाद भी जनता की सजग और योजनाबद्ध क्रिया के क्षेत्र को, जितना संभव होता है, सीमित कर देता है। इसका कारण केवल यही नहीं है कि इसका विकास अनियमित ढंग से होता है, बल्कि यह भी कि पूंजीवाद में उत्पादक शक्तियों के विकास का स्तर बहुत नीचा होता है, उसमें काम का बंटवारा इस प्रकार होता है कि मनुष्य गुलाम और अपाहिज बन जाता है, उसके विभिन्न वर्गों में विरोध रहता है और मेहनतकश जनता गुलाम बना दी जाती है।

समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी समाज का निर्माण एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक परिवर्तन है जिसके द्वारा समाज आवश्यकताओं के बंधन के क्षेत्र से छँलाग मारकर स्वतंत्रता के क्षेत्र में पहुँच गया है। समाजवाद, समाज के विकास के लक्ष्यहीन और अनियोजित नियमों का तथा उत्पादन की अराजकता और संकटों का खात्मा कर देता है और अर्थ-व्यवस्था के विकास को योजना के अनुसार संचालित करने और जनता के जीवन के भौतिक और सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा बनाने के सिद्धान्त के आधीन कर देता है। समाजवाद जनता में फूट नहीं फैलाता बल्कि उनमें एकता पैदा करता है, पूरे समाज में, सारी जनता में एक अटूट नैतिक और राजनीतिक एकता की स्थापना करता है, एक ऐसी एकता जिसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता—जनता और राज्यसत्ता की एकता; पार्टी, सरकार और जनता की एकता; नेता और जनता की एकता; व्यक्ति और समाज की एकता तथा सारी जनता के लक्ष्य, योजना

और काम करने की इच्छा की एकता। समाजवादी समाज के विकास में यह एकता एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति का काम करती है। जनता को इतिहास के नियमों का, समाज के विकास के नियमों का ज्ञान देकर, लेनिन और स्तालिन की पार्टी इस एकता को अपने कार्यक्रम और अपनी नीति का एक अंग बना लेती है और इस प्रकार जनता को स्वतंत्रतापूर्वक अपना इतिहास स्वयं रचने का मौक़ा देती है, उसको इस बात का मौक़ा देती है कि वह समाज के विकास के नियमों को समझकर और एक उद्देश्य से, एक योजना के अनुसार और एक संयुक्त इच्छा के आधार पर अपने निर्दिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने में अधिकाधिक सफलता हासिल करे। समाजवाद इस बात की असंख्य सुविधाएँ देता है, और ये सुविधाएँ लगातार बढ़ती ही जाती हैं, कि सारी जनता और हर व्यक्ति अपनी रचनात्मक योग्यता का प्रमाण दे सके, बड़े पैमाने पर सचमुच स्वतंत्र प्रतियोगिता हो सके और आम जनता का हर व्यक्ति अपनी निजी कुशलताओं और योग्यताओं को तेजी से विकसित कर सके और बढ़ा सके। **समाजवाद में व्यक्तिगत योग्यता और कुशलता को विकसित करने और उसको प्रदर्शित करने के लिये हमेशा इतने अवसर होते हैं कि कोई भी व्यक्ति उनको पूरी तरह इस्तेमाल नहीं कर सकता।** इतिहास में पहली बार एक ऐसे समाज और एक ऐसी राज्यसत्ता की स्थापना हुई है जो जनता की पहलक़दमी और उसकी रचनात्मक शक्तियों को कुचलती नहीं है बल्कि इसके विपरीत इस पहलक़दमी और योग्यता को विकसित करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा अवसर और सहायता देती है। पहली बार ऐसे समाज और राज्यसत्ता की स्थापना हुई है जो हर प्रकार के प्रतिक्रियावाद, शिथिलता और गतिरोध के खिलाफ़ तथा लकीर पीटते रहने के खिलाफ़ संघर्ष करती है और इसके साथ ही काम के नए तरीकों का पता लगानेवालों, अन्वेषकों और काम के ढंग में सुधार करने वालों की पहलक़दमी को ज्यादा से ज्यादा सहयोग देती है। यह समाज और यह राज्यसत्ता हर उस चीज़ का पता लगाकर उसे सहायता देती है जो सबसे ज़्यादा प्रगतिशील, उन्नत, नई, विकासमय, युवा और जीवनमय होती है, जो उच्चतर और श्रेष्ठ होती है। समाजवाद में **आदर्श की शक्ति** को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाता है: रचनात्मक श्रम, निजी तथा सार्वजनिक जीवन के संगठन और संस्कृति के श्रेष्ठतम उदाहरणों की सहायता से नए विचारों के प्रति जनता

का विश्वास पैदा करने को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाता है। इसका कारण यह है कि अबसे पहले इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ कि विज्ञान और टेक्नॉलोजी (मशीन संबंधी ज्ञान) की सारी सफलताएँ, मनुष्य की बुद्धि की सारी रचनाएँ, सारी जनता के हित के लिए इस्तेमाल की गई हों—मुट्ठी भर शोषकों द्वारा नहीं बल्कि जनता के द्वारा अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग की गई हों।

समाजवाद **एक नए प्रकार की जनता** को जन्म देती है जो पूरी तरह उन्नत होती है, जो सामाजिक उत्पादन का अच्छा प्रबंध कर सकती है, जो सारी जनता की रचनात्मक शक्ति और पहलकदमी को विकसित करने में व्यक्तिगत पहलकदमी का सबूत देती है। इस पहलकदमी को संचालित और विकसित करनेवाली संगठनात्मक शक्ति लेनिन और स्तालिन की पार्टी है। पार्टी के काम का संचालन, कार्यकर्ताओं को कुशल बनाने, हर काम के लिए उचित कार्यकर्ताओं को चुनने और हर कार्यकर्ता को उसकी क्षमता के अनुकूल काम देने से संबंध रखने वाले लेनिनवादी-स्तालिनवादी सिद्धान्तों के आधार पर इस ढंग से होना है कि "हर आदमी यह अनुभव करे कि वह उचित स्थान पर काम कर रहा है, हर आदमी अपनी क्षमता के अनुसार सबके सामान्य उद्देश्य को पूरा करने में अधिकतम योग दे, कार्यकर्ताओं को काम सौंपने का आम रुजहान ऐसा हो जो राजनीतिक नीति की आवश्यकताओं को पूर्णतः पूरा कर सके क्योंकि इसी राजनीतिक नीति को अमल में पूरा करने के उद्देश्य से कार्यकर्ताओं को उनका काम सौंपा जाता है।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, ११ वाँ रूसी संस्करण, पृष्ठ ५९६)

इस मामले में भी हम पूरे समाज के हित में योजनाबद्ध, संगठित काम करते हैं—योजनाहीन, आकस्मिक ढंग से किसी के निजी हितों के आधीन नहीं। सन् १९३३ में सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी के प्लेनम के सामने "देहात के क्षेत्रों में काम" के बारे में भाषण करते हुए और सत्रहवीं पार्टी कांग्रेस के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कॉमरेड स्तालिन ने बताया था कि समाजवाद की विजय के कारण, समाजवादी समाज के विकास में और इस प्रगति की रफ्तार को तेज करने के काम में हमारे संगठनों और हमारे नेताओं का महत्व और उनकी जिम्मेदारी घटती नहीं बल्कि बढ़

जाती है। क्यों? क्योंकि सारा विकास सोवियत राज्यसत्ता के नियंत्रण में और उसके संचालन के अनुसार हो रहा है। इसलिए मनुष्य के मनोगत गुणों का, सजगता का और जनता के संगठन का महत्व बढ़ गया है। इसी प्रकार जनता की काम करने की शक्ति को संगठित करने में नेताओं की मेहनत, क्षमता और योग्यता का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। समाजवाद का तक़ाज़ा है कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को एक योजना के अनुसार चलाया जाए। नियोजित नेतृत्व का तकाज़ा है कि पार्टी और राज्यसत्ता की प्रमुख भूमिका को और भी प्रमुख बना दिया जाए। समाजवाद की विजय इस बात पर निर्भर है कि हमारे संगठनों के नेता कौन लोग हैं और वे जनता का नेतृत्व किस प्रकार करते हैं। समाजवादी व्यवस्था इसको अनिवार्य समझती है कि पार्टी और हमारे सभी दूसरे संगठन हमारे कार्यकर्ताओं के गुणों और अवगुणों का, हर व्यक्ति के गुणों और अवगुणों का अलग-अलग, ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और इस बात का पता लगाएँ कि किसी कार्यकर्त्ता की योग्यता को किस काम में सबसे ज़्यादा आसानी से विकसित किया जा सकता है और किस काम में वह लक्ष्य को पूरा करने के लिए सब से ज़्यादा उपयोगी हो सकता है। पार्टी यह सिखाती है कि कार्यकर्ताओं की योग्यताओं को बड़ी सावधानी से विकसित करना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे माली बाग़ के फूलों को विकसित करता है, हर होनहार मजदूर की सहायता की जानी चाहिए ताकि वह अपनी योग्यताओं को विकसित कर सके और होनहार नवयुवक कार्यकर्त्ताओं के साथ "सर खपाने" में कभी आनाकानी नहीं करना चाहिए; नए कार्यकर्त्ताओं को ठीक समय पर बेझिझक तरक्की देनी चाहिए ताकि उनको "अपने काम के पुराने स्थान में सड़ते रहने और पुराने हो जाने" का मौक़ा न मिले। (उपरोक्त)

स्तालिन ने हमें सिखाया है कि पार्टी और राज्यसत्ता के प्रमुख काम में **पुराने और नए कार्यकर्ताओं के बीच** सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए; पुराने कार्यकर्ताओं के अनुभव और नए कार्यकर्ताओं के प्रबल उत्साह दोनों का एक साथ फ़ायदा कैसे उठाया जाय, और हर बाल्शेविक में **नूतन के प्रति उत्साह की भावना** का उपयोगी गुण कैसे पैदा किया जाए। इस प्रकार सोवियत व्यवस्था के विशेष लक्षण आम जनता और व्यक्तियों के, नेताओं के व संगठन के महत्त्व और जिम्मेदारी को कम नहीं करते बल्कि बढ़ा देते हैं।

व्यक्ति का सर्वतोमुखी विकास और नए मानव की प्रवृत्तियाँ

व्यक्ति का सर्वतोमुखी विकास: सारे शारीरिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास; मेहनतकश जनता की सारी क्षमताओं, स्वाभाविक प्रवृत्तियों, योग्यताओं और दक्षताओं का विकास—समाजवादी समाज के विकास में निहित नियमों के फलस्वरूप जो आम विकास निरन्तर होता रहता है, उसका यही स्वरूप है। विकास के इस स्वरूप का सबसे आम प्रमाण इस क्रम में मिलता है कि मेहनतकश जनता के सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा करके इंजीनियरों और टेकनीशियनों के स्तर तक पहुँचा देने के आधार पर शारीरिक और मानसिक श्रम के अन्तर को दूर किया जा रहा है। इस अन्तर को दूर करना कम्युनिज़्म के निर्माण के लिए एक ऐतिहासिक काम है; सोशलिज़्म से कम्युनिज़्म में पहुँचने के लिए इस काम को पूरा करना सबसे महत्वपूर्ण शर्तों में से एक है।

समाजवादी उत्पादन के लिए—जो एक योजना के अनुसार सारे समाज के हित में पार्टी और राज्यसत्ता के नेतृत्व में किया जाता है—ऐसे लोगों की जरूरत होती है जिनका सर्वतोमुखी विकास हुआ हो, जो उत्पादन के क्रम को संचालित करने की योग्यता रखते हों और सारे सामाजिक जीवन में सजगतापूर्वक सक्रिय भाग ले सकते हों। सोशलिस्ट समाज ऐतिहासिक **आवश्यकता** की बदौलत अपने लिए ऐसे मजदूर कार्यकर्ताओं को, **नए प्रकार के मजदूरों को**, खुद ही बना लेता है। श्रम के विभाजन के पुराने ढंग को, जो जनता को शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से गुलाम बनाता और कुचल डालता था, योजनापूर्वक खत्म करके सोशलिस्ट समाज उनकी रचना करता है। श्रम के विभाजन के पुराने ढंग का प्रमाण मिलता है शहर और देहात के अंतर में, शारीरिक और मानसिक श्रम के अंतर में तथा इस बात में कि हर आदमी उम्र भर एक ही रोजगार या जीविका के साधन से

चिपका रहता था। वर्ग-समाज का सारा इतिहास इन्हीं भेदभावों और अन्तर्विरोधों की धुरी पर घूमता है और वर्गों का संघर्ष और आपसी विरोध भी इन्हीं भेदभावों और अन्तर्विरोधों में व्यक्त होता है। पूंजीवाद इन भेदभावों को उच्चतम शिखर पर पहुँचा देता है। उत्पादन-शक्तियों के विकास और श्रम के विभाजन ने निजी सम्पत्ति को और वर्गों को जन्म दिया। आगे चलकर श्रम के विभाजन का विकास निजी सम्पत्ति और समाज के वर्ग-विभाजन के आधार पर हुआ और ज्यादातर बोझ मेहनतकश जनता को ही संभालना पड़ा। शोषित जनता के हिस्से में शारीरिक श्रम और तमाम कर्त्तव्य आए पर उनको अधिकार एक भी नहीं मिला और मानसिक श्रम और सारे अधिकार शोषक वर्गों की बपौती बन गए। लेकिन श्रम का यह विभाजन मजदूरों को और सारी मेहनतकश जनता को ही गुलाम नहीं बनाता, केवल उन्हीं को नहीं कुचलता, बल्कि घुमा-फिराकर वह शोषक वर्गों को और उनके बुद्धिजीवियों को भी गुलाम बनाता और उनको कुचल डालता है। आध्यात्मिक रूप से पूँजीपति घृणित दौलत की लालसा में, अर्थात् अपनी सम्पत्ति में फँसा रहता है। मुनाफ़े के लालच में वह अपनी मनुष्यता को खो देता है।

तथाकथित "शिक्षित वर्ग", पूँजीवादी बुद्धिजीवी, विशेषज्ञ, मानसिक काम करने वाले लोग "अपनी अनेक स्थानीय सीमाओं और एकांगीपन" के तथा "अपनी शारीरिक और मानसिक अदूरदर्शिता;...अपनी सीमित, ठिठरी हुई विशेष शिक्षा" के दास होते हैं, तथा "इस बात के भी (वे दास होते हैं) कि जीवन भर उनको इसी विशेष काम में फँसे रहना है—चाहे वह केवल कुछ न करने के ही विशेषज्ञ हों।" (एंगेल्स, **डूरिंग मत-खंडन**, मास्को संस्करण, १९४७, पृष्ठ ४३६)

मार्क्स और एंगेल्स ने बताया कि समाजवादी उत्पादन और उत्पादन की व्यवस्था का काम ऐसे लोगों के हाथ में नहीं सौंपा जा सकता जिनको केवल अपने उद्योग का सीमित ज्ञान होता है। पूँजीवाद, मजदूर को मशीन का एक पुर्जा बनाकर छोड़ देता है और यदि यह संभव होता तो वह सोचनेवाले, विद्रोही मजदूर को बिल्कुल ही "फालतू जनसंख्या" करार देकर उसकी जगह किसी यंत्रवत काम करने वाली मशीन को रख देता।

इसके विपरीत, समाजवाद मजदूर को मशीन के पुर्जे से एक कुशल दस्तकार, संगठनकर्ता, टेकनीशियन या मशीनों की देखरेख करने वाला

इंजीनियर बना देता है। समाजवादी व्यवस्था में, अपने आप चलने वाली मशीनें श्रम की उत्पादन शक्ति को बढ़ाने, श्रम को आसान बनाने, काम के लिए आवश्यक घंटों को कम करने और मानसिक काम, शिक्षा तथा व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के लिए आवश्यक खाली समय मुहय्या करने का काम करती हैं।

लेकिन सोशलिस्ट समाज में व्यक्ति का चौतरफा विकास, **विशेषज्ञ बनने की आवश्यकता** का किसी प्रकार विरोध नहीं करता, वह इसका कतई विरोध नहीं करता कि हर मजदूर किसी खास विषय के बारे में गहरा अध्ययन करे। व्यक्ति के चौतरफा विकास का सार-तत्व यह नहीं है कि उसे हरफ़न-मौला बनने की शिक्षा दी जाए। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की १८ वीं कांग्रेस में स्तालिन ने कहा था:

> "हमारे युवक कार्यकर्ताओं की शिक्षा का काम और उनको ढालने का काम बहुधा विज्ञान या टेकनालोजी की किसी विशेष शाखा में ही होता है—किसी एक विषय में विशेषज्ञ बनाने की दिशा में। यह जरूरी भी है और उचित भी। कोई वजह नहीं है कि यदि कोई आदमी डाक्टरी का विशेषज्ञ हो तो वह इसके साथ ही भौतिक-शास्त्र का या वनस्पति-शास्त्र का विशेषज्ञ भी बन जाए, या यदि वह भौतिक-शास्त्र या वनस्पति-शास्त्र का विशेषज्ञ हो तो वह डाक्टरी का विशेषज्ञ भी बन जाए।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएं**, ११ वां रूसी संस्करण, पृष्ठ ५९८)

समाजवाद सब लोगों से इस बात का तक़ाज़ा करता है कि वे विज्ञान और टेकनीक की किसी विशेष शाखा के बारे में उच्च श्रेणी का ज्ञान और कुशलता प्राप्त कर लें। आधुनिक विज्ञान और टेकनालोजी की हर शाखा इतनी जटिल हो गयी है और इतनी तेजी से उन्नति कर रही है कि किसी भी शाखा में निपुण बनने के लिए काफ़ी समय और मेहनत खर्च करने की जरूरत होती है। विज्ञान और टेकनालोजी की हर शाखा में प्रतिदिन इतनी नई बातों की वृद्धि होती रहती है कि अध्ययन को लगातार जारी रखना आवश्यक हो जाता है। विज्ञान और टेकनालोजी के मौजूदा स्तर को देखते हुए यह बात असंभव है कि आज के युग में कोई आदमी ऐसा हो जिसे दुनिया के हर विषय के बारे में

ज्ञान हो; प्राचीन काल में, अरस्तू या लियनार्डो द विंची के जमाने में, तो यह संभव था।

सोशलिस्ट समाज को ऐसे विशेषज्ञों की जरूरत है जो विज्ञान या टेकनालोजी की किसी शाखा में निपुण हों। परंतु सोवियत विशेषज्ञ पूँजीवादी देशों के विशेषज्ञों से बिल्कुल भिन्न होता है। पूँजीवादी देशों का विशेषज्ञ अपने आप को केवल अपने विशेष विषय तक ही सीमित करके रखता है। इसके विपरीत, सोवियत विशेषज्ञ अपने विशेष विषय के गहरे अध्ययन के साथ ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों का, समाज के विकास के नियमों से संबंध रखने वाले ज्ञान का, भी अध्ययन करता है। सोवियत **विशेषज्ञ में सामाजिक सजगता होती है, वह एक नये प्रकार का विशेषज्ञ** होता है। ऐसा ही विशेषज्ञ सफलतापूर्वक विज्ञान और टेकनालोजी की उन्नति कर सकता है, समाजवादी उत्पादन की व्यवस्था का काम कर सकता है, उत्पादन के लिए आवश्यक परिस्थितियों को अनुकूल बना सकता है, सामाजिक विकास की आवश्यकताओं को समझ सकता है और सफलतापूर्वक कम्युनिस्ट समाज की रचना कर सकता है। **सोवियत शासन-व्यवस्था ने नए प्रकार के मजदूरों, विशेषज्ञों**, वैज्ञानिकों, लेखकों, कलाकारों और राजनीतिक नेताओं को **जन्म दिया है** और आगे बढ़ाया है। इन सब पुरुषों और स्त्रियों के दिल में अपनी जनता के प्रति भरपूर लगन है।

हमारे स्ताखनोवाइत एक **नए प्रकार के मज़दूर** हैं, वे सोशलिस्ट समाज के मजदूर हैं। स्ताखनोवाइत मजदूर संस्कृति तथा टेकनिकल शिक्षा की दृष्टि से बहुत ऊँचे स्तर के लोग होते हैं और वे अपने काम के द्वारा दूसरों के सामने श्रेष्ठ कार्य-कुशलता और दक्षता का आदर्श पेश करते हैं। ये वह लोग होते हैं, जो अपने काम में पूरी तरह निपुण होते हैं, जो "अपने काम की विधि से अपने हाथ की रेखाओं की तरह परिचित होते हैं," जो अपने ज्ञान का पूरा पूरा उपयोग कर सकते हैं, जो "अपने काम से संबंध रखनेवाली हर बात के बारे में" जानते हैं। ये स्ताखनोवाइत, **काम के तरीकों में नए नए सुधार करते हैं**, काम के संगठन और साधनों के उपयोग में **क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हैं**। ये लोग काम के ढंग को श्रेष्ठतम बनाने की लगातार कोशिश करते रहते हैं। वे उत्पादन को संगठित करने के लिए लगातार नए, युक्तिपूर्ण और उच्च-कोटि के तरीकों

का पता लगाते रहते हैं। श्रम की उत्पादन शक्ति को वे इतना अधिक बढ़ा देते हैं कि टेकनिकल उत्पादन के तमाम पुराने माप-दंड बेकार हो जाते हैं। श्रम की उत्पादन-शक्ति का यह स्तर पूंजीवाद में असंभव है, इतनी उत्पादन-शक्ति केवल समाजवाद में ही संभव हो सकती है। सोशलिज्म से धीरे धीरे कम्युनेज्म की मंजिल में पहुँचने के लिए उत्पादन शक्ति का यह ऊंचा स्तर आवश्यक भी है। सोशलिज्म से कम्युनिज्म की मंजिल में पहुँचने का अर्थ यह होता है कि शारीरिक और मानसिक श्रम के अन्तर को बिल्कुल मिटा दिया जाय और सांस्कृतिक और टेकनिकल रूप से मजदूर वर्ग को आगे बढ़ा कर इंजीनियरों और टेकनीशियनों के काम के स्तर तक पहुँचा दिया जाय। स्ताखनोव आन्दोलन का महान ऐतिहासिक महत्व इस बात में है कि यह आन्दोलन मजदूर वर्ग की इस सांस्कृतिक और टेकनिकल उन्नति को संभव बनाता है, सोशलिज़्म से कम्युनिज़्म की मंजिल में पहुँचने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ पैदा करता है और आम मेहनतकश जनता में से नए प्रकार के मजदूरों की, कम्युनिस्ट समाज के मजदूरों की, रचना करता है जो इस परिवर्तन को (सोशलिज़्म से कम्युनिज़्म में प्रवेश) ला सकते हैं। उद्योग-धंधों में और यातायात के साधनों में स्ताखनोव आन्दोलन के अनेक अग्रणी मौजूद हैं—एलेक्सी स्ताखनोव, माइरान यूकानोव, पियोत्र क्रिवोनोव, निकोलाई स्मेतानिन, एलेक्जेन्डर बुसिगिन, येवदोकिया और मारिया विनोग्रादोवा, माकार मजाई, एलेक्सी सेमीवोलोस, इलेरियन यानकिन, येगोर अगारकोव, दिमित्री बोसी और अलेक्जेन्डर फेदोतोव। इनके अलावा खेती में काम करने वाले स्ताखनोवाइत हैं—ट्रैक्टर चलानेवाली पाशा एंजेलिना फसल काटने की मशीन चलाने वाला कांसटैन्टिन बोरिन और अन्न की अत्यधिक उपज करने वाली कुशल किसान अन्ना युतकीना, मिखाइल येफ्रीमोव, मेरीना ग्नातेन्को, मारिया देमाचेन्को और इसी तरह के हजारों दूसरे लोग।

दिमित्री बोसी पेंच में चूड़ी काटने वाली मशीन पर काम करता है। उसने काम के एक नए तरीके का प्रयोग किया जिससे वह पहले की अपेक्षा एक पाली में १०-१५ गुना अधिक उत्पादन करने लगा और इस प्रकार उसने "हजार प्रतिशत उत्पादन" के आन्दोलन की नींव डाली। एक नौजवान औरत वाई० वैरिशनिकोवा ने अपनी टोली का काम इस तरह संगठित किया कि कम मजदूरों ने ही उत्पादन को पहले से ज़्यादा करके दिखा दिया। येगोर अगारकोव ने यह

सुझाव रखा कि जिन छोटी छोटी टोलियों का काम टेकनालोजी की दृष्टि से एक दूसरे से सम्बंधित होता है उनको एक में मिला दिया जाए। इस सुझाव के कारण मजदूरों को नए ढंग से टोलियों में बँटा गया जिसका नतीजा यह हुआ कि कुछ मजदूरों, टेकनीशियनों और इंजीनियरों को दूसरे काम में लगाना संभव हो सका। दूसरे महायुद्ध के दौरान में स्ताखनोवाइतों ने जिस वीरतापूर्ण श्रम और रचनात्मक पहलकदमी का परिचय दिया उसने शत्रु पर विजय पाने में बहुत बड़ी सहायता की।

युद्ध के समय से स्ताखनोव आन्दोलन नए उत्साह से उन्नति कर रहा है। चौथी स्तालिन पंच वर्षीय योजना ने, जो कम्युनिस्ट समाज की रचना के लिए महान निर्माण-कार्यों को पूरा करने की स्तालिन की योजना है, इस आंदोलन को नई प्रेरणा दी है। सोवियत यूनियन के अखबारों में रोज इन आगे बढ़ हुए मजदूरों की उल्लेखनीय सफलताओं के समाचार छपते रहते हैं। गेरासिम जैपोरोजेत्स नामक कोयला मजदूर ने अपनी कोयला काटने की मशीन की सहायता से एक महीने में १४,००० टन कोयला निकाला— युद्ध के बाद के जमाने में इतने समय में इससे ज़्यादा कोयला नहीं निकाला गया है। सवातार आशुमोव नामक कम्युनिस्ट मजदूर एक पुराना सैनिक है, वह अब जमीन के अन्दर तेल के कुओं की मरम्मत का काम करता है और अपने काम में बहुत कुशल है। उसने अपने काम को इतने अच्छे ढंग से संगठित किया है कि उसके काम करने की रफ़्तार ५० प्रतिशत बढ़ गई है। ईवान प्रानिचकिन, चेगाई सोजाईव और निगमाजान मिंजारीपोव ने तथा बाक्साइट (एक प्रकार की मिट्टी जिसमें से अलमुनियम धातु निकाली जाती है—अनु०) की खानों में उनके साथ काम करने वाली टोलियों ने सुरंगें खोदने के ऐसे नए ढंग मालूम किए हैं जिनके कारण उनके उत्पादन की मात्रा ४-५ गुने से भी ज़्यादा बढ़ गई है। अखबारों में मकार मजाई के मित्रों की आपस की प्रतियोगिता और सफलताओं के समाचार छपे हैं (मकार मजाई लोहे के कारखाने में काम करने वाला एक प्रख्यात मजदूर था जिसे जर्मनों ने मार डाला था)। इन समाचारों में दिमित्री मजालोव के काम का उल्लेख मिलता है; मजाई के शिक्षक मैक्सिम मखोरतोव के काम का उल्लेख मिलता है, जो दोनेत्स क्षेत्र में फौलाद के एक कारखाने में सीनियर स्मेल्टर (कच्ची धातु को पिघला कर लोहा निकालनेवाला) हैं जिसे अपने काम के बदले पुरस्कार भी मिल

चुका है; इनमें मिखाइल कुचेरिन की सफलताओं का उल्लेख मिलता है जो तेजी के साथ लोहा पिघलाने के काम में निपुण हैं और उन्हें भी अपने काम के बदले पुरस्कार मिल चुका है। इसके अलावा इन समाचारों में कामातोस्कें, स्तालिनो, मैकियेवका, एनाकीवो और कांस्टैंटनोवका जैसे फौलाद के कारखानों के अन्य मजदूरों की सफलताओं का उल्लेख मिलता है।

अन्ना कुज़नेत्सोवा मास्को की एक नौजवान मजदूर औरत है। वह मोटर के कारखाने में काम करती है। उसने काम के ढंग को सुधारने के लिए कई सुझाव रखे—कुछ पुर्जों को ढलने के तरीके में सुधार किया जाए, एक विशेष औजार का डिज़ाइन बदल दिया जाए, धातु को काटने की रफ़्तार तेज की जाए और कुछ नए यंत्र प्रयोग किए जाएँ। उसके सुझाव स्वीकार कर लिए गए और सीनियर टेक्नालाजिस्ट चिर्किगेरियन, फौरमैन ईवान कोलोशियान, और फिटर स्पिरिन और तारासोव की सहायता से अन्ना कुज़नेत्सोवा और उसकी टोली "अपने काम में तीन साल आगे हो गई," अर्थात् जितना काम १९५० तक के लिए तै किया गया था वह उन्होंने १९४८ में ही पूरा कर दिखाया। इस प्रकार उन्होंने अमल में यह दिखा दिया कि पूरे कारखाने का काम समय से पहले पूरा किया जा सकता है। फैक्ट्री के लोगों ने और सरकार के मोटर उद्योग के मंत्री-विभाग ने इस नए तरीके के आर्थिक और राजनीतिक महत्व को समझा और इस बात का अनुभव किया कि यह तरीक़ा सभी कारखानों में, और विशेष रूप से उन कारखानों में जहाँ नई मशीनों के उत्पादन के काम को निपुणतापूर्वक किया जा रहा है, प्रयोग किया जाना चाहिए।

यह अन्ना कुज़नेत्सोवा कौन है? एक सीधी-सादी मामूली सी लड़की जो बचपन से ही अनाथ थी और जिसका पालन-पोषण एक अनाथालय में हुआ था। जब नवम्बर १९४६ में वह कारखाने में काम करने आई उस समय वह यंग कम्युनिस्ट लीग की सदस्य थी और इसी संगठन ने अपनी सिफारिश के साथ उसे कारखाने में भेजा था। उसकी उम्र इस समय २४ वर्ष से अधिक नहीं है। लेकिन वह सोवियत देश की सच्ची देशभक्त है, वह लेनिनी संगठन कामसोमोल की सन्तान है, वह काम करने के नए नए ढंगों का पता लगाती है और अपने अपार साहस के कारण उसने अपने आप से यह प्रश्न किया, "क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अभी वह हालत पैदा कर दें जो १९५० में होनी चाहिए?" वह काम की गति को बोल्शेविक ढंग से तेज करने की जान-तोड़ कोशिश कर रही है और वास्तव में समय की गति को पछाड़ रही है।

मास्को के चमड़ा काटने का काम करने वाले वासिली मात्रोसोव ने जिस पहलक़दमी और अनुभवशीलता का परिचय दिया है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसने सारे कारखाने में स्ताखनोवाइत ढंग से काम करने की योजना को अपनाने का सुझाव रखा और अमल में उसे पूरा कर दिखाया।

इस योजना में यह सुझाव रखा गया है कि **कारखाने में काम करने वाले सभी स्ताखनोवाइतों के अनुभवों को एक जगह एकत्रित करके उससे आम नतीजे निकाले जाएँ और तमाम मजदूरों को उन अनुभवों से परिचित कराया जाए ताकि तमाम मजदूरों को सबसे आगे बढ़े हुए स्ताखनोवाइतों के स्तर तक पहुँचाया जा सके।**

जिस समय इस योजना को अमली रूप देने की तैयारी की जा रही थी उस समय कारखाने के मजदूरों ने काम के ढंग को सुधारने के लिए १७० सुधार रखे। उन्होंने कई ऐसे महत्वपूर्ण सुधार अपनाए जिनको बड़ी आसानी से उत्पादन की क्रिया में, श्रम के संगठन में और आम मजदूरों को स्ताखनोवाइतों के अनुभव से परिचित कराने के काम में लागू किया जा सकता था। इस योजना को तैयार करने के लिए और उसे अमल में लाने के लिए कुशल चमड़ा काटने वाले मात्रोसोव और मालाखोवा के अतिरिक्त पार्टी और ट्रेड यूनियन संगठन की, फैक्ट्री के चीफ़ इंजीनियर कामरेड जखारोव की, कारखाने के सुपरिन्टेन्डेन्ट इंजीनियर रोज़िन्सकी की तथा चमड़ा उद्योग की केन्द्रीय रिसर्च इंस्टीट्यूट की सहायता ली गई। **सामूहिक रूप से काम करने के स्ताखनोवाइत तरीके को सच्चे वैज्ञानिक ढंग से संगठित करने का** यह एक अच्छा उदाहरण है।

यह मात्रोसोव कौन है? उसकी जीवन-कथा कई दूसरे स्ताखनोवाइतों जैसी ही है। सन् १९२४ में जब वह किशोरावस्था में ही था, उसने अपना गांव छोड़ दिया और 'प्रोलितारी' नामक कारखाने के उद्योग शिक्षा के स्कूल में भरती हो गया और यहीं उसने चमड़े का काम सीखा। सन् १९२९ से वह 'पेरिस कम्यून' नामक कारखाने में काम कर रहा है। उसने इस कारखाने में समाजवादी प्रतियोगिता की शुरुआत की और वह यहां के प्रथम स्ताखनोवाइतों में से है। सन् १९४५ में वह एक टोली का नेता बना दिया

गया और उसने अपने काम से यह साबित कर दिया कि वह स्ताखनोवाइतों का अच्छा संगठनकर्ता है। उसकी टोली ने १९४६ के लिए आयोजित उत्पादन को दुगना कर दिया, इसमें अकेले मात्रोसोव द्वारा किए गए उत्पादन की मात्रा साधारण मात्रा से ढाई गुना, साढ़े तीन गुना और चार गुना तक थी।

मात्रोसोव ऐसा मजदूर है जो एक-एक सेकंड का पूरा पूरा उपयोग करता है। वह कारखाने के इंजीनियर और सुपरिन्टेन्डेन्ट से उत्पादन को बढ़ाने के उपायों के बारे में बहस करता है और इंजीनियर का सबसे ज़्यादा विश्वास पात्र है। सारे देश के कई कारखानों में मात्रोसोव के दिखाए हुए मार्ग का अनुसरण किया गया है। हजारों ऐसे उन्नत मजदूरों ने, जो तमाम मजदूरों को अग्रतम स्ताखनोवाइतों के स्तर तक पहुँचाने के लिए उत्सुक हैं, उसके काम के तरीक़े को अपनाया है ताकि वे चौथी स्तालिन पंचवर्षीय योजना को समय से पहले पूरा कर सकें।

मात्रोसोव और उसके अनुयायियों ने जिस पहलक़दमी का परिचय दिया है, वह विशेष रूप से इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इससे तमाम मेहनतकश जनता की उन्नति का मार्ग खुलता है, क्योंकि इसी **उन्नति के फलस्वरूप श्रम की उत्पादन शक्ति में बहुत तेजी से बढ़ती हो सकती है** और मेहनतकशों के भौतिक और सांस्कृतिक स्तर को आम तौर पर उन्नत किया जा सकता है। 'कालीब्र' नामक कारखाने के सीनियर फ़ौरमैन निकोलाई रासीस्की ने यही रास्ता अपनाया और अपने क्षेत्र में **स्ताखनोवाइत ढंग से सामूहिक काम का संगठन किया।**

सोवियत यूनियन में काम और टेकनिकल शिक्षा दोनों ही अच्छे ढंग से संगठित हैं। तमाम मजदूर स्ताखनोवाइत स्कूलों में या ऐसे केन्द्रों में जाते हैं जहाँ उनको अपने उद्योग के लिए आवश्यक टेकनिकल शिक्षा दी जाती है। इस क्षेत्र के काम को कनवेयर-बेल्ट प्रणाली पर नए सिरे से संगठित किया जा रहा है जिसके कारण सामूहिक काम को स्ताखनोवाइत ढंग से करने का बहुत मौक़ा मिलता है। (इस प्रणाली में एक चलनेवाली पट्टी पर उत्पादन की जाने वाली चीज़ एक मजदूर के पास से दूसरे मजदूर के पास तक पहुँचती है और उस मजदूर का काम पूरा हो जाने पर वह चीज़ अपने आप उस पट्टी के सहारे अगले मजदूर के पास पहुँच जाती है और इस प्रकार क्रमवत् उत्पादन

का काम चलता रहता है।) मशीनें बनने वाली मशीनों के उद्योग के मंत्री-विभाग की एक कांफ्रेन्स में इस बात को स्वीकार किया गया कि चूँकि रासीस्की का अनुभव सारे देश के लिए महत्व रखता है, इसलिए मशीन बनाने वाले दूसरे कारखानों को भी उस के अनुभव से परिचित कराना चाहिए।

दूसरे महायुद्ध के दौरान में ही कालिनीन ने बताया था कि जो मजदूर आज केवल अपना आयोजित काम पूरा कर पा रहे हैं या उससे बहुत ही थोड़ा ज्यादा काम कर पा रहे हैं और अभी तक स्ताखनोवाइत नहीं बन पाए हैं उनके महत्व को कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि मजदूरों की कुल संख्या में से अधिकांश ऐसे ही मजदूर हैं और कल को यही मजदूर स्ताखनोवाइत बन सकते हैं।

योजना को पूरा करने और योजना से अधिक उत्पादन करने के लिए तमाम मजदूरों की उत्पादन शक्ति को बढ़ाना नितान्त आवश्यक है। यह प्रगति की रफ्तार को तेज करता है, कम्युनिज़्म की ओर बढ़ने की रफ़्तार को तेज करता है और तमाम मजदूरों के भौतिक और सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा करता है।

सब मजदूरों को बहुत तेजी के साथ सबसे अगली श्रेणी के मजदूरों के बराबर उत्पादन करने लगना चाहिए और उनमें भी इन उन्नत मजदूरों की सी पहलकदमी दिखाने की क्षमता पैदा होनी चाहिए। इस काम में फोरमैनों के अलावा इंजीनियरी तथा टेकनिकल विभाग में काम करने वाले लोग बहुत महत्वपूर्ण सहयोग दे सकते हैं क्योंकि यही लोग उत्पादन की क्रिया को तथा तमाम कर्मचारियों के काम को संगठित करने का काम करते हैं। इंजीनियरों और टेकनीशियनों में पहलकदमी और प्रतियोगिता को विकसित करने के लिए यह सिलसिला शुरू हो गया है और वे यूराल के टेकनालोजिस्ट अलेक्जेंडर ईवानोव के दिखाए हुए मार्ग पर चल रहे हैं।

सोवियत यूनियन के स्ताखनोव आन्दोलन में हमेशा उन लोगों के सजीव और रचनात्मक विचारों का प्रतिबिम्ब मिलता है जो निरन्तर काम करने के नए नए ढंगों का पता लगाते रहते हैं। यह आन्दोलन ऐसे वृक्ष के समान है जिसमें रचनात्मक कम्युनिस्ट श्रम के रूप में नई नई कोपलें फूटती रहती हैं —कोपलें जो नवनिर्माण की प्रतीक हैं, कोपलें जो सोवियत यूनियन के मजदूर

वर्ग की निरन्तर शक्तिशाली सांस्कृतिक और टेकनिकल उन्नति का परिणाम हैं। इस प्रगति की रफ़्तार और विस्तार का उल्लेख चौथी स्तालिन पंचवर्षीय योजना में साफ़-साफ़ शब्दों में निम्नलिखित रूप में किया गया है। सन् १९४६-५० के दौरान में लगभग १ करोड़ ४० लाख मजदूरों की कार्यकुशलता काम के दौरान में ही बढ़ाई जाएगी; मजदूरों के विभिन्न स्कूलों में लगभग साढ़े चार करोड़ नए नवयुवक मजदूरों को कुशल (स्किल्ड) मजदूर बनने की शिक्षा दी जाएगी; ७ करोड़ ७० लाख मजदूरों को, जिन्होंने विभिन्न उद्योगों में काम करके अपना काम सीखा है, अलग अलग या टोलियों के रूप में शिक्षा दी जाएगी; २ करोड़ ३० लाख ट्रैक्टर ड्राइवरों, फसल काटने की मशीनें चलाने वालों और दूसरे कुशल मजदूरों को कृषि की शिक्षा दी जाएगी; १,३२६,००० लोगों को टेकनिकल स्कूलों में शिक्षा दी जाएगी; ६०२,००० विशेषज्ञ उच्च शिक्षा केन्द्रों में अपनी शिक्षा समाप्त करेंगे और सोवियत बुद्धिजीवियों की संख्या में वृद्धि करेंगे, ये बुद्धिजीवी मजदूरों और किसानों का ही एक अंग हैं, ये सही माने में लोकप्रिय बुद्धिजीवी हैं जो पूरी लगन के साथ अपने देश और अपनी जनता की सेवा करते हैं। इसका अर्थ है **कि समाजवाद इस बात को संभव बना देता है कि तमाम मजदूरों का निरन्तर विकास हो और वे सीधे-सादे काम से धीरे धीरे ज्यादा पेचीदा और कुशल काम करना सीखें।** पूंजीवाद में इस प्रकार की बात संभव ही नहीं है।

खेती की सोवियत, सामूहिक प्रणाली इसलिए प्रशंसनीय है कि उसने भूमि के लाखों छोटे छोटे मालिकों को, अपनी जमीन पर खेती करने वाले किसानों को, ऐसे लोगों में बदल दिया जो सामूहिक, सामाजिक, समाजवादी अर्थ-व्यवस्था में भाग ले रहे हैं, **जो पूरे समाज के हित को ध्यान में रखते हैं और सामूहिक ढंग से काम करते हैं।** यह प्रणाली इसलिए भी प्रशंसनीय है कि इसने किसानों में से लाखों योग्य और निपुण संगठनकर्ता, सामूहिक खेतों के नेता, सोशलिस्ट श्रम के अध्यक्ष, टोलियों के वीर (हीरो), अधिक फसल उगानेवाले निपुण किसान तथा नए और समाजवादी गाँवों के निर्माता पैदा किए हैं, जो समाजवादी शहरों की संस्कृति को अधिकाधिक अपनाते जा रहे हैं। सोवियत यूनियन में केवल सरकारी पदाधिकारी ही नहीं बल्कि हर मजदूर और सामूहिक खेत का हर किसान **सार्वजनिक महत्व**

का व्यक्ति होता है, क्योंकि वह **सोशलिस्ट समाज और राज्य का मजदूर** होता है, वह किसी पूँजीपति मालिक का गुलाम नहीं होता।

सरकारी कारखानों में काम करनेवाले मज़दूरों, सामूहिक खेतों पर काम करनेवाले किसानों, सरकारी दफ्तरों और संस्थाओं में काम करनेवाले कर्मचारियों और नौकरी पेशा लोगों को केवल अपने कारखाने, सामूहिक खेत, दफ्तर या संस्था के ही हितों को समझना और उनकी रक्षा करना नहीं पड़ता है, बल्कि उनको पूरे सोवियत राज्य के हितों का, सारी जनता के हितों का भी ध्यान रखना पड़ता है। उनको यह समझना होता है कि उनका श्रम और उनका हर काम **सामाजिक महत्व** रखता है, सारे देश के लिए महत्व रखता है।

सामूहिक खेतों पर काम करनेवाले शॉक-वर्करों (बड़ी तीव्र गति से काम करने वाले) की पहली कांग्रेस में भाषण देते हुए कॉमरेड स्तालिन ने सीधे-सादे, साधारण मजदूरों के श्रम के ऐतिहासिक महत्व पर खास जोर दिया था। "वह ज़माना अब बीत चुका है जब केवल नेताओं को ही इतिहास का रचयिता समझा जाता था और मज़दूरों और किसानों का कोई जिक्र ही नहीं किया जाता था। अब राष्ट्रों और राज्यों के भाग्य का फैसला केवल नेता ही नहीं, बल्कि प्रमुख रूप से सबसे पहले करोड़ों मेहनतकश ही करते हैं। वे मजदूर और किसान जो चुपचाप बिना दिखावे के कारखाने और फैक्ट्रियाँ बनाते हैं, खानें खोदते हैं, रेल की पटरियाँ बिछाते हैं, सामूहिक खेत और सरकारी फार्म बनाते हैं, जो जीवन की सभी अच्छी चीजों की रचना करते हैं, जो सारी दुनिया का पेट भरते हैं और तन ढकते हैं—वे ही सच्चे वीर और नए जीवन के रचयिता हैं।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, ११वां रूसी संस्करण, पृष्ठ ४२२)

स्तालिन ने ज़ोर देकर कहा कि इन सीधे-सादे साधारण लोगों का "विनम्रतापूर्ण" और "बिना दिखावे का" काम "सचमुच बहुत महान और रचनात्मक काम है, जो इतिहास का रुख निश्चित करता है।" (**उपरोक्त**) ३० जुलाई, १९३५ को रेलवे मजदूरों की एक कान्फ्रेंस में स्तालिन ने कहा था कि सोवियत की यातायात व्यवस्था में बड़े और छोटे पद और बड़े और छोटे लोग नाम की कोई चीज़ नहीं है। **स्विचमैन से लेकर**

पीपुल्स कमिसार तक बिना किसी भेदभाव के सभी लोग महान हैं।

बिना किसी शंका के यही बात हमारे सोवियत राज्य की पूरी व्यवस्था के बारे में कही जा सकती है। यह बात दूसरे महायुद्ध के जमाने में बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई और उस जमाने में इस सत्य को बहुत स्पष्ट रूप में देखा जा सकता था क्योंकि उस जमाने में हमारे सभी कारखानों, दफ्तरों, संस्थाओं और संगठनों को घड़ी की तरह नियमित, निर्विरोध और अचूक ढंग से काम करना पड़ता था।

जून सन् १९४५ में विजय परेड में भाग लेने वालों को दिए जानेवाले स्वागत के अवसर पर स्तालिन ने युद्ध के अनुभवों का लेखाजोखा करते हुए क्रेमलिन में एक बार फिर सीधे सादे, साधारण सोवियत नागरिकों के महत्व पर जोर दिया था, जिनको न कोई पदवी दी जाती है, जिन पर न कोई किताबें लिखता है, लेकिन फिर भी वे हमारी विस्तृत शासन-व्यवस्था के काम को विज्ञान, अर्थ-व्यवस्था और सैनिक संगठन के हर विभाग में चलाते रहते हैं। ये करोड़ों सीधे सादे विनम्र लोग ही हमारी जनता हैं, ये लोग ही हमारे पूरे सोवियत राज्य की शक्ति का आधार हैं।

सोवियत व्यवस्था ने साधारण मजदूरों और किसानों में से अनेक प्रतिभाशाली सोवियत, समाजवादी बुद्धिजीवियों को जन्म दिया है, ऐसे बुद्धिजीवियों को जिनके दिलों में अपनी समाजवादी मातृभूमि और अपनी जनता के प्रति अपार लगन है। ये एक नए प्रकार के बुद्धिजीवी हैं। ये वह लोग हैं जिनका सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं है, अपने काम में वे कम्युनिज़्म के महान विचारों से, सोवियत देशभक्ति से, विभिन्न राष्ट्रों के बीच मित्रता की भावना से, समाजवादी मानववाद से और लेनिन तथा स्तालिन की पार्टी के महान विचारों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। ये वह लोग हैं जो सबसे प्रगतिशील विश्व-दृष्टिकोण का, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व-दृष्टिकोण का, पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, जो निरन्तर एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा है। कॉमरेड मोलोतोव ने कहा है, "हमारे बुद्धिजीवियों में, संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों में, हमारे वैज्ञानिकों और कलाकारों में सोवियत देशभक्ति की जितनी भावना आज है उतनी पहले कभी नहीं थी।" (मोलोतोव, **महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की ३० वीं वर्षगाँठ**, मास्को १९४७, पृष्ठ ३२) सोवियत

बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक और लेखक सबसे अलग रहकर हवाई किले बनाने वाले लोग नहीं हैं; वे ऐसे रट्टू पंडित नहीं हैं जो जीवन और जनता से दूर रहकर अध्ययन में लीन रहते हैं; वे ऐसे लोग नहीं हैं जो अपने खोल में ही घुसे रहते हों; वे जनता के सबसे आगे बढ़े हुए और सबसे अच्छे प्रतिनिधि हैं, जो जनता से अटूट संबंध कायम रखते हैं, जो जीवन की हलचल के बीच रहकर काम करते हैं। सोवियत देश के हर व्यक्ति का, समाजवादी आदर्शों के अनुसार, सर्वमुखी समान विकास करने के उच्च उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के काम में भी सोवियत के बुद्धिजीवियों का बहुत बड़ा महत्व है। सोवियत वैज्ञानिक जनता से सीखते भी हैं और जनता को सिखाते भी हैं।

पूँजीवादी व्यवस्था में और विशेष रूप से पुराने ज़ार-कालीन रूस में अनेकों प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों और अन्वेषकों का क्या परिणाम हुआ, यह सभी लोग जानते हैं——कुलीबीन, पाल्जुनोव, मिचुरिन, सियोल्कोवस्की और अनेक दूसरे कुशल लोग, जो जनता के बीच से आए थे, उनके अनुसंधानों और अन्वेषणों की क्या दुर्दशा हुई। यह बात भी सबको मालूम है कि सोवियत शासन के कारण इन्हीं मिचुरिन और सियोल्कोवस्की की परिस्थिति में कितना क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गया। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले सियोल्कोवस्की ने कॉमरेड स्तालिन को लिखा था :

"तमाम मेहनतकश जनता के बुद्धिमान नेता और मित्र कॉमरेड स्तालिन!

"अपने जीवन भर मैं यह स्वप्न देखता रहा कि मेरी मेहनत मानव जाति की थोड़ी सी भी उन्नति के लिए शायद किसी काम आ सके। क्रान्ति के पहले मेरा यह स्वप्न पूरा हो ही नहीं सकता था।

"केवल अक्तूबर क्रान्ति ने ही मेरे जैसे स्वयं-शिक्षित आदमी के काम को मान्यता दी। केवल सोवियत राज्यसत्ता और लेनिन तथा स्तालिन की पार्टी ने मुझे सहायता दी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मेरी जनता मुझसे प्यार करती है और इसी बात ने मुझे इतनी शक्ति दी कि मैं अपनी बीमारी के बाद भी अपना काम जारी रख सका। परन्तु इस बीमारी के कारण मैं उस काम को पूरा न कर सकूंगा जिसे मैंने शुरू किया था।

" हवाई जहाजों के संबंध में, राकेट चलाने के संबंध में तथा नक्षत्रों के बीच यातायात के संबंध में मैंने जितनी पुस्तकें और लेख लिखे हैं, उनको मैं बोल्शेविक पार्टी और सोवियत सरकार को सौंपता हूं, जो मानव संस्कृति की उन्नति के सच्चे नेता हैं। मुझे विश्वास है कि वे मेरे काम को सफलतापूर्वक समाप्त करेंगी।

" मेरा हृदय और मेरे सारे विचार आपसे सम्बद्ध हैं, आप ही को मैं अपनी अन्तिम शुभ कामनाएँ भेजता हूँ। —के सियोल्कोवस्की "

(सोवियत कैलेन्डर १९४७)

मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत इस मर्मस्पर्शी पत्र में सोवियत संघ में पाई जाने वाली परिस्थितियों पर पूरी रोशनी डाली गई है। जितनी अधिक बातें जितने स्पष्ट रूप से यह पत्र बता देता है उतनी शायद दर्जनों किताबों में भी नहीं कही जा सकती थीं। लेनिन और स्तालिन की पार्टी ने इस सुविख्यात वैज्ञानिक और स्वयं-शिक्षित अनुसंधानकर्ता की थाती को उसी प्रकार अपना लिया जैसे उसने दासता, जागीरदारी और पूँजीवाद के काल में मनुष्य द्वारा रची गई संस्कृति की हर उपयोगी, बहुमूल्य और सचमुच महान चीज़ को अपना लिया है। एक दूसरे सुविख्यात रूसी वैज्ञानिक आई० वी० मिचुरिन की रचनाओं को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उससे भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्रकृति को बदल देने के संबंध में उनकी प्रशंसनीय रचनाओं की पूँजीवादी-जमींदारी रूस के शासक वर्ग हंसी उड़ाते थे। प्रगति-विरोधी गला फाड़ फाड़ कर चीखते थे कि उनकी रचनाएं प्रकृति के ख़िलाफ़, " स्वयं ईश्वर की रचना " के ख़िलाफ़ " अपवित्र प्रहार करती हैं," इसलिए उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति ने, बोल्शेविकों की पार्टी ने और उसके प्रतिभाशाली नेता लेनिन और स्तालिन ने मिचुरिन की रचनाओं की रक्षा की और उनको सारी सोवियत जनता की सम्पत्ति बना दिया।

मिचुरिन ने पौदों की प्रकृति बदलने के विज्ञान की नींव डाली। मिचुरिन ने जन्मजात प्रवृत्तियों के स्वरूप और जीवों की परिवर्तनशीलता का रहस्य खोला और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दिया कि मनुष्य इस परिवर्तनशीलता को इच्छानुसार नियंत्रित कर सकता है और नए तथा अच्छे प्रकार के पौदे उगा सकता है, ऐसे पौदे जो उसके लिए ज़्यादा उपयोगी हों और यह परिवर्तन

आकस्मिक ढंग से नहीं बल्कि योजना के अनुसार लाया जा सकता है और यह परिवर्तन, विकास के दौरान में अपने आप होने वाले परिवर्तन की अपेक्षा, ज़्यादा अच्छी तरह और ज्यादा तेजी से लाया जा सकता है। इस प्रकार मिचुरिन ने डार्विन के सिद्धान्तों को एक नए उच्चतर स्तर पर पहुँचा दिया। मिचुरिन और उसके अनुयायियों के हाथों में, जिनका नेतृत्व अकेडेमीशियन टी. डी. लायसेन्को करते हैं, डार्विन के सिद्धान्त सचमुच रचनात्मक और **प्रभावशाली** सिद्धान्त बन गये हैं जो यह सिखाते हैं कि मानव जाति के हित के लिए प्रकृति को योजनानुसार कैसे बदला जा सकता है, ऐसे सिद्धान्त बन गए हैं जो सोशलिस्ट समाज की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्तों पर सैद्धान्तिक रूप से और सक्रिय रूप से अमल करते हुए मिचुरिन ने बताया, "अपनी जरूरत की चीजों के लिए हम प्रकृति के दान की प्रतीक्षा नहीं कर सकते, हमें यह चीजें उससे छीन कर हासिल करनी होंगी।" अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति की ३१ वीं वर्षगांठ के अवसर पर कॉमरेड मोलोतोव ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि मिचुरिन की यह ललकार बोल्शेविक भावना से पूर्ण है और यह केवल वैज्ञानिक काम करने वालों को ही नहीं बल्कि खेती करने वाले करोड़ों लोगों को आवाहन करती है कि वे हमारे देश की जनता के हित और गौरव के लिए इस अत्यन्त महत्वपूर्ण रचनात्मक काम में जुट जाएँ।

मिचुरिन और उसके अनुयायियों की मेहनत की बदौलत सोवियत जनता को कई बहुमूल्य नए प्रकार के पौदे और पशु प्राप्त हुए हैं जो समाजवादी कृषि में बहुत सहायक हैं।

अकेडेमीशियन टी. डी. लायसेन्को का सबसे महान काम यह है कि वह मिचुरिन के सिद्धान्तों के दृढ़ समर्थक हैं और उन्होंने उनको प्रमुख रूप से और आगे बढ़ाया है। **अमली रूप में समाजवादी कृषि के निकट सहयोग से और सामूहिक खेतों के करोड़ों किसानों के भरोसे पर—जो प्रकृति को बदलने के प्रयोग कर रहे हैं और अमल में प्रकृति को बदल भी रहे हैं—लायसेन्को ने मिचुरिन के सिद्धान्तों को रचनात्मक रूप से आगे बढ़ाया है।**

लेनिन और स्तालिन की पार्टी का वीरतापूर्ण इतिहास हमको सिखाता है कि हमें साहस से काम लेना चाहिए, साहसपूर्ण योजनाएँ बनाना चाहिए

और साहस तथा दृढ़ विश्वास के साथ, सच्चे रूसी क्रान्तिकारी उत्साह के साथ, बोल्शेविक शक्ति और कौशल के साथ इन योजनाओं को पूरा करना चाहिए। रचनात्मक मार्क्सवाद केवल संसार की व्याख्या ही नहीं करता बल्कि उसे बदलने का मार्ग भी बताता है। केवल वही पार्टी, जो मार्क्सवाद के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से लैस होगी, पुरानी दुनिया के नवनिर्माण के संघर्ष का नेतृत्व कर सकती है, और उन लोगों को प्रेरणा और उत्साह प्रदान कर सकती है जो नए कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर रहे हैं। लेनिन और स्तालिन की पार्टी ऐसे क्रान्तिकारियों की पार्टी है जो हमेशा काम के ढंग में नए नए सुधार करते रहते हैं और इसी भावना के आधीन वे सारी जनता को शिक्षा देते हैं। सोवियत जनता एक नए संसार की रचना कर रही है, पार्टी के नेतृत्व में वह एक नए समाज का निर्माण कर रही है। इसलिए **नवीनता के प्रति उत्साह की भावना**, नए जीवन की कोपलों को देखने, समझने और उनको विकसित करने की क्षमता, हर बोल्शेविक के लिये, सोवियत के हर मेहनतकश और नेता, हर लेखक और कलाकार के लिए एक आवश्यक और बहुमूल्य गुण है।

"विज्ञान और उत्पादन के क्षेत्र में काम के ढंग में नए नए सुधार करनेवालों का जो आन्दोलन चल रहा है उसकी अगुआई करो"—यह आदेश स्तालिन ने सोवियत वैज्ञानिकों को दिया था। सोवियत वैज्ञानिक केवल निडर अनुसंधानकर्ता ही नहीं हैं, वे प्रकृति को और मानव समाज को **साहसपूर्वक बदलने वाले लोग** भी हैं। क्योंकि वे नए नए तरीकों की खोज करते हैं, वे विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्तिकारी हैं, इसलिए वे पुराने अप्रचलित विचारों, सिद्धान्तों, परम्पराओं और प्रतिष्ठित सत्यों पर आक्रमण करने से डरते नहीं। वे निष्क्रियता और स्थिर कार्यप्रणाली के कट्टर दुश्मन हैं।

विचार-धारा और व्यवहार दोनों में ही नए मार्ग खोजने के प्रयत्न में वे अपने विज्ञान को जीवन के अनुभव से निरन्तर जांचते रहते हैं और उसमें वृद्धि करते रहते हैं और साथ ही जीवन में, व्यवहार में, ज्ञान और विज्ञान का प्रकाश फैलाते रहते हैं और इस प्रकार विचार-धारा और व्यवहार दोनों ही को अधिक गूढ़ता और श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। सिद्धान्त और व्यवहार की एकता ही लेनिन और स्तालिन की पार्टी के लिए और हर सोवियत मेहनतकश

के लिए मार्गदर्शक का काम करती है। **सिद्धान्त और व्यवहार के बीच एकता स्थापित करने की क्षमता सोशलिस्ट समाज के हर सदस्य के लिए अनिवार्य गुण है क्योंकि यह समाज स्वयंस्फूर्त ढंग से नहीं विकसित होता, बल्कि अर्थतंत्र के योजनाबद्ध विकास के आधार पर और सामाजिक उत्पादन के विकास तथा सामाजिक जीवन के संगठन पर विज्ञान को योजनानुसार लागू करने के आधार पर विकसित होता है।**

इसलिए सोशलिस्ट समाज के कार्यकर्ताओं को, विशेष रूप से उन लोगों को जो प्रमुख पदों पर हैं, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहिए, उनको मार्क्सवादी-लेनिनवादी होना चाहिए, उनको समाज के विकास के नियमों का ज्ञान होना चाहिए। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की १८वीं कांग्रेस के अवसर पर स्तालिन ने कहा था, "इस बात को एक स्वयंसिद्ध सत्य के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए कि राज्य या पार्टी के काम के किसी विशेष क्षेत्र में काम करने वालों की मार्क्सवादी-लेनिनवादी चेतना और उनका राजनीतिक स्तर जितना ऊँचा होगा उनका काम भी उतना ही अच्छा और लाभदायक होगा और उस काम का परिणाम उतना ही प्रभावशाली होगा; और इसके विपरीत काम करने वालों का राजनीतिक स्तर जितना नीचा होगा और उनमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान का संचार जितना कम होगा, काम में बाधा पड़ने और असफल होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी, उतनी ही ज़्यादा इस बात की संभावना होगी कि काम करनेवाले स्वयं उथले होते जाएँगे और बेदिली से काम करनेवाले तुच्छ प्रकार के लोगों में बदल जाएँगे और धीरे धीरे उनका बिल्कुल ही पतन हो जाएगा।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, ११ वाँ रूसी संस्करण, पृष्ठ ५९८)

कॉमरेड स्तालिन ने हमको सिखाया है कि देश का नेतृत्व करने में हमें जितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन सबका हल ९० प्रतिशत हद तक हमारे कार्यकर्त्ताओं की सैद्धान्तिक शिक्षा, उनकी राजनीतिक प्रौढ़ता और उनकी फौलादी दृढ़ता पर निर्भर है।

बोल्शेविकों की पार्टी और सोवियत सरकार **एक नए प्रकार के राजनीतिक नेताओं को, लेनिन और स्तालिन के प्रकार के राजनीतिक नेताओं को**, तैयार कर रही है और आगे बढ़ा रही है।

स्तालिन ने कहा है कि सोवियत के राजनीतिक नेताओं को गिरकर राजनीतिक अधकचरों, पूँजीवादी नेताओं और धारा-सभाओं के सदस्यों के स्तर पर नहीं पहुँच जाना चाहिए, जो मतदाताओं की खुशामद करते हैं, उनके सेवक होने का दम भरते हैं, चुनाव के दौरान में लम्बे चौड़े वादे करते हैं और चुनाव खत्म होते ही अपने तमाम वादों और प्रतिज्ञाओं को भूल जाते हैं। चुनाव के बाद वे समझने लगते हैं कि मतदाताओं के प्रति उनकी कोई जिम्मेदारी ही नहीं है, क्योंकि वे पूरी तरह पूंजीपतियों पर आस लगाए रहते हैं, जो अपने स्वार्थी हितों को पूरा करने की ताक में रहते हैं। इसके विपरीत सोवियत सभासदों में उस काम के लिए, जो उनको सौंपा गया है, जनता के प्रति जिम्मेदारी की तीव्र भावना होती है और इसलिए वे जनता से "स्वतंत्र" होने की इच्छा नहीं कर सकते।

कॉमरेड स्तालिन ने इस बात की मांग की है कि सोवियत के राजनीतिक नेताओं को लेनिन के प्रकार का राजनीतिक नेता होना चाहिए; उनको उतना ही स्पष्ट और निश्चित होना चाहिए, संघर्ष में उतना ही निडर और जनता के शत्रुओं के प्रति उतना ही निर्मम होना चाहिए जितना कि लेनिन थे; "यदि काम पेचीदा होने लगे और आगे कोई खतरा दिखाई देने लगे तो उनमें बौखलाहट नहीं पैदा होनी चाहिए, बौखलाहट का नाम तक नहीं होना चाहिए; उनको बौखलाहट से उसी तरह मुक्त रहना चाहिए जैसे लेनिन थे; पेचीदा समस्याओं के बारे में फैसला करते समय, जिनमें बहुत गंभीर परिवर्तन करने की और तमाम अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों को जाँचने की जरूरत होती है, उनको उतना ही बुद्धिमान और विचारशील होना चाहिए जितना लेनिन थे;...उनको अपनी जनता से उसी तरह प्रेम करना चाहिए जैसा लेनिन करते थे।" (स्तालिन, **लेनिन के बारे में**, मास्को १९४६, पृष्ठ ८१)

सोवियत के राजनीतिक नेताओं को महान लेनिन का आदर्श हमेशा अपने सामने रखना चाहिए और हर मामले में उनका अनुसरण करना चाहिए।

लेनिन के सबसे अच्छे और सबसे वफ़ादार साथी, उनके महान आदर्श को आगे बढ़ाने वाले, कामरेड जे. वी. स्तालिन इसी प्रकार के नेता हैं। जो लोग पार्टी का और सोवियत राज्यसत्ता का संचालन करते हैं वे इसी प्रकार के राजनीतिक नेता हैं; लेनिन और स्तालिन की तरह के नेता हैं; वे स्तालिन के वफ़ादार साथी हैं।

नए प्रकार की पार्टी के नेता इसी प्रकार के हैं—वह पार्टी जो लड़ाकू क्रान्तिकारी पार्टी है, जो मजबूत और दृढ़ लोगों की बनी हुई है, क्योंकि कम्युनिस्ट सबसे पहले "मजदूर वर्ग की संतान हैं, कठिनाइयों और संघर्ष की सन्तान हैं, असह्य विपदा और वीरतापूर्ण लड़ाइयों की संतान हैं।" (उपरोक्त, पृष्ठ २९) ये नेता लेनिन और स्तालिन जैसे महान सेनानायकों की सेना के मुख्य आधार हैं। लेनिन, स्वेर्दलोव, जरजेन्सकी और फ्रुन्जे की विशेषताएँ बताते हुए कॉमरेड स्तालिन ने इन नेताओं के कुछ गुणों का विशेष रूप से उल्लेख किया था—जैसे विनम्रता, सादगी, अहंकार से बिल्कुल रहित होना, सिद्धान्त पर अटल रहना, क्रान्ति और जनता के उद्देश्य के लिए अपने आप को पूरी तरह अर्पित कर देना, निडरता और वीरता, जनता के दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई में किसी प्रकार का समझौता न करना और उनको बेरहमी से खत्म कर देना, क्रान्तिकारी आशा-वादिता, जनता पर अटूट विश्वास, क्रान्ति की विजय में पूर्ण विश्वास, पराजय के समय निराशा और बौखलाहट का न होना और न विजय के समय जीत के नशे में अन्धे हो जाना, हिम्मत न हारना, जुटकर काम करते रहना, अपने निर्दिष्ट लक्ष्य कम्युनिज़्म के लिए संघर्ष में दृढ आत्म-विश्वास और अथाह लगन। ये तमाम गुण लम्बे संघर्ष के दौरान में, समाजवाद और कम्युनिज़्म के लिए क्रान्तिकारी वर्ग-संघर्षों की आग में तपकर और लक्ष्य की ओर बढ़ते समय मार्ग की कठिनाइयों और बाधाओं के खिलाफ़ संघर्ष करके ही पैदा होते हैं। क्रान्ति ने इन नेताओं को बहुत कठिन और जिम्मेदार जगहों पर तैनात किया और उनसे इस बात का तक़ाजा किया कि वे अपनी पूरी शक्ति लगा दें; संगठन के काम में योग्यता और कुशलता का परिचय दें; अपार नैतिक बल और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता दिखाएँ। ये लोग नई जनता के नेता और मार्गदर्शक हैं, एक नए और श्रेष्ठतर प्रकार के नेता हैं। ये लोग पार्टी और सोवियत जनता की प्रवृत्तियों और गुणों के पूर्ण और सजीव प्रतीक हैं। पार्टी, कामसोमोल (युवक कम्युनिस्ट संगठन), सोवियत राज्यसत्ता, ट्रेड यूनियन और सोवियत की सारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था इन्हीं गुणों को पूरी सोवियत जनता में पैदा कर रही है।

सोवियत व्यवस्था जनता को एक नए नैतिक और राज-नीतिक साँचे में ढालती है। निजी सम्पत्ति पर आधारित समाज

मनुष्य की निम्नतम भावनाओं और नीचतम मनोवृत्तियों को उकसाता है—घोर लालच, अहंकार, दूसरों का शोषण और दमन करके जीविका कमाने की इच्छा, चोरी, हरामखोरी, पद-लोलुपता, मक्कारी, विश्वासघात, राष्ट्रवाद, संकीर्ण जातीयता, जाति-वैमनस्य आदि।

एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण पर आधारित 'सभ्यता' ने ऐसी उत्पादन शक्तियों को विकसित किया है जो आदिम साम्यवादी व्यवस्था में नहीं विकसित हो सकती थीं, परन्तु यह सफलता "मनुष्य की सबसे गंदी भावनाओं और मनोवृत्तियों का फायदा उठाकर और दूसरे गुणों को न उभरने देकर इन्हीं भावनाओं को विकसित करके" प्राप्त की गई थी। (एंगेल्स, **परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्यसत्ता की उत्पत्ति**, मार्क्स और एंगेल्स की संकलित रचनाएँ, दूसरी जिल्द मास्को १९४९, पृ. २९४)

नीच प्रकार का लालच और स्वार्थपरता ही इस 'सभ्यता' के गंदे व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य और मुख्य आधार होती है। शोषण के समाज में किसी व्यक्ति की निजी सम्पत्ति, उसकी निजी दौलत, सोना, धन, और पूँजी ही उसकी स्थिति को निर्धारित करती थीं और अब भी करती हैं और यही चीज़ें दूसरे लोगों में धन की पिपासा, लोलुपता और कंजूसी आदि की भावनाएँ पैदा करती हैं।

साहित्य में इस पुराने समाज के लोगों के चरित्र-चित्रण और व्यक्तित्व के अनेक उदाहरण मिलते हैं, ऐसे लोग जिन्होंने अपने मानव स्वरूप को खो दिया है। शेक्सपियर के **मर्चेन्ट आफ़ वेनिस** का शाइलाक; बालजाक की रचनाओं के अनेक पात्र; पुश्किन का **द कवेटस नाइट** (लोभी सूरमा); गोगोल के **इंसपेक्टर जनरल** और **डेड सोल्स** (मृत आत्माएँ) के अनेक पात्र; साल्तीकोव-श्चेद्रीन द्वारा चित्रित किया हुआ जूदास गोलोवलियोव का पात्र तथा गोर्की की रचनाओं में क्लिम सैमगिन और असंख्य दूसरे पात्र—यहाँ पर इतने ही पात्रों का उल्लेख कर देना काफ़ी होगा। नाटकों और कहानियों के इन "खल नायकों" के द्वारा इनके महान रचयिताओं ने पूँजीवादी व्यक्तिवाद और घृणित निजी सम्पत्ति के खोखलेपन और नैतिक पतन की बड़ी बेरहमी से तथा बड़े उत्साह से कलई खोली है। इस समाज ने हेरोस्ट्रैटस और नीरो, पिज़ारो और कोर्टेज, तैलीराँ और फूशे, कवाईनाक और मैलिके,

मुसोलिनी और हिटलर, गोरिंग और हिमलर ऐसे फ़शिस्ट हत्यारों, जासूसों और जल्लादों को जन्म दिया; इस समाज ने पेताँ, लवाल, क्विसलिंग, हार्थी, शीडरमैन, नास्के, टैनर आदि किस्म के देश के साथ विश्वासघात करने वालों को जन्म दिया।

"आपनो पेट हाहू, देहौं न काहू", "अंधा बाँटे रेवड़ी, अपनेन-अपनेन देय", "जिसकी लाठी उसकी भैंस"—यह है वह नैतिकता, राजनीति और दर्शन जिस पर पूँजीवादी समाज अमल करता है और जिसका पूँजीवादी समाज के महन्त प्रचार करते हैं। पूँजीवादी संस्कृति (दर्शन, साहित्य, कला), जो पतन की अवस्था में है और जिसमें से सड़ाँद आ रही है, इस बात की कोशिश करती है कि जनता मुक्ति के लिए संघर्ष करने का मार्ग छोड़ दे और इसके लिए वह राजनीति से दूर रहने, विचार-धारा और सिद्धान्तों की निरर्थकता, अधकचरेपन और पूँजीवादी अहंवाद का प्रचार करती है; पूँजीवादी संस्कृति दुस्साहसियों, बदमाशों, गद्दारों, दलालों, अपराधियों, ठगों, चोरों, और हर प्रकार के नैतिक रूप से पतित लोगों का गुणगान करती है, पुराने इतिहास से सुधार-विरोधियों को खोदकर निकालती है और इसी प्रकार की दूसरी बातें करती है।

सौ वर्ष पहले ही मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा था कि कम्युनिस्ट क्रान्ति केवल शोषक वर्गों के शासन का तख्ता उलटने और मेहनतकश जनता को शोषण से छुटकारा दिलाने के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि **जनता के बीच से पुराने समाज और पुरानी दुनिया की गंदगी को साफ़ करने के लिए भी ज़रूरी है।** अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति का इतिहास यह बताता है कि सफ़ाई की यह पेचीदा और महत्वपूर्ण क्रिया किस प्रकार एक एक कदम करके नियमानुसार, निरन्तर आगे बढ़ती रहती है; यह इतिहास हमें बताता है कि शोषकों और शोषितों के, तथा पुरानी और नई दुनिया की शक्तियों के घोर वर्ग-संघर्ष में और समाजवाद के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाइयों में किस प्रकार एक नए प्रकार के मनुष्य ने—एक नए समाजवादी व्यक्ति ने—जन्म लिया, जिसका विश्व-दृष्टिकोण बिलकुल नया था, जो एक नए नैतिक और राजनीतिक साँचे में ढला हुआ व्यक्ति था; यह इतिहास हमें बताता है कि समाजवाद की विजय के फलस्वरूप किस प्रकार सोवियत समाज की नई उत्प्रेरक शक्तियों का,—सोवियत देशभक्ति, विभिन्न राष्ट्रों के

बीच मित्रता और सोवियत जनता की कभी नष्ट न होने वाली नैतिक और राजनीतिक एकता का—विकास हुआ। **समाजवाद में व्यक्ति इसी नैतिक और राजनीतिक एकता के वातावरण में पैदा होता है, विकसित होता है और काम करता है;** उसकी इन सभी क्रियाओं पर उत्पादन के समाजवादी ढंग और सोवियत की पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का निर्णयात्मक प्रभाव होता है। वह दिन बदिन कम्युनिज़्म के महान विचारों को, कम्युनिस्ट नैतिकता को, सोवियत देशभक्ति और राष्ट्रों के बीच एकता के विचारों को तथा समाजवादी मानववाद के विचारों को अधिकाधिक अपनाता जाता है। **सोवियत व्यक्ति कभी समूह, समाज और जनता का विरोध नहीं करता।** इसके विपरीत वह सामूहिकता को वह अनन्त स्रोत समझता है जिससे वह रचानात्मक शक्ति, प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त करता है। वह सामूहिक श्रम में, नई उज्ज्वल दुनिया के लिए संघर्ष में तथा कम्युनिज़्म के लिए संघर्ष में आनन्द प्राप्त करता है।

निजी सम्पत्ति पर आधारित समाज में व्यक्ति के हित समूह, समाज और आम मेहनतकश जनता के हितों के खिलाफ़ होते हैं। निजी सम्पत्ति लोगों के हितों को विभाजित कर देती है; समाज को परस्पर विरोधी वर्गों में, शोषितों और शोषकों में, बाँट देती है, जिनके हित एक दूसरे के इतना खिलाफ़ होते हैं कि उनमें कोई समझौता संभव ही नहीं हो सकता। इस समाज में एक भी "सार्वजनिक हित" नहीं होता; हर वर्ग के अपने वर्ग-हित अलग होते हैं और शोषकों के हितों का पलड़ा भारी रहता है। व्यक्तिवाद पर आधारित "समाजवाद" का सिद्धान्त, जिसका प्रतिपादन लेबर-दल वालों ने और फेबियन सोसायटी ने किया है, प्रतिक्रियावादियों की कोरी कल्पना है, यह समाजवाद की आड़ में पूँजीवादी व्यक्तिवाद और पूँजीवादी प्रतिद्वन्दिता के सिद्धान्तों को चोरी-छुपे प्रचारित करने की कोशिश है। व्यक्तिवाद पर आधारित "समाजवाद" का अर्थ, जिसमें पूंजीपतियों का शासन और उनका सम्पत्ति और आय का अधिकार बाकी रखा जाएगा, वास्तव में यह होगा कि पूंजीपति के निजी हित हमेशा जनता के सामान्य हितों पर हावी रहेंगे। फेबियन सोसायटी और लेबर-दल वालों का "समाजवाद" पूँजीपतियों के निजी हितों को जनता के सामान्य हितों के आधीन नहीं बनाना चाहता। यह बात पूँजीपतियों के लिए पूरी तरह सुविधा-

जनक है क्योंकि वे समूह, जनता या जन-साधारण के आधीन नहीं रहना चाहते, इसके विपरीत वे हर समूह को अपनी इच्छाओं और अपने निजी हितों के आधीन रखने की कोशिश करते हैं।

सच्चे समाजवादी समाज में, जो सोवियत यूनियन में बनाया गया है, **सार्वजनिक हित ही प्रमुख और निर्णयात्मक उत्प्रेरक शक्ति है** अर्थात वहाँ समूह समाज और जनता के हितों को ही—सारी जनता के सामान्य हितों को ही—प्रधानता दी जाती है और सब निजी हित इन्हीं हितों के आधीन रखे जाते हैं। लेकिन क्यों? क्योंकि समाज की भलाई और उन्नति ही व्यक्ति की भलाई और विकास का आधार है। सोवियत यूनियन में अब वर्गों और राष्ट्रों के बीच, जनता और सामाजिक व्यवस्था के बीच, जनता और राज्यसत्ता के बीच, कोई विरोध बाकी नहीं रह गया है क्योंकि सोवियत की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था एक सच्ची लोकप्रिय व्यवस्था है, क्योंकि अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा स्वयं जनता का सत्ता पर अधिकार है। समाजवाद लोगों में फूट नहीं डालता बल्कि उनमें एका पैदा करता है। समाजवाद सबसे पहले समूह, समाज और जनता के हितों की ओर ध्यान देता है। लेकिन इसका यह मतलब हर्गिज़ नहीं है कि समाजवाद वैयक्तिक हितों की अवहेलना या तिरस्कार करता है। "समाजवाद अपने आपको वैयक्तिक हितों से अलग नहीं कर सकता। केवल सोशलिस्ट समाज ही इन वैयक्तिक हितों को पूरी तरह संतुष्ट कर सकता है। इसके अलावा, केवल समाजवाद ही इस बात की दृढ़ गारंटी दे सकता है कि व्यक्ति के हितों की रक्षा की जाएगी।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, १० वाँ संस्करण, पृष्ठ ६०२)

समाजवाद वैयक्तिक हितों को अस्वीकार नहीं करता बल्कि इन हितों में और समूह के हितों में एक संबंध, एक सहयोग स्थापित करता है। यह संबंध समाजवाद के इस मूल सिद्धान्त में व्यक्त होता है कि "हर व्यक्ति से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेना और हर व्यक्ति को उसके काम के अनुसार पारिश्रमिक देना।" वैयक्तिक और सामूहिक हितों का यह संबंध सामूहिक खेतों के नियमों में भी व्यक्त किया गया है जो "सामूहिक खेतों के किसानों के रोज़मर्रा के वैयक्तिक हितों को उनके सार्वजनिक हितों के साथ उचित रूप से संबंधित करते हैं,...रोजमर्रा के वैयक्तिक हितों को सफलता-

पूर्वक सार्वजनिक हितों के अनुकूल बनाते हैं और इस प्रकार उन किसानों में, जो कल तक अलग खेती करते थे, सामूहिकता की भावना जागृत करते हैं।"
(स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ,** मास्को १९४७, पृष्ठ ५००)

सोवियत यूनियन में व्यक्ति और समाज के बीच, वैयक्तिक और सार्वजनिक हितों के बीच, न तो कोई विरोध है और न हो सकता है। समाज की भलाई और उन्नति ही व्यक्ति की भलाई और विकास का आधार है। इसलिए **सार्वजनिक हित ही सबसे आगे रखा जाता है और उसी के आधार पर सब बातें तै की जाती हैं।** समाजवादी प्रतियोगिता में अच्छा काम करने वालों को सार्वजनिक मान्यता देने के मामले में; लोगों को पुरस्कार, पदवी और पदक देने के मामले में; कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्यसत्ता की पूरी नीति में; कम्युनिस्ट शिक्षा-प्रणाली में; लोगों को कम्युनिस्ट नैतिकता और सोवियत देशभक्ति, वीरता, राष्ट्रों के बीच मित्रता आदि के सिद्धान्तों की शिक्षा देने के मामले में इसी सिद्धान्त का पालन किया जाता है और इसी सिद्धान्त के आधार पर हर बात का फैसला होता है। **इतिहास में पहली बार** समाजवाद ने इस बात की दृढ़ और पक्की नींव डाल दी है कि वैयक्तिक और सार्वजनिक हितों में उचित रूप से सामंजस्य स्थापित किया जाय।

लेकिन ऊपर कही गई बातों का अर्थ यह हर्गिज नहीं होता कि सोशलिस्ट समाज में व्यक्ति और समाज के बीच, व्यक्ति और समूह के बीच, वैयक्तिक और सार्वजनिक हितों के बीच अब कभी कोई विरोध हो ही नहीं सकता। इस प्रकार के विरोध होते हैं। समाजवाद में संस्कृत जनता की बढ़ी हुई और तेजी से बढ़ती हुई मांगों तथा उत्पादन के विकास के स्तर के बीच अब भी विरोध बाकी है इसके फलस्वरूप सब लोगों की सब मांगों को पूरी तरह संतुष्ट करना असंभव है। इसलिए इस सिद्धान्त को लागू करना आवश्यक हो गया है कि हर व्यक्ति को उसके काम की मात्रा और गुण के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाए। अभी कुशल (स्किल्ड) और साधारण (अन-स्किल्ड) काम के लिए दी जाने वाली मजदूरी में भी अन्तर है। मेहनतकश जनता के विभिन्न समूहों की (कम तनखा पाने वाले और ज्यादा तनखा पाने वाले समूह) भौतिक आवश्यकताओं और हितों को संतुष्ट करने के मामले में भी कुछ असामनता बाकी है। रहन-सहन की परिस्थितियों में भी अभी कुछ असमानता बाकी है क्योंकि शहर और गांव के जीवन में

और मानसिक श्रम करने वालों और शारीरिक मेहनत करने वालों में अब भी अन्तर बाकी है, वह पूरी तरह मिटा नहीं है। (यह बात भी ध्यान में रखना चाहिये कि युद्ध ने देश में बहुत बड़ी तबाही पैदा कर दी जिसके कारण उन इलाकों में, जिन पर कुछ समय के लिए शत्रु का कब्जा हो गया था, लाखों परिवारों के घर तबाह हो गए और उनकी सारी चीजें उनसे छिन गईं और सारे देश को इस तबाही से बहुत नुकसान हुआ।) मजदूर वर्ग में, किसानों में और बुद्धिजीवियों में अब भी राजनीतिक और आर्थिक विरोधों के कुछ अवशेष बाक़ी हैं लेकिन यह विरोध लगातार कम होते जा रहे हैं और धीरे धीरे मिटते जा रहे हैं। ये विरोध अस्थायी प्रकार के हैं और इन विरोधों की अपेक्षा तमाम मेहनतकश जनता के हितों में इतनी अधिक समानता है कि वह इन विरोधों का प्रभाव खत्म कर देती है। व्यक्ति और समाज के बीच कुछ अस्थायी प्रकार के विरोध होना तो अनिवार्य है लेकिन इन विरोधों पर पूरी तरह काबू पाया जा सकता है और उनको दूर किया जा सकता है।

इसके अलावा लोगों के दिमाग में और उनके रोजमर्रा के जीवन में पूँजीवाद के कुछ अवशेष अब भी पाए जाते हैं। जैसे, परम्पराएँ और आदतें; निजी सम्पत्ति से पैदा होने वाले अवशेष; काम और सम्पत्ति के प्रति पुराने रवैये के अवशेष; पहले के छोटे-छोटे मालिकों, अलग खेती करने वाले किसानों और बुद्धिजीवियों के दिमाग में पूँजीवादी व्यक्तिवाद के अवशेष। इसके अलावा पश्चिमी देशों की पूंजीवादी संस्कृति के और पुराने ज़माने की पूँजीवादी-जमींदारी संस्कृति के गुण गाने की प्रवृत्ति; निजी सम्पत्ति तथा पूँजीवादी विचार-धारा, दर्शन, और नैतिकता के अवशेष; राष्ट्रवाद, नौकरशाही, धार्मिक भावनाओं और अन्धविश्वास आदि के अवशेष अभी तक थोड़ा-बहुत बाकी हैं। ये सब चीजें समाजवादी व्यवस्था के बिल्कुल खिलाफ़ पड़ती हैं और समाजवादी व्यवस्था के साथ उनका कोई समझौता नहीं हो सकता। इसलिए उन पर पूरी तरह काबू पाना होगा। वैयक्तिक और सार्वजनिक मामलों के बीच तथा समाज और व्यक्ति के बीच जितने विरोध पैदा होते हैं उनमें से अधिकांश इन्हीं अवशेषों के कारण पैदा होते हैं। इसीलिए कई मौकों पर ऐसा होता है कि पिछड़े हुए मजदूर, सामूहिक खेतों के किसान और बुद्धिजीवी अपने संकीर्ण निजी हितों को सार्वजनिक हितों के खिलाफ़,

राज्यसत्ता के हितों के खिलाफ़, खड़ा कर देते हैं। ऐसे मजदूरों, सामूहिक खेतों के किसानों और दफ्तर के कर्मचारियों के उदाहरण भी मिलते हैं जो अपनी पूरी योग्यता के अनुसार काम नहीं करते या खराब काम करते हैं। सामूहिक खेतों के कुछ किसान अपने निजी पशुओं की संख्या जरूरत से ज्यादा बढ़ा लेते हैं और अपना अधिकांश समय उन्हीं पर खर्च करते हैं और सामूहिक खेत के काम से जी चुराकर अपने निजी उत्पादन को बाज़ार में बेचने की योजनाएँ बनाने में अपना समय खर्च करते हैं। या सरकारी दफ्तरों के उन कर्मचारियों का उदाहरण ले लीजिए जो अपने पद का फायदा उठाकर, पूरे देश के हितों को तिलांजलि देकर अपने लिए एक "सुखमय जीवन" बना लेते हैं और ऊपर से राज्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी अच्छी तरह पूरा नहीं करते और उनको उस जनता के हितों की कोई चिन्ता नहीं होती जिसकी वे सेवा करते हैं। या यूनिवर्सिटियों के उन विद्यार्थियों का उदाहरण ले लीजिए जो अपने निजी कारणों की वजह से उन इलाकों में काम करने से इन्कार कर देते हैं जहाँ उनको अपना काम शुरू करने के लिए भेजा जाता है। इस प्रकार वे अपने निजी हितों को सार्वजनिक हितों की अपेक्षा, समाज, राज्यसत्ता और देश के हितों की अपेक्षा ज्यादा महत्व देते हैं—उनके हितों के खिलाफ़ जिन्होंने उनके लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना संभव बनाया। या उन वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं को ले लीजिए जो ऐसी जरूरी समस्याओं को हाथ लगाने से इन्कार करते हैं जिनका हल करना बहुत आवश्यक होता है, या कठिन समस्याओं से दूर भागते हैं और इन समस्याओं से कतराकर "अपेक्षतः आसान" और दूर की समस्याओं को हल करना ज्यादा पसंद करते हैं। या उन लोगों को ले लीजिए जे नौजवान कार्यकर्ताओं को शिक्षा देने से इंकार करते हैं जिनकी देश को बहुत जरूरत है। इसी प्रकार के और भी कई उदाहरण मिल सकते हैं।

विदेशी चीजों का, और विशेष रूप से पश्चिमी देशों की पूँजीवादी संस्कृति का, गुणगान करना, उनकी प्रशंसा करना और उनके आगे नाक रगड़ना विशेष रूप से हानिकारक है। यह पुराने पूंजीवादी–जमींदारी रूस की देन है जो हमारे बुद्धिजीवियों के एक भाग पर अभी तक हावी है।

यहाँ पर हम पूंजीवादी "परम्पराओं" के ऐसे प्रचारकों का उल्लेख नहीं करेंगे जो मुफ़्तखोर, काहिल और हरामखोर होते हैं जो दूसरों की कमाई

पर पलने के आदी होते हैं और अपनी जिम्मेदारी हमेशा दूसरों के सर थोप देते हैं; हम यहाँ रिश्वतखोरों और गबन करने वालों और इसी प्रकार के दूसरे लोगों का जिक्र नहीं करेंगे।

इस बात के उदाहरण भी मिल जायेंगे जब ईमानदार और निःस्वार्थ मेहनतकशों के उचित निजी हितों की अवहेलना की जाती है, जब कुछ संस्थाओं और कारखानों के मैनेजर अपने कारखाने या दफ्तर के कर्मचारियों की निजी सुविधाओं की ओर ध्यान नहीं देते या इन सुविधाओं का उचित प्रबंध नहीं करते; मजदूरों को ठीक ढंग से नहीं चुनते और उनको उचित काम नहीं सौंपते; उनके आध्यात्मिक विकास और उनकी योग्यता को बढ़ाने की ओर ध्यान नहीं देते। ऐसी दशा में नौकरशाही, पदलोलुपता और भ्रष्टाचार आदि के अवशेष अक्सर पाए जाते हैं। पार्टी, सोवियत राज्य और समस्त जनता कम्युनिज़्म के निर्माण के दौरान में जनता को बारबार शिक्षा देकर इस प्रकार के पूँजीवादी अवशेषों और उनके प्रचारकों के खिलाफ़ लड़ती है। कम्युनिस्ट निर्माण-कार्य और शिक्षण में बाल्शेविक समालोचना और आत्म-आलोचना का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन प्रयोग किया जाता है। पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को शिक्षा देने का यह ढंग, जिसे लेनिन और स्तालिन ने पार्टी को मजबूत बनाने के ढंग के रूप में प्रतिपादित किया था, हमारे सोवियत राज्य के विकास और उन्नति का मूल आधार बन गया है, हमारे समाज के विकास का नियम बन गया है।

"हमारे सोवियत समाज में, जहाँ परस्पर विरोधी वर्गों को खत्म कर दिया गया है, नए और पुराने का संघर्ष और फलस्वरूप निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर विकास की क्रिया, परस्पर विरोधी वर्गों के संघर्ष और महाविनाशकारी दुर्घटनाओं के रूप में नहीं होती—जैसा कि पूँजीवाद में होता है—बल्कि समालोचना और आत्म-आलोचना के रूप में होती है जो हमारे विकास की वास्तविक उत्प्रेरक शक्तियाँ हैं, जो पार्टी के हाथों में शक्तिशाली हथियार हैं। यह गति का एक बिल्कुल नया रूप है, एक नए प्रकार का विकास है, द्वन्द्ववाद का नया नियम है।" (जी० एफ० एलेक्जेन्ड्रोव की पुस्तक पर बहस के दौरान में ए० ए० ज्दानोव का भाषण, रूसी संस्करण, पृष्ठ ४०)

समालोचना और आत्म-आलोचना के बिना कोई व्यक्ति पुराने समाज की गंदगी को अपने अंदर से दूर नहीं कर सकता; मनुष्य के विचारों में और

उसके रोजमर्रा के जीवन में पूँजीवाद के अवशेषों पर काबू नहीं पा सकता; पूँजीवादी विचारों और नैतिकता को परास्त नहीं कर सकता और हमारे महान युग के—लेनिन और स्तालिन के युग के—योग्य नहीं बन सकता।

समालोचना और आत्म-आलोचना के बिना मनुष्य का मानसिक विकास रुक जाता है, वह अपनी वर्तमान सफलताओं पर ही संतोष करने लगता है, प्रगति की आम तेज रफ्तार से पिछड़ जाता है और पतित होकर निम्न-पूंजीवादी विचारों वाला अधकचरा बन जाता है। समालोचना और आत्म-आलोचना के बिना कोई प्रगति संभव नहीं है। काम में गल्तियों और कमजोरियों की ईमानदार, सिद्धान्त पर आधारित और तीव्र बाल्शेविक समालोचना और आत्म-आलोचना नए, सोवियत व्यक्ति का स्थायी और आवश्यक गुण है जो दूसरों में नहीं पाया जाता।

नैतिक और राजनीतिक रूप से सोवियत जनता पुरानी दुनिया की जनता की अपेक्षा बहुत ही उच्च कोटि की जनता है। कामरेड स्तालिन ने कहा है कि सोवियत का छोटे से छोटा नागरिक भी पूँजी के बंधन से मुक्त होकर "विदेशों के किसी उच्च से उच्च पदाधिकारी से, जिसकी गरदन पर पूंजीवादी गुलामी का जुआ रखा हुआ है, कई दर्जा ऊंचा होता है।" (स्तालिन, **लेनिनवाद की समस्याएँ**, मास्को १९४७, पृष्ठ ६२२)

पूंजीवादी संस्कृति (साहित्य, कला) बाहर से चाहे कितने ही सुन्दर वस्त्रों में सजी हुई क्यों न हो, लेकिन उसकी नैतिक बुनियाद सड़ी हुई है। यह संस्कृति लोगों को भ्रष्ट बनाती है; मनुष्य की क्रूर और पाशविक भावनाओं को जागृत करती है क्योंकि यह संस्कृति शोषकों के स्वार्थपूर्ण, आत्म-परायण हितों की सेवा करती है। सड़ती हुई विदेशी पूंजीवादी संस्कृति की उपासना करना सोवियत जनता को शोभा नहीं देता क्योंकि हमारी समाजवादी संस्कृति पूंजीवादी संस्कृति की अपेक्षा असंख्य गुना अच्छी संस्कृति है। हमारी व्यवस्था जनता को वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के महान विचारों, सच्ची मानवता, सच्चे मानववाद, सोवियत देशभक्ति और विभिन्न देशों की जनता के बीच मित्रता की भावना के रंग में रँग देती है। वह मनुष्य की तमाम नीच, पाशविक और क्रूर भावनाओं को कुचल देती है। जैसा कि **ज्वेज्दा** और **लेनिनग्राद** नामक पत्रिकाओं के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कामरेड ज्दानोव

ने बताया था, हमारे देश को अधिकार है कि वह दूसरों को अपनी नई नैतिकता सिखाए—ऐसी नैतिकता जो समस्त मानव-जाति के लिए उचित है।

"हमारे राष्ट्र का ऐसा, हमारे देश का ऐसा, दूसरा राष्ट्र या देश आपको कहाँ मिलेगा? आपको ऐसी जनता कहां मिलेगी जिसमें वह शानदार गुण पाए जाते हों जिनका परिचय सोवियत जनता ने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान में दिया था और जिनका परिचय वह आज भी अपने काम में प्रतिदिन दे रही है जबकि उसके अर्थ-तंत्र और उसकी संस्कृति का पुनर्स्थापन हो चुका है और वह शान्तिपूर्ण विकास की मंजिल में पहुँच गई है। प्रतिदिन हमारी जनता का स्तर ऊंचा होता जा रहा है।" (ए. ए. ज़्दानोव "ज़्वेज़्दा" और "लेनिनग्राद" नामक पत्रिकाओं पर रिपोर्ट, रूसी संस्करण, पृष्ठ २६)

किसी दूसरे देश में जनता इतनी आजाद, राजनीतिक रूप से इतनी सजग, इतनी संगठित और वीरतापूर्ण नहीं है जितनी कि बहु-राष्ट्रीय सोवियत जनता है जिसने सबसे पहले समाजवाद के पथ पर क़दम रखा। हमारी सोवियत जनता ने दुनिया को फाशिस्ट हत्यारों से और कत्ले-आम करने वालों से बचा लिया। केवल स्वतंत्र रूसी जनता ही, इतिहास की दृष्टि से इतने कम समय में, सीधे-सादे मजदूरों और किसानों के बीच से इतनी बड़ी संख्या में योग्य मर्दों और औरतों को जन्म दे सकती थी। उसने सुविख्यात संगठनकर्त्ता, वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्त्ता, लेखक, कलाकार, गवैये, अभिनेता, संगीत रचयिता, भवन-निर्माता, इंजीनियर, अफसर, फौज के जनरल और मार्शल, राजनीतिज्ञ और मंत्री पैदा किए। जनता के बीच से इतने बड़े पैमाने पर कुशल लोगों के पैदा होने का प्रमाण स्तालिन पुरस्कार विजेताओं की तेज़ी से बढ़ती हुई संख्या में; रूसी सोवियत प्रजातंत्रों के कला-उत्सवों में; जन-कला और अवैतनिक कलाकारों की कला की प्रदर्शनियों में; शतरंज के टूर्नामेन्टों में; स्वास्थ और व्यायाम परेडों और खेल-कूद की प्रतियोगिताओं में; अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सोवियत कला और खेल-कूद की सफलताओं में और विदेशों को भेजे जानेवाले हमारे सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मंडलों को प्राप्त होनेवाली सफलताओं आदि में मिलता है।

विज्ञान और साहित्य की सफलताओं पर और सोवियत की समाजवादी संस्कृति के प्रमुख व्यक्तियों पर, सोवियत जनता का गर्व करना बिल्कुल न्याय-संगत है। अकेडेमीशियन ईवान पावलोव की विद्वतापूर्ण रचनाएं, जिन्होंने परिस्थिति-जनित व्यवहार (Conditioned reflex) के

सिद्धान्त का प्रतिपादन किया; जूकोवस्की, चैपलीगिन और सियोल्कोवस्की की आधुनिक वायुयान-शास्त्र की यंत्र-विद्या और वायु-गतिविद्या संबंधी रचनाएं; अकेडेमिशियन कुर्नाकोव की रचनाएँ जिन्होंने रसायन-शास्त्र की एक नई शाखा की, भौतिक-रासायनिक विश्लेषण की, नींव डाली; अकेडेमीशियन फावरोस्की और जेलिन्सकी और उनके अनुयायियों की समन्वय और नए जैव संयोजनों के सिद्धान्त से संबंध रखने वाली रचनाएँ; अकेडेमीशियन गुबकिन की भूतत्व-विद्या पर, अकेडेमीशियन वर्नादस्की की भूतत्व-रसायनशास्त्र पर और अकेडेमीशियन बाच की आधुनिक प्राणी-रसायनशास्त्र पर रचनाएँ; तिमिरियाजेव, मिचुरिन, विलियम्स, प्रयानिशनिकोव और लाइसेन्को की रचनाओं में कृषि-शास्त्र और भूमि-विज्ञान के क्षेत्र में अपूर्व सफलताएँ; प्रकाश-विज्ञान पर अकेडेमीशियन वीगोमादोव की और भाषा शास्त्र पर एन. वाई. मार और उनके अनुयायियों की रचनाएँ, तथा अकेडेमीशियन प्रेकोव और दूसरे सोवियत वैज्ञानिकों की रचनाएँ—इन सबने सोवियत के और दुनिया के विज्ञान के अमूल्य भंडार में बहुत बड़ा योग दिया है।

इसी प्रकार, सोवियत साहित्य के जन्मदाता, महान सर्वहारा लेखक मैक्सिम गोर्की की साहित्यिक रचनाएँ; हमारे युग के सबसे प्रमुख कवि मायाकावस्की की रचनाएँ; सेराफिमोविच, फुरमानोव, आस्त्रोवस्की, फैदीयीव, शोलोखोव, लियोनोव, सिमोनोव, सोबेलीव, कार्नीचुक, ताईचीना, कोलास, गोर्बातोव, कतायीव, सुरकोव, ईसाकावस्की, त्वार्दोवस्की, फेदीन, सर्जीयीव-जेनस्की, पान-फ्योरोव, ग्लैडकोव, इनबर, कारावायोवा, शागिनयान और कई दूसरे लेखकों की रचनाओं ने केवल सोवियत साहित्य के खज़ाने में ही नहीं बल्कि विश्व-साहित्य के खज़ाने में भी बहुत वृद्धि की है। यह लेखक नई सोवियत जनता का, साहसी और उच्च-विचारों वाले लोगों का, विलक्षण गुणों और कुशलताओं वाले लोगों का, लेनिन और स्तालिन की पार्टी द्वारा विकसित किए गए लोगों का चरित्र-चित्रण करते हैं। सोवियत कला, चित्रकला, भवन-निर्माण कला, संगीत और नाट्य कला की महान विभूतियों का नाम जोड़कर इस सूची को और भी बड़ा किया जा सकता है। ये सब बातें समाजवाद के देश में कौशल की वास्तविक महान उन्नति का सबूत है।

सोवियत शासन के वर्षों में हमारे देश के करोड़ों लोगों के

सामाजिक स्वभाव में, उनके नैतिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक स्वरूप में, एक बुनियादी परिवर्तन आ गया है।

लेनिन और स्तालिन ने बताया है कि हमें समाजवाद के निर्माण का काम उस सामग्री के आधार पर शुरू करना पड़ा जो पूँजीवाद ने हमारे लिए छोड़ी थी; हमें समाजवाद के निर्माण का काम उन लोगों के आधार पर और उन लोगों की मेहनत के द्वारा करना पड़ा जो पूँजीवाद में पले-बढ़े थे, जिनको पूँजीवाद ने शिक्षा दी थी, खराब किया था और भ्रष्ट बनाया था; लेकिन इसके साथ ही ये लोग पूँजीवादी व्यवस्था में होने वाले दमन और शोषण के खिलाफ़ संघर्ष की आग में तपकर निकले थे। समाजवाद का निर्माण ऐसे लोगों के निर्मल हाथों के द्वारा नहीं हुआ जो कहीं और पहले से तैयार किए गए रहे हों, जिनको पूँजीवाद ने खराब न किया रहा हो, जो विशेष शीशे के मकानों में सावधानी से सुरक्षित रखे गए रहे हों, यद्यपि कुछ काल्पनिक समाजवादियों की धारणा थी कि समाजवाद का निर्माण इसी प्रकार होगा। हमने समाजवाद के निर्माण का काम सर्वहारा वर्ग की शक्ति के आधार पर शुरू किया, जिसको बड़े पूँजीपतियों और निम्न-पूँजीपतियों के प्रभाव से सुरक्षित रखने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी और जो पूँजीवादी व्यवस्था की जंगल जैसी अराजकता में रह चुके थे। लेकिन पार्टी के नेतृत्व में क्रान्तिकारी संघर्षों की आग में तपकर सर्वहारा वर्ग इतना फौलादी बन चुका था कि वह पुराने समाज की अनुभवी से अनुभवी सेना की अपेक्षा हजार गुनी ज्यादा तकलीफ़ें सहन कर सकता था। मजदूर वर्ग को समाजवाद के निर्माण के काम में करोड़ों अज्ञान, अनपढ़, शोषित और इधर-उधर बिखरे हुए किसानों को और जमीन के छोटे-छोटे मालिकों को लाना पड़ा जो ग्रामीण जीवन के मूर्खतापूर्ण वातावरण में और जमींदारों, अमीर किसानों, पादरियों और पुलिसवालों के चंगुल में फँसे हुये थे। लेनिन और स्तालिन ने कहा है कि इन करोड़ों मेहनतकश लोगों को समाजवाद के निर्माण के काम में लगाना, उनको उनकी निजी सम्पत्ति से अलग करना, समाजवादी क्रान्ति का एक अत्यंत कठिन काम है, लेकिन मजदूर वर्ग इस काम को पूरा करने की क्षमता रखता है क्योंकि यदि मजदूर वर्ग सही कार्यनीति अपनाए तो किसान वर्ग उसके साथ और उसके नेतृत्व में समाजवाद का निर्माण कर सकता है। इसी प्रकार लेनिन और स्तालिन ने हमें यह भी बताया है कि मजदूर वर्ग

को समाजवाद के निर्माण का काम पूँजीवादी विशेषज्ञों की सहायता से शुरू करना पड़ा, जिनके विचारों पर पूँजीवादी दृष्टिकोण छाया रहता है, जो पूँजीवादी आदतों, परम्पराओं और पूँजीवादी व्यक्तिवाद के रंग में रँगे होते हैं। मजदूर वर्ग को अपनी सेना उन फौजी विशेषज्ञों की सहायता से बनानी पड़ी, जिन्होंने पूँजीवादी-जमीदारी व्यवस्था में शिक्षा पाई थी, और ऐसे समय में बनानी पड़ी जबकि कम्मी प्रथा (दास प्रथा) के दिनों का डंडे के जोर वाला तरीक़ा अब भी प्रचलित था और मेहनतकश जनता पर इसका प्रहार जारी था। उस समय मजदूर वर्ग के अपने बुद्धिजीवी न थे और न हो सकते थे।

पूंजीवाद के अवगुणों से मुक्त नई पीढ़ी केवल पुराने सड़ते हुए पूँजीवादी समाज की शक्तियों और परम्पराओं के खिलाफ़ एक लम्बे, कठिन और विपदामय संघर्ष के दौरान में ही उभर सकती थी—और वास्तव में उभरी भी—और फौलादी बन सकती थी। अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति के बाद सोवियत शासन में एक बिल्कुल ही **नयी पीढ़ी** ने जन्म लिया जो अपने "उकाबी परों को पूरी तरह फैलाना" शुरू कर रही है, जैसा कि कामरेड मोलोतोव ने हमारी क्रान्ति की विजयों और सफलताओं का सिंहालोकन करते हुए कहा था। सोवियत देशभक्ति के रूप में सोवियत जनता के नये मानसिक ढाचे और विचार-धारा संबंधी विकास को कामरेड मोलोतोव ने हमारी क्रान्ति की महानतम सफलताओं में से एक बताया है, इसे विश्व-ऐतिहासिक महत्व की सफलता बताया है।

सोवियत जनता का नया मानसिक रूप उसके कामों में और उसकी साहसपूर्ण सफलताओं में स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है।

दूसरे महायुद्ध के दौरान में सोवियत जनता ने युद्ध के मोर्चों से दूर अपने देश में जिस निस्स्वार्थ, रचनात्मक और उत्साहपूर्ण श्रम का परिचय दिया और युद्ध के मोर्चों पर जो वीरता दिखाई उसका इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। यह वीरता सोवियत देशभक्ति का ही प्रदर्शन था और इसी ने मानवता के सबसे बड़े दुश्मन के खिलाफ़ विजय को निश्चित बनाया। सोवियत देशभक्ति की वर्तमान नई लहर सोवियत जनता के उच्चतर मानसिक और आध्यात्मिक स्तर को व्यक्त करती है। हमारे देश की मेहनतकश जनता का सांस्कृतिक स्तर पिछले तीस वर्षों में, और विशेष

रूप से समाजवाद की विजय के बाद, हर क्षेत्र में लगातार ऊँचा होता गया है। सोवियत व्यक्ति की उच्च समाजवादी संस्कृति और राजनीतिक सजगता का प्रमाण काम के प्रति उसके इस रवैये में मिलता है कि वह अपने काम को एक सार्वजनिक काम और सोवियत राज्यसत्ता तथा अपनी समाजवादी मातृभूमि और सोवियत जनता के प्रति एक पवित्र कर्त्तव्य समझता है।

करोड़ों मजदूर और सामूहिक खेतों के किसान आज इस काम में जुटे हुए हैं कि अपने समाजवादी देश की सम्पदा को बढ़ाया जाए; श्रम की उत्पादन शक्ति को बढ़ाया जाए; उत्पादन की क्रिया को ज्यादा से ज्यादा हद तक मशीनों के द्वारा किया जाए और काम के तरीक़े में सुधार किया जाए; औजारों, मशीनों और काम के तरीकों को श्रेष्ठतम बनाया जाए; नए नए तरीकों का प्रयोग किया जाए और उनमें निपुणता हासिल की जाए; उत्पादन प्रणाली को सुधारकर अन्तहीन कन्वेयर बेल्ट की प्रणाली लागू की जाए; आटोमेटिक (अपने आप चलने वाली) मशीनों का प्रयोग बढ़ाया जाए; और साइंस की नवीनतम खोजों का उद्योगों में और कृषि में प्रयोग किया जाए।

काम के दौरान में और रोज़मर्रा के जीवन में समाजवादी संस्कृति के स्तर को ऊंचा उठाने का संघर्ष लगातार तेज़ होता जा रहा है। स्ताखनोव आन्दोलन अब आम मेहनतकश जनता में प्रवेश कर चुका है और वास्तव में एक जन-आन्दोलन बन चुका है। यह आन्दोलन इंजीनियरों और टेकनीशियनों के बीच प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करता है; काम को संगठित करने के तरीक़ों और रूपों में लगातार नए और अच्छे सुधार करता है और आधुनिक विज्ञान और मशीन-विद्या की सफलताओं को प्रयोग करता है। १९४० के शुरू में कुल औद्योगिक मजदूरों में से एक चौथाई, मकान बनाने वाले मजदूरों में से एक तिहाई और यातायात साधनों में काम करने वाले मजदूरों में से ४० फी सदी स्ताखनोवाइत मजदूर थे। अब पूरे पूरे खाते और फैक्ट्रियाँ स्ताखनोवाइत बनती जा रही हैं। इस प्रकार, उदाहरण के तौर पर, मास्को के कगानोविच स्टेट बाल-बियरिंग प्लांट के ९२ फी सदी मजदूर स्ताखनोवाइत हैं।

स्ताखनोवाइत मजदूर—उत्पादन-पद्धति में नए तरीकों का सुझाव रखने वाले, मशीन-संबंधी सुधार के लिए लड़नेवाले—हर उस इंजीनियर और

टेकनीशियन के साथ टोली बनाकर काम करते हैं जो अपने काम में अपनी रचनात्मक बुद्धि का प्रयोग करता है। इसका अर्थ यह है कि साइंस दिन बदिन बढ़ती हुई मात्रा में उत्पादन-क्रिया का अभिन्न अंग बनती जा रही है और वह एक ऐसी महान परिवर्तनकारी शक्ति का काम कर रही है जो स्वयं मेहनतकश जनता के हितों के लिए इस्तेमाल होती है। इस क्रिया के दौरान में शारीरिक आर मानसिक श्रम का अन्तर मिटता जा रहा है। पूँजीवादी समाज में परिस्थिति इससे कितनी भिन्न है—पूँजीवादी समाज में सारे ज्ञान, साइंस और संस्कृति को मुट्ठी भर शोषकों और उनके पिट्ठुओं की बपौती बनाकर रखने की कोशिश की जाती है; इस समाज में " साइंस के महन्तों " और " देवतुल्य मनुष्यों " का एक शासक समूह बनाने की कोशिश जाती है; एक ओर " बुद्धि के इजारेदारों " के और दूसरी तरफ़ गुलामों के समूह बनाने की कोशिश की जानी है—गुलाम मेहनतकश होते हैं जिनको " यंत्र की तरह " काम करने की शिक्षा दी जाती है, जिनको शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता है, जिनको सोचने और अपने विचार तथा अपनी इच्छा तक प्रकट करने का अधिकार नहीं होता है। समाजवाद के देश सोवियत यूनियन में मानसिक श्रम अब समाज के एक विशेष अंग की सम्पत्ति और बपौती नहीं रह गया है। हमारे देश में शारीरिक श्रम करनेवाले लोगों को सर्वमुखी शिक्षा और विकास के लिए, अपने रचनात्मक विचारों को व्यक्त करने के लिए, अर्थात् भौतिक उत्पादन की क्रिया के दौरान में ही शारीरिक और मानसिक काम में संतुलन कायम करने के लिए काफी मौका मिलता है। यही कारण है कि मेहनतकश जनता में वास्तविक रचनात्मक ढंग से सोचने की प्रवृत्ति अधिकाधिक बढ़ती जा रही है, यह प्रवृत्ति उनको प्रेरणा प्रदान करती है, उनके उत्साह को बढ़ाती हैं, और उनकी तमाम मानसिक शक्तियों, उनकी क्षमताओं तथा उनके कौशल को अपूर्व ढंग से विकसित करती है।

आज कम्युनिज़्म का निर्माण हमारे देश की जनता में रचनात्मक कार्य में लीन रहने की और समाजवादी मातृभूमि की समृद्धि को बढ़ाने के संघर्ष में वीरतापूर्वक भाग लेने की प्रेरणा भर रहा है।

लेनिन के वीर नगर (लेनिन ग्राद) के मेहनतकशों की पहलकदमी पर सारे देश भर में पंचवर्षीय योजना को चार वर्षों में पूरा करने की होड़ चल

रही है। मास्को में, लेनिनग्राद में, डानबास क्षेत्र में, यूराल के इलाके में, सारे देश में, एक नया आन्दोलन फैल रहा है जिसमें मजदूर वार्षिक योजना को और पंचवर्षीय योजना को समय से पहले पूरा करने की **व्यक्तिगत जिम्मेदारी** ले रहे हैं। युद्ध से पहले यह चीज देखने में नहीं आयी थी। यह सोवियत देशभक्ति की, सोवियत रवैये की, व्यक्तिगत पहलकदमी की, अपनी प्यारी समाजवादी मातृभूमि के भविष्य के प्रति करोड़ों सोवियत जनता की व्यक्तिगत जिम्मेदारी की एक नई लहर का प्रमाण है।

हमारे प्रमुखतम नागरिक—स्ताखनोवाइत, समाजवादी श्रम के वीर, सोवियत यूनियन के वीर, निर्भीक सोवियत मल्लाह, ध्रुव प्रदेशों का भ्रमण करने वाले, चेल्यूस्कीन और पापानीन के अनुयायी, हमारे वीर उड़ाके, स्तालिनी हवाबाज, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर और वीरांगनाएँ, मास्को सेवास्तोपोल, ओडेसा, स्तालिनग्राद, और लेनिनग्राद की रक्षा में हिस्सा लेने वाले वीर—ये सभी हमारे देश का गौरव हैं। इसी प्रकार सोवियत नारियाँ, सोवियत युवक, लेनिन कामसोमोल (युवक कम्युनिस्ट लीग), लेनिन और स्तालिन की परम्पराओं में पले हुए युवक—जिनमें से ज़ोया, लीज़ा चाईकीना, मारिया मेलनीकाटे, क्रासनोडोन के वीर और वीरांगनाएँ और सोवियत यूनियन के हजारों दूसरे वीर और वीरांगनाएँ पैदा हुई—हमारे देश का गौरव हैं। ऐसे लोग केवल हमारे समाजवादी देश, हमारी सोवियत व्यवस्था, और हमारी गौरवशाली वीर पार्टी के द्वारा ही—लेनिन और स्तालिन की पार्टी के द्वारा ही—पैदा किए जा सकते थे, केवल उस पार्टी के द्वारा पैदा किए जा सकते थे जिसने असंख्य तूफ़ानों और क्रान्ति की कठिनाइयों में सोवियत राज्य की नौका का सफल संचालन किया है। अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति के बाद के तीस वर्षों में हमारे देश के करोड़ों लोगों ने बहुत बड़ा अनुभव—एक नए संसार को निर्माण करके और स्वयं जनता को नए रूप में ढालने का अनुभव—प्राप्त किया है। इन वर्षों में हमारे देश की जनता में एक मूल परिवर्तन आ गया है।

अब हमारी दशा वह नहीं रही जो १९१७ में थी और न हमारा स्वरूप ही वह रहा है।

"उन महान परिवर्तनों के साथ-साथ, जिन्होंने हमारे देश के रूप को बुनियादी तौर पर बदल दिया है, हम भी बदले हैं और हमने परिपक्वता

प्राप्त की है।" (ए. ए ज़्दानोव, "ज़्वेज़्दा" और "लेनिन ग्राद" नामक पत्रिकाओं पर रिपोर्ट, रूसी संस्करण, पृष्ट ३६।) लेकिन विचार-धारा के क्षेत्र में काम करनेवाले कुछ कार्यकर्ताओं ने सोवियत जनता के इस अपूर्व मानसिक विकास को नहीं देखा। वे सोवियत जनता को उसी रूप में या प्रायः उसी रूप में, पेश करते रहे जैसा कि वे क्रान्ति के फ़ौरन बाद के वर्षों में या क्रान्ति से पहले पेश करते थे। वे सोवियत जनता को राजनीतिक सांस्कृतिक और टेक्निकल दृष्टि से पिछड़ा हुआ ही समझते रहे। (देखिए, "ए ग्रेट लाइफ़" नामक फिल्म के दूसरे भाग के बारे में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय कमिटी का फैसला।)

इसका नतीजा यह हुआ कि सोवियत जनता को उसके क्रान्तिकारी विकास की पृष्ठभूमि में नहीं बल्कि स्थिर रूप में पेश किया गया। इसके फल-स्वरूप सोवियत मनुष्य के आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन को और साहित्य और कला की विचार-धारा संबंधी विषयवस्तु को भी नुक़सान पहुँचा। साहित्य और कला के बारे में अपने फैसलों में सोवियत की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने बताया कि सोवियत साहित्य और कला का काम केवल यह नहीं है कि वह सोवियत मनुष्य को उसके **वर्तमान रूप में** पेश करे बल्कि उसके **भविष्य** पर भी एक दृष्टि डाले, ताकि यह दिखा सके कि जनता कल को क्या बन जाएगी और उसे क्या नहीं बनना चाहिए; हमारे लेखकों को अतीत की उन परम्पराओं को मिटा देना चाहिए जो सोवियत मनुष्य की प्रगति में बाधा डालती हैं।

यह सोवियत लेखकों का, "मानव आत्मा के निर्माताओं" का, कर्त्तव्य है कि वे सोवियत जनता की, पार्टी की और शासन सत्ता की इस बारे में सहायता करें कि सोवियत के जन साधारण में, और विशेष रूप से सोवियत युवकों में, उच्च आदर्श जागृत हों, वे प्रसन्नचित्त रहना सीखें, उन्हें अपनी शक्ति पर विश्वास हो, उनमें अपने देश और अपनी जनता के प्रति लगन हो और वे कठिनाइयों के सम्मुख निडर रहें। सोवियत लेखकों का कर्तव्य है कि वे अपने देश की जनता को कम्युनिज़्म के उच्च आदर्शों के अनुसार, सोवियत देशभक्ति, विभिन्न राष्ट्रों के बीच मित्रता की भावना और सोवियत के राष्ट्रीय गर्व की भावना के अनुसार, विकसित करें।

हमारी सफलताएँ बहुत महान हैं लेकिन सोशलिज्म से कम्युनिज़्म में प्रवेश करने के लिए **मेहनतकश जनता के पूरे समूह** के सांस्कृतिक स्तर को और भी ऊंचा करने की जरूरत है। इसलिए सोवियत जनता की आध्यात्मिक सम्पदा का महत्व उसकी भौतिक सम्पदा से किसी प्रकार कम नहीं है। इसलिए हमारी भौतिक सम्पदा के साथ साथ उसी मात्रा में हमारी **आध्यात्मिक संस्कृति का भी बाहुल्य** होना चाहिए।

विचार--धारा के क्षेत्र की समस्याओं के बारे में सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के फैसलों में आध्यात्मिक संस्कृति के बाहुल्य को प्राप्त करने, और सोवियत जनता की बढ़ती हुई मांगों तथा कम्युनिस्ट समाज के निर्माण से संबधित कामों को पूरा करने के लिए इस संस्कृति को एक नए ऊंचे स्तर पर पहुंचाने के उद्देश्य का विस्तार के साथ उल्लेख किया गया है। सोशलिज्म से धीरे-धीरे कम्युनिज्म की मंजिल में प्रवेश करने का अर्थ यह होगा कि उत्पादन, साइंस और टेकनालोजी की बड़ी तीव्र गति से बहुत बड़ी उन्नति होगी, मेहनतकश जनता का सांस्कृतिक और टेक्निकल स्तर बड़ी तेजी से बहुत ऊँचा होगा और इसके फलस्वरूप श्रम की उत्पादन शक्ति में और भौतिक और सांस्कृतिक सम्पदा का बाहुल्य प्राप्त करने में बड़ी तेजी से वृद्धि होगी। इस परिवर्तन के दौरान में शहर और गाँव का अन्तर, शरीरिक और मानसिक श्रम का अन्तर पूरी तरह मिट जाएगा। कम्युनिस्ट समाज में तमाम मेहनतकशों का काम शारीरिक और मानसिक श्रम का संतुलित सम्मिश्रण होगा; श्रम सबके लिए जीवन का एक आवश्यक अंग बन जाएगा ताकि एक स्वस्थ व्यवस्था को कायम रखा जा सके; अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करके अच्छे से अच्छा काम करना सब की आदत बन जाएगी; **लोग केवल अपना कर्त्तव्य समझकर नहीं बल्कि आन्तरिक प्रेरणा के आधीन ऐसा करने लगेंगे**। भौतिक और सांस्कृतिक सम्पदा के बाहुल्य के कारण कम्युनिज्म के मूल सिद्धान्त को अमल में लागू करना संभव हो जाएगा—हरेक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार काम करे और हरेक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार पारिश्रमिक मिले।

उच्च कोटि की मशीनें, अणु-शक्ति का प्रयोग, मेहनतकशों का उच्च सांस्कृतिक स्तर और उनकी बढ़ी हुई उत्पादन-शक्ति—ये सब बातें मिलकर दिन

में काम करने के घंटों की संख्या कम कर देगी और हरेक व्यक्ति को विज्ञान और कला के लिए, मनुष्य के सर्वमुखी विकास के लिए और भी ज्यादा खाली समय मिलेगा।

विज्ञान और कला इतनी तेज़ी से बढ़ेंगी जितनी पहले कभी नहीं बढ़ी थीं।

जब व्यक्ति को अपना पेट भरने की चिन्ता नहीं रह जाएगी, जब उसके रोजमर्रा के जीवन से और उसके विचारों पर से पूँजीवाद की छाप बिल्कुल मिट जाएगी तब वह अपने अन्दर श्रेष्ठतम, उच्चतम और पवित्रतम नैतिक गुणों को जागृत कर सकेगा, अपनी कुशलतम क्षमताओं, योग्यताओं और निपुणताओं को और भी बड़े पैमाने पर जागृत कर सकेगा और एक ऐसा व्यक्ति बन जाएगा जो हर दिशा में बहुत सुचारु रूप से विकसित होगा।

जब सारी दुनिया में कम्युनिज़्म विजयी हो जाएगी, जब पुरानी पूँजीवादी दुनिया गायब हो जाएगी और उसके साथ ही विनाशकारी युद्धों का, हिंसा का और तबाही आदि का तमाम खतरा दूर हो जाएगा, तब हर जगह सच्ची आज़ादी का राज्य होगा, जिसके स्वप्न दुनिया की जनता हज़ारों वर्षों से देखती आई है।

हम जानते हैं कि हमें बहुत कठिन और लम्बा संघर्ष करना है, हमें कम्युनिज़्म का निर्माण करने का विशाल और कठिन कार्य पूरा करना है; समाजवाद और पूंजीवाद के भीषण और निरन्तर संघर्ष के दौरान में जनता को कम्युनिस्ट सिद्धान्तों के अनुसार शिक्षित करना है: लेकिन हम यह भी जानते हैं कि हमारे उद्देश्य की विजय अब दूर नहीं है। केवल हमारे बच्चे और युवक ही नहीं बल्कि आज के बहुत से प्रौढ़ लोग भी अपनी आँखों से कम्युनिज़्म की पूर्ण विजय देखेंगे और वे पूरी तरह से हर दिशा में विकसित स्वतंत्रता के राज्य में पदार्पण करेंगे।

लेनिन और स्तालिन की महान पार्टी पूरे विश्वास के साथ कम्युनिज़्म के पथ पर सोवियत जनता का नेतृत्व कर रही है; वह सारी दुनिया की जनता को खूनी युद्धों से मुक्ति पाने और विश्वव्यापी शान्ति स्थापित करने का रास्ता

दिखा रही है, पूंजीवादी दासता को उखाड़ फेंकने का और सारी मानवता की निर्विरोध प्रगति का रास्ता दिखा रही है ।

"महान स्तालिन ने कम्युनिज़्म के गौरवपूर्ण पथ पर हमारी जनता का नेतृत्व किया है और आज भी कर रहे हैं। दुनिया के विभिन्न देशों की जनता के दिल में स्तालिन के नाम के प्रति अपार सम्मान और प्यार है; स्तालिन का नाम विजयी सोवियत यूनियन की महानता का प्रतीक है और मानव-जाति के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए संघर्ष करने की ललकार है...।

"सोवियत जनता मानव-जाति के प्रगतिशील हिस्से की अगुवाई कर रही है और उसके हृदय में अक्तूबर क्रान्ति के उच्च उद्देश्यों के प्रति पूरा विश्वास है ।" (मोलोतोव, **अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति की ३०वीं वर्षगाँठ**, मास्को १९४७, रूसी संस्करण, पृष्ठ ३१-३२)

★